धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

अक्टूबर–2016 | संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. | हिन्दी मासिक

लोकसंत की उपाधि से अलंकृत

पू. गुरूदेव श्रीमद् जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा. विभूषित : भय्याजी जोशी, सहस्त्रबुद्धेजी, सांसद, कई विधायक, महापौर, वाघजीभाई वोरा शामिल : चेतन्यजी काश्यप द्वारा अगवानी

समारोह को किया सम्बोधित

श्री भय्याजी जोशी

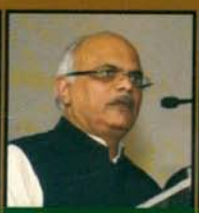
श्री सहस्त्रबुद्धेजी

श्री चेतन्यजी काश्यप

श्री वाघजीभाई वोरा

श्री सुरेन्द्रजी लोढा

लोकसंत की उपाधि से अलंकृत

रतलाम। हम सभी यहां क्षमा का विचार करके आचार्यश्री से आशीर्वाद लेने हेतु उपस्थित हैं। हम भारतवासियों की दुनिया के सभी देशों में पहचान एक धार्मिक देश के रहवासी के रूप में होती है। हमारे देश में सुख साधनों से वंचित होने वाला वर्ग तो हो सकता है, लेकिन सभी वर्गों में धार्मिकता अवश्य होती है, चाहे वह अमीर हो या गरीब। हमारे यहाँ आचरण की बातें धार्मिक ग्रन्थों के द्वारा दी गई है। एक भारतीय नागरिक जैसा व्यक्ति दुनिया में कहीं नहीं मिलने वाला है। इसका यदि कोई आधार है तो वह है हमारी धार्मिकता। क्षमा वही कर सकता है जो अपनी मर्यादा को समझता है।

यह बात जयन्तसेन धाम में राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.एवं नगर में चातुर्मासार्थ विराजित मुनिमंडल, साध्वीवृंद के सान्निध्य में आयोजित सामूहिक क्षमापना पर्व के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री भैयाजी जोशी ने कही। इस दौरान उन्होंने विधायक व राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री चेतन्य काश्यप को चातुर्मास व क्षमापर्व के सफल आयोजन हेतु धन्यवाद दिया। आरएसएस के सरकार्यवाह श्री भैयाजी जोशी ने कहा कि आज क्षमा का पर्व है। मनुष्य गलती करता है, लेकिन वह स्वीकार नहीं करता है। जानना और मानना दोनों में बहुत अंतर है। क्षमा मांगना और गलती स्वीकार करना दोनों अलग बात है। भगवान महावीर ने क्षमा की बात कही, वैसे ही अहिंसा की भी बात कही है। अहिंसा की रक्षा के लिए व समाज में फैली नकारात्मक शक्तियों से बचाव के लिए कभी-कभी हिंसा भी करनी पड़ती है।

शेष पृष्ठ 47 पर

3007

छपते-छपते

Received 16/10/16

राष्ट्रीय संगोष्ठी के रूप में शुरू हुई जैन धर्म संसद

रतलाम की धरा को धन्य कर गया अभिधान राजेन्द्र कोष – लोकसन्त

रतलाम। जयन्तसेन धाम में 30 सितम्बर को लोकसन्त, जैनाचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में वर्ल्ड जैन कान्फेडेरेशन एवं चेतन्य काश्यप फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के रुप में जैन धर्म संसद प्रारम्भ हुई। उद्घाटन सत्र में लोकसन्तश्री ने कहा कि अभिधान राजेन्द्र कोष गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरिजी म.सा. के जीवन की बड़ी उपलब्धि है। रतलाम की धरा धन्य है कि कोष का प्रकाशन यहां हुआ। गुरुदेव ने जैन-अजैन सौ से अधिक ग्रंथों के सन्दर्भ से कोष के दस हजार से अधिक पृष्ठों का संयोजन कर विद्वद्जगत को विश्व की अनमोल धरोहर प्रदान की है। संगोष्ठी आयोजक चेतन्य काश्यप ने उद्घाटन सत्र में जैन धर्म संसद में परमाणु निशस्त्रीकरण पर घोषणा पत्र जारी करने का आव्हान किया। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रख्यात अर्थशास्त्री, चिन्तक व ग्लोबल विपश्यना फाउण्डेशन के ट्रस्टी वल्लभ भंसाली (मुम्बई) व विशेष अतिथि देवी अहिल्या वि.वि. इंदौर, के कुलपति डॉ. नरेन्द्र कुमार धाकड़ रहे। जैन दर्शन के विद्वान डॉ. सागरमल जैन, वर्ल्ड जैन कान्फेडेरेशन के महासचिव जितेन्द्र कोठारी, राष्ट्रीय सगोष्ठी संयोजक जितेन्द्र बी. शाह, निर्देशक एल.डी. इंस्टीट्यूट आफ इंडोलाजी अहमदाबाद एवं संगोष्ठी आयोजक, उपाध्यक्ष राज्य योजना आयोग म.प्र., विधायक चेतन्य काश्यप मंचासीन थे। जैन धर्म संसद मुख्य रूप से तीन विषयों अभिधान राजेन्द्र कोष, वर्तमान काल में जैन धर्म की प्रासंगिकता तथा जैन धर्म और विज्ञान पर केंद्रित की गई है। इसमें देशभर से आए विद्वान अपने शोध पत्रों और विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। जैनाचार्यश्री की निश्रा में अभिधान राजेन्द्र कोष की वासक्षेप से ज्ञान पूजा कर राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ किया गया। संचालन संगोष्ठी संयोजक जितेन्द्र बी. शाह ने किया। आभार मुकेश जैन ने माना।

32533

अहिंसा ग्रामी

गरीबी से मुक्ति - विकास की युक्ति

गरीबी उन्मुलन हेतु समन्वित आवासीय परिसर

१०० गरीब परिवारों को निःशुल्क आवास, स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका व संस्कार का रतलाम (म.प्र.) में गरीबी-मुक्ति का आदर्श प्रकल्प

आवास

१०० आवास : २ कमरे
(१०' x १०' एवं १०' x ६')
रसोई, स्नानागार व शौचालय ।

स्वास्थ्य

प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र
नियमित चिकित्सा शिविर एवं
शासकीय योजना का क्रियान्वन ।

शिक्षा

बच्चों की शिक्षा हेतु
निकटतम विद्यालय से
सम्बद्धता ।

आजीविका

१५०० फीट का सभागार : महिलाओं द्वारा पापड़, सिलाई, क्रोशिया, एम्ब्रायडी, बाइंडिंग आदि का निर्माण । व्यक्तिगत योग्यताओं में गुणवत्ता एवं कार्यक्षमता विकास का प्रशिक्षण ।

संस्कार

योग-प्राणायाम, ध्यान और सद्संकल्पों द्वारा शारीरिक, मानसिक व शाकाहारी अहिंसक जीवनशैली का विकास। सभी धर्मों के प्रमुख त्यौहारों पर सामुहिक प्रार्थना सभाएं।

जीवन - विज्ञान

नैतिक एवं मूल्यपरक योग शिक्षा का कार्यक्रम - मंदसौर, नीमच व रतलाम जिलों में १२००० शिक्षक प्रशिक्षित ।

काश्यप विद्यापीठ

चेतन्य ग्राम वदनावर में CBSE अंग्रेजी हाईस्कूल - कम्प्यूटर, संगीत एवं नृत्य, योग, खेल तथा जीवन विज्ञान जैसे पाठ्यक्रम ।

विशिष्ट सहयोगी

1. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन ट्रस्ट, चैन्नई (तमिलनाडु)
2. श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट मंडल, विजयवाड़ा (आंध्रप्रदेश)
3. श्री सांचा सुमतिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मदुराई (तमिलनाडु)
4. श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, त्रिचनापल्ली (तमिलनाडु)
5. श्री सुविधिनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, मैसूर (कर्नाटक)
6. श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्र जैन श्वे. ट्रस्ट, गुंण्टुर (आंध्रप्रदेश)
7. श्री राजेन्द्र सूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट, सायला (राजस्थान)
8. श्री सायला जैन श्रीसंघ, सायला (राजस्थान)
9. श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ नारोली (ता. थराद, गुजरात)
10. श्री शंखेश्वर पार्श्व राजेन्द्र जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, दावणगेरे (कर्नाटक)

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मन्दिर तीर्थ ट्रस्ट

हमारे गौरव

ट्रस्टीगण महाप्रभावक गुम्मीलेरू तीर्थ

राजस्थान

राष्ट्रसंत श्री के पूज्य माता-पिता
स्वरूपचंदजी धरू एवं पार्वतीदेवी

जैन रत्न श्री गगलदासभाई
हालचंदभाई संघवी, अहमदाबाद

शा. तगराजजी जेठमलजी हिराणी
रेवतड़ा, बैंगलोर

शा. किशोरचंदजी खिमावत
खिमेल, मुम्बई

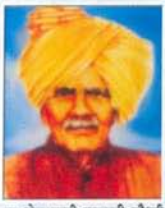

शा. जेठमलजी लादाजी चौधरी
गढसिवाणा, बैंगलोर

शा. मिश्रीमलजी उकाजी सालेचा
धाणसा, बैंगलोर

संघवी सांकलचंदजी इन्द्रजी वेदमुथा
बैंगलोर

श्री शांतिलालजी रामाणी
गुडाबालोतरा, नेल्लोर

शा. माणकचंदजी छोगाजी बालर
बैंगलोर

शा. हजारीमलजी गजाजी बंदामुथा

मांगीलालजी शेषमलजी रामाणी
गुडाबालोतरा, नेल्लोर

शंकरलालजी आईदानजी गांधी
नेल्लोर

चंपालालजी बालचंदजी चरली

श्री घेवरचंदजी एल. जोगानी, मुम्बई
भीनमाल

श्री शेषमलजी गुलाबचंदजी जैन
बागरा

श्री हीराचंदजी कानाजी गुंटुर (सियाणाबाला)

श्री लालचंदजी सोनाजी संघवी धाणसा (राज.) विजयवाड़ा

स्व. सोलंकी चन्दनमलजी हीराजी आहोर विजयवाड़ा

श्री शांतिलालजी सोलंकी जालोर विजयवाड़ा

श्रीमती मोलंबीबाई पति स्व.श्रीचम्पालालजी तलतगढ़, मुम्बई

श्री बाबूलालजी गुण्दूर

कबदी जीतमलजी कुंदनमलजी सायला

भंडारी वस्तीमलजी खीमाजी विजयवाड़ा, आहोर

शा. रिखबचंदजी सरूपाजी सोफाडीया, रेवतड़ा

भंडारी पीरचंदजी केवलचंदजी बागरा

स्व. शा ओटमलजी गोराजी वेदमुथा, रेवतड़ा

शा. पारसमलजी हस्तीमलजी भंडारी, सायला

स्व. शा. गुमानमलजी धुकाजी मोदी, धानसा

मुथा उदयचंदजी जवाजी धाणसा

शा पुखराजजी फूलचंदजी दुरगानी, मोंदरा, विजयवाड़ा

शा. धेवरचंदजी हंजाजी संघवी, धाणसा

शा. सरेमलजी गेनाजी सियाणा, विजयवाड़ा

शा. छगनराजजी मांडोत गुन्टुर

शा मोहनलालजी गोवानी चोराय्

शा. नरसाजी आसाजी बाफणा कोरा (राज.)

शा प्रतापचंदजी किसनाजी कटारिया संघवी अमरसर, सरत

शा. कालूचंदजी हंजाजी सकलेचा

शा. दरगचंदजी हरकाजी सकलेचा

स्व. श्री मिश्रीमलजी भंडारी

शा. उत्तमचंदजी दरगाजी सकलेचा

हमारे गौरव

श्री. सेन्द्रकुमारजी रायकचंदजी पोरवाल
बागरा

श्री चंदनमलजी जेठमलजी
बागरा

श्री सुखाराजजी केसाजी
मेंगलवा

श्री रतनचंदजी कुन्दनमलजी
मेंगलवा

श्री नथमलजी खुमाजी
बागरा

श्री जेठमलजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री सांवलचंदजी कुंदनमलजी
मेंगलवा

श्री दूधमलजी मानकचंदजी
मेंगलवा

श्री बाबुलालजी सरेमलजी
मोदरा

श्री छगनराजजी भानाजी गांधी
सियाना

शा.सुमेरमलजी वरदीचंदजी वाणीगोता
आहोर (राज.)

श्री संघवी मानमलजी बीरमाजी
दादाल

श्री कांतिलालजी मूलचंदजी नानावत
आहोर

शा. उकचंदजी हिमताजी हिराणी
रेवतड़ा

शा. ओपचंदजी नवाजी ओस्तवाल
सायला

श्री एम. फूलचंदजी शाह
दावणगिरी

शा. मोडमलजी जोईताजी बाफना
धलवाड नेल्लोर

मुथा थानमलजी कानाजी
आहोर विजयवाड़ा

स्व. सुखराजजी पिताजी कटारिया
संघवी धाणवसा विजयवाड़ा

संघवी भेरमलजी जेठाजी
मारवाड में अमरसर (सरत) विजयवाड़ा

सेठ भगराजजी कुनणमलजी
सांचोर

शा. फुलचन्दजी सुखराजजी गांधी
सियाणा यादगीरी

श्री राणमलजी हिमताजी
दादाल

श्री पुखराजजी नेकाजी कटारिया
संघवी, धानसा

सा सांवलचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

हमारे गौरव

स्व.सा तिलोकचन्दजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा नरसीगमलजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा पुखराजी प्रतापजी
वाणीगोता, अमरसर (सरत)

स्व.सा परकचंदजी प्रतापजी
वाणीगोता अमरसर (सरत)

संघवी शा. मिश्रीमलजी विनाजी
पटियाल धाणसा/बैंगलोर

श्री फुलचन्दजी सांकलचन्दजी
कोशेलाव

डूंगरचंदजी सोलंकी
सायला (राज.)

मीठालाल मनोहरलालजी झोरा
दाधाल-कोयम्बतूर

श्री उम्मेदमलजी हरकचंदजी
बाफना, पाँथेड़ी

श्री भंवरलालजी कुन्दनमलजी
संघवी, मोदरा (राज.)

पातीबाई वस्तीमलजी
कबदी, सायला

श्री ओटमलजी वर्धन
सायला

श्री जुगराजजी नाथाजी कबदी
सायला

श्री हेमराजजी कबदी
सायला

श्री हस्तीमलजी गांधीमूथा
सायला

श्री घेवरचंदजी गांधीमूथा
सायला

श्री चम्पालालजी गांधीमूथा
सायला

शा. धर्मचंदजी मिश्रीमलजी संघवी
आलासन

श्री देशमलजी सरेमलजी
मोदरा/बैंगलोर

शा. श्री स्व. हीराचन्द
फुलाजी गांव चुरा

श्रीमती पवनीदेवी दूधमलजी
कबदी, सायला

श्री दूधमलजी पूनमचंदजी
कबदी, सायला

श्री हस्तीमलजी केवलचन्दजी
फोलामुथा, सायला

श्री रमेशभाई हरण
भीनमाल, राजस्थान

श्री उगमराजजी तौलचंदजी
कटारिया संघवी, धानसा (हैदराबाद)

हमारे गौरव

शा. खुशालचंदजी गेबाजी
हामराणी मेंगलवा (हैदराबाद)

शा. जावंतराजजी
पाथेडी

शा. बगराजजी नरसाजी
झोटा, दाधाल

भंवरलालजी कानुगा
जालोर

श्री तिलोचन्दजी झोटा
(हैदराबाद)

सत्रु अग्रवाल
जालोर

पुखराजजी समताजी
गांधीमुथा, सायला

धर्मचंदजी चंदाजी
नानेसा, आकोली

शा. धींगड़मलजी भंवरलालजी
पटवारी, मांडवला/तिरुचि

गुजरात

वोरा अमृतलालजी डूंगरजी
अहमदाबाद

शा. तिलोकचंदजी चुन्नीलालजी झाजेड़
नैनावा

वोरा चिमनलालजी नथुचंदभाई

मोरखिया मणिलाल प्रेमचंदभाई
मुम्बई

श्री बाबूलालजी नाथाजी भंसाली
दाहोद

श्री चिमनलालजी पीताम्बरदासजी
देसाई

वेदलीया हालचंद भाई
माणजी भाई, मोरडुवाला, डीसा

संघवी मुलचन्द भाई
त्रिभुवनदास, थराद

महाजनी ताराबेन
मोगीलाल सरुपचन्द, थराद

देसाई छोटालाल अमूलख भाई

संघवी धुडालाल अमृतलाल
(वकील)

शाह श्री राजमल भाई डूंगरजी भाई
थराद

संघवी श्री हीरालालजी कागजीभाई
थराद (लाटीवाला)

देसाई श्री हालचंदजी उजमचंदजी
थराद

श्री नरपतलाल वीरचंदजी संघवी
थराद

वोहरा श्री प्रेमचंदभाई जीतमल भाई थराद

संघवी चिमनलाल खेमचंद थराद

संघवी पूनमचंद खेमचंद थराद

संघवी वीरचंद हठीचंद थराद

श्री पुखराजजी ओरा थराद

वोहेरा श्री माणकलाल भूदरमल दूधवा (गुज.)

मोरखीया अमृतलालजी चुन्नीलाल लाखणी

दलपतभाई खेमचंद महाजनी

श्री मफतलालजी हंसराज वारिया, (वढ़गामड़ा) डीसा

अदाणी अमृतलाल मोहनलाल थराद

श्री चन्दूमल मफतलालजी वोहेरा, दुधवा (गुजरात)

मध्यप्रदेश

श्री शांतिलालजी भंडारी झाबुआ

श्री मदनलालजी सुराना रतलाम

श्री इन्दरमलजी दसेड़ा जावरा

स्व.मणिलालजी पुराणिक कुक्षी

स्व. समरथमलजी तहेरा कर्मडवाला, उज्जैन

श्री सुजानमलजी जैन राणापुर (म.प्र.)

संघ शिरोमणी राजमलजी तलेसरा, पारा

भण्डारी चम्पालालजी रामाजी, पारा

श्री गट्टूलालजी रतिचंदजी सालेचा औरा, पारा

श्री कांतिलालजी केसरीमलजी भंडारी, पारा

स्व. भव्य हिमांशु लुणावत दाहोद (गुजरात)

स्व. श्री सुभाषजी भण्डारी मनावर (मेघनगर वाले)

श्री समरथमलजी पगारिया पारा जि. झाबुआ (म.प्र.)

श्री चांदमलजी वरदीचंदजी तांतेड़, लेडगांव

स्व.श्री कन्हैयालालजी सेठिया, कुशलगढ़

दलाल स्व. श्रीबाबूलालजी मेहता, कुशलगढ़

श्री मानसिंहजी राजगढ़

कालूरामजी औरा टोपीवाले, रतलाम

कर्नाटक

श्री भंवरलालजी तिलोकचन्दजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री मनोहरमलजी फूजाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री हिराचंदजी पुखराजजी
वाणीगोता, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री शेषमलजी ताराजी
कांकरिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री इंदरमलजी नेनमलजी
संघवी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री रूपचंदजी फूलाजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.भंडारी भुरमलजी भानाजी
मेंगलवा, (बीजापुर)

स्व. श्री दिनेशकुमार भुरमलजी
भंडारी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री प्रतापचंदजी समनाजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री सुखराज प्रतापचंदजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुंदनमलजी फुलाजी
संकलेचा, मेंगलवा (कर्नाटक)

श्री उम्मेदमलजी प्रतापजी
कंकुचौपड़ा, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री नागराजजी वालचंदजी
पाटनी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री मोहनलालजी मुलचंदजी
चौवाटिया, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री कुन्दनमलजी
फुलाजी सकलेचा (बीजापुर)

श्री धनराजजी नेनमलजी
संघवी, आलासन (बीजापुर)

श्री मुलचंदजी खुमाजी
बाफना, बीजापुर (कर्नाटक)

श्री देवीचंदजी हजारीमलजी
काबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व.श्री रिखबचंदजी भभुतमलजी
पोरवाल, बीजापुर (कर्नाटक)

स्व. श्री डुंगरचंदजी हजारीमलजी
कबदी, बीजापुर (कर्नाटक)

शाह सोहनलाल
मिश्राचंदजी बीजापुर

सुमेरमलजी अनाजी
वाणीगोथा, बीजापुर/भीनमाल

शा. श्री वस्तीमलजी सोनाजी
बाफना, बीजापुर (सायला)

॥ विश्वपूज्य प्रभु गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रतीक

शाश्वत धर्म

अक्टूबर–2016 संस्थापक-श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. हिन्दी मासिक

संस्थापक :
स्व. गुरुदेव श्रीमद् विजय यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दिशा निर्देशक :
पू. लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद्
विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा.

सम्पादक :
सुरेन्द्र लोढ़ा
E-mail : shaswatdharmajain@yahoo.in

कार्यालय :
शाश्वत धर्म
ठि. गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग
धानमंडी, मंदसौर (म.प्र.)458002

शाश्वत वर्ष 64 अंक 10
वीर सं.2541 राजेन्द्र सं.109 विक्रम सं. 2072

इस अंक का मूल्य	-	15रु.
एक वर्ष का शुल्क	-	150रु.
पांच वर्ष का शुल्क	-	600रु.
दस वर्ष का शुल्क	-	1100रु.

शाश्वत धर्म संचालन समिति

श्री शांतिलाल रामानी	(संयोजक)
श्री रमेशभाई धरू	(परिषद अध्यक्ष)
श्री सुरेन्द्र लोढ़ा	(सम्पादक)
श्री अशोक श्रीश्रीमाल	(महामंत्री)
श्री. ओ.सी जैन	(न्यासी)
श्री विनोद संघवी	(न्यासी)

भारत सरकार का पंजीयन क्र. 13067/57
स्वामी अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के लिए सुरेन्द्र लोढ़ा, गुरु श्रीमद् राजेन्द्रसूरि शताब्दी मार्ग, धानमण्डी, मंदसौर द्वारा मुद्रित तथा प्रकाशित।
मुद्रक -छाजेड़ प्रिन्टरी प्रा.लि., रतलाम

संचालक– अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्

प्रेरक प्रसंग

कर्म किसी को नहीं छोड़ते

छद्मस्थ काल में योगी महावीर छम्माणी ग्राम के जंगल के किनारे कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यानस्थ थे। तभी एक ग्वाला अपने साथ बैलजोड़ी लेकर आया। उसने उन्हें महावीर को संभलाते हुए कहा कि– 'मैं आ रहा हूँ। इतने इनका ध्यान रखना।'

महावीर तो ध्यान मुद्रा में थे, उन्हें कहाँ मतलब था ग्वाले से, उसके बैलों से या बैलों के आने जाने से। बैल निकल गये। ग्वाले ने आकर तलाश की। महावीर को कहाँ तात्पर्य पैदा हुआ? वे मौन रहे। ग्वाला क्रोध में उबलने लगा। महावीर के मौन पर उसने कहा– तेरे कान काणे हैं, न हों तो मैं अब काने बना देता हूँ। महावीर मौन रहे। ग्वाला गुस्से में लकड़ी के दो शूल लाया। उसने महावीर के कानों में उन्हें ठोंक दिया तथा कोई उन्हें निकाल न ले इसलिये कानों को बाहर से एक सरीखा कर दिया।

जब महावीर अपापा नगर में विचरण कर रहे थे तब वैद्य खरक की निगाह ने कान के शूलों को पकड़ लिया। खरक औषधी लेकर उद्यान में पहुंचा। खरक ने संडासी से दोनों कानों के शूल खींच लिये। उस समय असह्य वेदना से महावीर के मुख से चित्कार निकल पड़ी।

शास्त्रकारों का कथन है– महावीर की आत्मा ने त्रिपृष्ठ के भव में शय्यापालक के कान में जो गर्म शीशे उडेलवाये थे। उन्हीं अशुभ कर्मों का उदय ध्यानस्थ महावीर के इस भव में हुआ। कर्म किसी को नहीं छोड़ते।

– सुरेन्द्र लोढ़ा

अनुक्रमणिका

1.	रतलाम में अभूतपूर्व चातुर्मास	12
2.	रतलाम चातुर्मास की झलकियाँ	15
3.	दुःख का मूलः मोह (3) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	50
4.	गणधरवाद (लेखांक-38) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	53
5.	स्वर्णप्रभा (लेखांक-38) (श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.)	56
6.	प्रश्नोत्तरी	59
7.	अध्यक्षीय पाती (वाघजीभाई वोरा)	60
8.	अध्यक्षीय संदेश (रमेशभाई धरू)	61
9.	सम्पादकीय (सुरेन्द्र लोढ़ा)	62
10.	तीर्थंकर श्री अजितनाथजी (मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)	64
11.	भरत क्षेत्र तथा महाविदेह क्षेत्र (स्व. आ. श्री विजययतीन्द्रसूरीजी म.सा.)	66
12.	शांति और क्रांति के अग्रदूत दादा गुरुदेव (धीमी गतिवाला)	71
13.	जैन इतिहास के अधखुले पृष्ठ (मुनिराज श्री चारित्ररत्न विजयजी म.सा.)	75
14.	कैसे मनाएं दीपावली (साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	77
15.	रात्रि भोजन महापाप (साध्वी श्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	79
16.	आशीर्वाद (साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)	82
17.	बाल शाश्वत (मुनिराजश्री जिनागमरत्नविजयजी म.सा.)	86
18.	सामान्य प्रश्नोत्तरी (संकलन-मुनिराज श्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)	90
19.	वर्ग पहेली-51	92
20.	दीपोत्सव के प्रसंग पर (विजयसिंह लोढा, निम्बाहेड़ा)	94
21.	गुजराती संभाग	97
22.	कुमकुम सने पगलिये	113
23.	श्रीसंघ सौरभ	119
24.	परिषद प्रांगण से	123
25.	जैन विश्व	134
26.	शाश्वत धर्म के संरक्षक	137

रतलाम में अभूतपूर्व चातुर्मास

सभी नये कीर्तिमान 'जयन्तसेन लहर'

से तीन लाख की आबादी के शहर में उत्सवी माहौल चैतन्य काश्यपजी का कमाल

रतलाम। सागोद रोड़ स्थित जयन्तसेन धाम में त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के आचार्य की निश्रा में 93 वर्ष बाद सोमवार 18 जुलाई को चातुर्मास पर्व प्रारम्भ हुआ। राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने चातुर्मास पर्व को जीवन में परिवर्तन का पर्व बताया और पर्व के दौरान अधिक से अधिक धर्म-आराधनाएं करने का संदेश दिया।

जयन्तेसन धाम के सभा मण्डप में आयोजित धर्मसभा को आशीर्वचन प्रदान करते हुए राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि संसार में प्रबल पुण्योदय से मनुष्य का जन्म

मिला है। चातुर्मास पर्व के दौरान अधिक से अधिक धर्म-आराधना कर अपने जीवन को सार्थक करें। इस पर्व का उद्देश्य ही धर्म-ध्यान है। जीवन में अहंकार यदि समीप आया तो जीवन बर्बाद हो जाएगा इसलिए स्वयं को महान समझने की भूल न करें। सामायिक करने पर जोर देते हुए कहा कि सामायिक, चातुर्मास की शोभा और श्रृंगार है, इसे प्रतिदिन करना चाहिए। सामायिक करने का मतलब आत्मभाव में रहना है।

आचार्यश्री ने कहा कि 48 मिनिट की सामायिक अवधि के 16 मिनिटों में सभी तीर्थों की भाव यात्रा, 16 मिनिट में स्वाध्याय और शेष 16 मिनिट में भगवान का जाप करना चाहिए। चातुर्मास के दौरान सभी आराधना का लक्ष्य रखें। वे आराधना कराने के लिए रतलाम आए हैं। धर्मसभा के प्रारम्भ में वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यान्द विजयजी म.सा. ने मंगलाचरण किया। उन्होंने कहा कि रतलाम धरा के पुण्योदय से राष्ट्रसंत का चातुर्मास यहाँ हो रहा है। चातुर्मास आयोजक एवं विधायक चेतन्य काश्यप ने इसका बीड़ा उठाया है, शेष सभी को सिर्फ लाभ लेना है। लाभ लेने से आशय केवल खाना-पीना नहीं है, अपितु धर्म आराधना कर जीवन को धन्य करना है। उन्होंने कहा कि बरसात के दौरान विपरीत परिस्थितियों में भी किसान जागृत रहकर खेती करता है, उसी प्रकार सब जागृत रहकर चातुर्मास की आराधना करें।

मौका मिले तो चौका मार देना चाहिए

– निपुणरत्न विजयजी

मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने प्रेरक उद्‌बोधन में कहा कि जीवन में बहुत बार मौके मिलते हैं पर फायदा नहीं होता। इसीलिए कहा गया कि मौका मिले तो चौका मार देना चाहिए। आचार्यश्री की निश्रा में चातुर्मास का मौका बहुत पुण्य से मिला है। इसे व्यर्थ नहीं जाने दें। चातुर्मास के दौरान स्वयं के जीवन में परिवर्तन लाने का उद्देश्य रखें। दूसरे तप आराधन करेंगे और उसकी अनुमोदना भी होगी। पर यह न भूलें कि आपको अपना जीवन देखना है। दुनिया कैसी है? यह सब जान लेंगे, लेकिन हम कैसे हैं? यह चातुर्मास में हमें जान लेना है। उन्होंने कहा कि संसार में तीन तरह के जीव होते हैं- पहले वे जो धर्म छोड़कर पाप करते हैं, दूसरे वे जो धर्म भी करते हैं और पाप भी करते हैं और तीसरे वे जो पाप छोड़कर धर्म करते हैं। पाप छोड़कर धर्म करने वालों को उत्तम जीव कहा गया है। चातुर्मास में यह सोच लें कि आपको कैसा जीव बनना है?

दूसरा दिन : चातुर्मास आराधना का पर्व है। साधना, उपासना और भक्ति का पर्व है। जैन परम्परा में चातुर्मास इसलिए अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन को भौतिक जगत की बजाए आध्यात्म की ओर मोड़ता है। चातुर्मास का महत्व हर धर्म में है। प्रत्येक समाज, धर्म और सम्प्रदाय में चातुर्मास के दौरान धर्म-आराधन की ज्योत प्रज्जवलित होती है। चातुर्मास के दिन जीवन में आराधक बनने की प्रेरणा देते हैं, इन्हें व्यर्थ न जाने दें।

यह आशीर्वचन राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने जयन्तसेन धाम में आयोजित धर्मसभा में कहे। राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि आध्यात्म संसार की आसक्ति से विरक्ति की ओर ले जाता है। विरक्ति व्यक्ति को सुख और आसक्ति दुःख का अनुभव कराती है। जनवाणी बहुत सुनने को मिलती है, लेकिन जिनवाणी प्रबल पुण्योदय से ही मिलती है। वचन सब बोलते हैं, परन्तु परमात्मा के वचन को प्रवचन कहा गया है। परमात्मा का शासन जन-जन का कल्याण करने वाला है, किसी व्यक्ति का नहीं। हम धन्य हैं कि हमें ऐसा शासन मिला है।

इससे पूर्व मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने चातुर्मास को आत्मा के लिए कुछ करने का अवसर बताया। उन्होंने कहा कि मनुष्य सब तरह के दाग साफ करने के रास्ते खोज सकता है, लेकिन आत्मा पर लगे कर्मों के दाग को साफ करने का कार्य उसे ही करना होता है। तप-आराधना इसका बेहतर मार्ग है। सोने की चिन्ता करने वाले को सुनार कहते हैं, लोहे की चिन्ता करने वाले को लुहार और चमड़े की चिन्ता करने वाले को क्या कहते हैं? सब जानते हैं। इसलिए शरीर की चिन्ता नहीं करनी चाहिए और तप-आराधना कर आत्म कल्याण के मार्ग पर चलना चाहिए। उन्होंने धर्म के कार्य में बुद्धि लेकर नहीं आने की सीख देते हुए कहा कि ज्ञानियों के अनुसार विज्ञान का जहाँ अंत होता है, धर्म वहीं से शुरू होता है। बुद्धि से मनुष्य धर्म नहीं कर सकता, उसके लिए श्रद्धा जरूरी है।

इस मौके पर चातुर्मास आयोजक व विधायक चैतन्य काश्यप परिवार की ओर से मातुश्री तेजकुंवरबाई काश्यप ने तपस्वी का बहुमान किया। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ इन्दरमल दसेड़ा परिवार (जावरा) ने लिया। संचालन नवयुवक परिषद् के सचिव राजकमल जैन ने किया। सूरत महानगर परिषद् के स्टेडिंग कमेटी मेम्बर नीरव शाह, समस्त महाजन संघ के ट्रस्टी देवेन्द्र जैन ने राष्ट्रसंतश्री से आशीर्वाद लिया। इस मौके पर चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप ने उनका बहुमान किया। जैन युवक महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सौरभ भण्डारी, जिग्नेश दोषी, संगीतकार नरेन्द्र वाणीगोता उपस्थित थे। लेखक विष्णु बैरागी ने भी आचार्यश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

रतलाम चातुर्मास की झलकियाँ

रतलाम-चातुर्मास-की-झलकियाँ

जयन्तसेन धाम में श्रद्धापूर्वक मनी गुरुपूर्णिमा

गुरु जगत के दीपक हैं, मार्गदर्शक हैं। अंधेरे में जैसे दीपक की रोशनी रास्ता दिखाती है, वैसे ही गुरु संसार को रास्ता दिखलाते हैं। गुरु, कुम्हार की तरह होते हैं जो भले ही ऊपर से पीटते हों, लेकिन अन्दर से मजबूत करते हैं। उनके मन में सदैव कल्याण का भाव ही रहता है। गुरु बनने से पहले शिष्य बनना पड़ता है। राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के इन उद्गारों के

बीच सागोद रोड़ स्थित जयन्त धाम में मंगलवार को गुरुपूर्णिमा का पर्व श्रद्धा और भक्तिभाव से मनाया गया। गुरु के दर्शन और वंदन के लिए दिनभर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा।

सभा पाण्डाल में सुबह 'जीवन में एक गुरु होना चाहिए' विषय पर विशेष प्रवचन हुए। आचार्यश्री ने कहा कि बहुत से लोग गुरु बनने की कोशिश करते हैं, मगर गुरु बनने से पहले शिष्य बनना पड़ता है। अच्छा शिष्य बनने के लिए सदैव आज्ञाकारी बनना चाहिए। गुरु के प्रति सम्मान की भावना जीवन में आगे ले जाने का काम करती है। गुरु कुछ भी कहे, पर उनके प्रति श्रद्धा और आस्था खत्म नहीं होनी चाहिए। श्रद्धा और आस्था रहे तो मान लें कि सब कुछ पा लिया है।

मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि जीवन में गुरु का अति महत्व होता है। किसी को गुरु बनाने से पहले गंभीरता से सोच लें, उन्हें बाद में बदला नहीं जा सकता। गुरु तीन प्रकार के होते हैं- लोहे की नाव की तरह, कागज की नाव और लकड़ी की नाव। लोहे की नाव जो स्वयं डूबती है और दूसरों को भी डूबो देती है। कागज की नाव डूबती नहीं बल्कि पहले ही नष्ट हो जाती है और लकड़ी की नाव डूबती भी नहीं और सबको तिरा देती है। नदी पार करने के लिए जिस तरह लकड़ी की नाव की जरूरत होती है, वैसे ही भवसागर को पार करने में गुरु की आवश्यकता होती है।

इस मौके पर राणापुर से आए सुरेश समीर, प्रतापगढ़ के राजेन्द्र करणपुरिया ने गुरु वंदना प्रस्तुत की। जैन पब्लिक स्कूल के 15 विद्यार्थियों ने शिक्षक दीपक हाडा के नेतृत्व में गीत प्रस्तुत किया।

गुरुपूर्णिमा पर जयन्तसेन धाम में राष्ट्रसंतश्री के दर्शन-वंदन के लिए गुरुभक्तों का तांता लगा रहा। प्रदेश के ऊर्जा मंत्री पारसचंद्र जैन, नगर निगम आयुक्त सोमनाथ झारिया, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सुजानमल जैन (राणापुर) ने दोपहर में आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। इससे पूर्व पार्षद प्रहलाद पटेल ने आशीर्वाद प्राप्त कर आचार्यश्री की निश्रा में चातुर्मास आयोजक एवं विधायक चेतन्य काश्यप का शॉल, श्रीफल से सम्मान किया।

माणकचौक स्थित साहू बावड़ी हनुमान मंदिर के महंत महेन्द्र मुनि ने भी राष्ट्रसंतश्री के दर्शन किए। चातुर्मास आयोजक श्री काश्यप का शेखर कांसवा, अनिल बौराणा व बजरंगजी ने अभिनंदन किया। महेन्द्र मुनिजी का आयोजक परिवार की ओर से श्री काश्यप व मनोहर पोरवाल द्वारा बहुमान किया गया।

करोड़ों नवकार जाप की आराधना सम्पन्न

नवकार महामंत्र सर्वकल्याणकारी है। यह किसी धर्म, जाति, सम्प्रदाय से बंधा हुआ नहीं है। नवकार को जो भी मानता है, वह उसका है। यह महामंत्र जिसके भी हृदय में बैठा हो, उसके सारे दुःख-दर्द को दूर कर देता है। किसी में भेदभाव करना इसकी प्रकृति नहीं है। इसीलिए इसे मंत्राधिराज के रूप में पुकारा जाता है। राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के इन उद्गारों के बीच जयन्तसेन धाम में नवकार महामंत्र के करोड़ों जाप की नौ दिवसीय आराधना प्रारंभ हुई। नौ दिन चलने वाली इस आराधना में करीब 1800 आराधक शामिल हो रहे हैं। पहले दिन नवकार महामंत्र और परमात्मा के चित्र की स्थापना के बाद राष्ट्रसंतश्री ने अभिमंत्रित कर मालाएं आराधकों को प्रदान कीं। इसके साथ ही विश्व शांति और जनकल्याण के भाव से आराधना शुरू हो गई।

नवकार आराधकों एवं श्रद्धालुओं को आशीर्वचनप्रदान करते हुए आचार्यश्री ने कहा कि नवकार महामंत्र आधि, व्याधि, उपाध तीनों को दूर करने वाला मंत्र है। नवकार को अपना बनाने वाला उत्तरोत्तर विकास करता है। मानव जीवन काफी पुण्योदय के बाद मिलता है। इसमें क्रोध, लोभ, माया, मोह से दूर करने वाले इस महामंत्र को अपनाकर जीवन सार्थक करना चाहिए। मुनिराज निपुण रत्नविजयजी म.सा. ने कहा कि नवकार के साथ सेटअप होने वाला जीवन में कभी अपसेट नहीं होता है। नवकार की विशेषता है कि यह व्यक्ति को भीतर के सुख का

अहसास कराता है। मुझे सुख चाहिए कहने वाले ज्ञानियों ने कहा है 'मुझे' अहंकार और 'चाहिए' शब्द इच्छा का प्रतीक है, इन्हें छोड़ दो, तो सुख स्वतः मिल जाएगा। नवकार के 68 अक्षरों में करोड़ों देवताओं का वास होता है। इसका जाप करने से उन सबका आशीष मिलता है। नवकार वह सौ टंच सोना है, जो अनादिकाल से चला आ रहा है।

मुनिराज चारित्ररत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि मनुष्य जन्म ही भवसागर में आत्म कल्याण और उत्तान करने वाला होता है। हम सब बहुत भाग्यशाली हैं कि हमें मनुष्य जन्म मिला है। इस जन्म में मोक्ष और नर्क दोनों के मार्ग खुले हैं। नवकार महामंत्र की आराधना कर मानव जीवन को सार्थक किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सरकारी नौकरी में भले ही सेवानिवृत्ति की आयु नियत रहती हो, लेकिन ऊपर वाले के शासन में तपाराधना में कोई आयु बंधन नहीं है। बुजुर्ग और बच्चे सभी आराधना में शामिल हो अपने जीवन का कल्याण कर सकते हैं।

दोपहर में जयन्तसेन धाम स्थित गुरुमंदिर में सुविधिनाथ जैन महिला मण्डल के तत्वावधान में चातुर्मास आयोजक परिवार द्वारा श्री राजेन्द्रसूरि अष्टप्रकारी पूजा का आयोजन हुआ, इसमें शामिल होकर कई श्रद्धालुओं ने धर्मलाभ लिया।

राष्ट्रसंतश्री के पावन सान्निध्य में विगत 55 वर्षों से नवकार आराधना का क्रम अखण्ड चल रहा है। इसमें शामिल होने वाले सभी आराधकों के लिए श्वेत वस्त्र पहनना अनिवार्य होता है। नवकार आराधकों द्वारा तीनों समय देववंदन, एकासना, प्रतिक्रमण और पूजा के साथ महामंत्र की 20 माला का जाप किया गया। नवकार आराधना अति मंगलकारी है, इसके प्रभाव से आराधकों के जीवन में आध्यात्मिक परिवर्तन होता है और कई प्रकार की आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती है। इस भव्य आराधना की व्यापक तैयारियां की गई हैं। सूरत के निमिष भाई राही मंडल ने चार चरणों में नवकार की मालाएं जपवाकर वातावरण में आध्यात्मिकता घोल दी।

राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि नवकार का जाप पापों का प्रक्षालन करने वाला है। पुण्योदय को प्रबल कर व्यक्ति को अपने आप से मिलाने वाला है। नवकार से एक बार नाता जुड़ जाए तो फिर कभी उसे तोड़ना नहीं। नवकार महामंत्र की साधना हर समय मदद करती है। आराधक घर, परिवार, व्यापार आदि सब कुछ छोड़कर नवकार महामंत्र के जाप में जुटे हुए हैं।

मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि नवकार का जाप संताप को दूर करता है। यह आंतरिक शत्रुओं पर विजय दिलाने वाला और उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला है। अहंकार जहाँ होता है, वहां नवकार नहीं होता और नवकार जहाँ होता है, वहाँ से अहंकार भाग जाता है।

आराधकों के बीच
फहराया तिरंगा

जयन्तसेन धाम में स्वतंत्रता दिवस पर देशभक्ति का जज्बा भी खूब दिखा। राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप ने देश के विभिन्न प्रांतों से आए नवकार आराधकों के बीच जनशक्ति संस्था के तत्वावधान में तिरंगा फहराया। राष्ट्रसंतश्री ने इस मौके पर देशवासियों से विभिन्न बंधनों से स्वतंत्र होने का आह्वान किया।

राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि स्वतंत्रता केवल शरीर की नहीं, आत्मा की भी होनी चाहिए। विभिन्न प्रकार के बंधनों में बंधे भारतवासी इस राष्ट्रीय पर्व पर स्वयं को स्वतंत्र करें, तभी स्वतंत्रता दिवस मनाना सार्थक होगा।

मुख्य अतिथि श्री काश्यप ने कहा कि जनशक्ति संस्था द्वारा राष्ट्रसंतश्री के रतलाम चातुर्मास में नवकार आराधना के दौरान ध्वजारोहण का आयोजित कार्यक्रम देश के लिए एक शुभ घड़ी है। विकास और आध्यात्म समाज के निर्माण की बड़ी पूंजी है। दोनों मिलकर व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं और उसी से देश का निर्माण होता है।

तपस्या का इतिहास बना तप अनुमोदना का विशाल जुलूस

जयन्तसेन धाम (रतलाम)। राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में तप अनुमोदना का चल समारोह इतिहास रच गया। इसमें 50 से अधिक मासक्षमण व इससे अधिक उपवास, 25 से अधिक सिद्धि तप व 100 से अधिक अन्य तपस्याएं करने वाले तपस्वियों की शहरवासियों ने पलक-पावड़े बिछाकर तप अनुमोदना की। मासक्षमण व सिद्धि तप के तपस्वी 36 बग्घियों में आसीन थे, जबकि अन्य तपस्वी शोभायमान वाहन में सवार थे। चल समारोह में हाथी, ऊंट, घुड़सवार धर्मध्वजा लेकर निकले। जबलपुर, बदनावर और नरसिंगा जिला उज्जैन के बैंडबाजों के साथ ढोलवादकों ने माहौल को उत्सवमय बना दिया।

चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप परिवार द्वारा तप अनुमोदनार्थ आयोजित चल समारोह खैरादीवास स्थित नीमवाला उपाश्रय से प्रारम्भ हुआ। इसमें आगे ही आगे हाथी पर जिनेश्वर देव की तस्वीर लेकर तथा घोड़े पर जैन धर्म की पताकाएं थामें युवक और ऊंट सवार चल रहे थे, जबकि पीछे आकर्षक सजावट में रंगी बग्घियों में मासक्षमण के तपस्वी विराजित थे। रतलाम में 50 से अधिक मासक्षमण तपस्वियों की तप अनुमोदना का यह पहला ऐतिहासिक अवसर था। इसमें राष्ट्रसंतश्री भी मुनिमंडल व साध्वीवृंद के साथ शामिल हुए। त्रिस्तुतिक संघ की पट्ट परम्परा

के आचार्यों पर केन्द्रित झांकी अलग ही छटा बिखेर रही थी। इस चल समारोह में सभी तपस्वियों के परिजन, ईष्ट-मित्र व हजारों श्रद्धालुओं के साथ प्रदेश के ऊर्जा मंत्री व अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पारसचन्द्र जैन व विधायक चेतन्य काश्यप ने भी शिरकत की। चल समारोह प्रारम्भ स्थल से जयन्तसेन धाम मार्ग तक दोनों और जगह-जगह खड़े हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री के दर्शन-वंदन कर गहूली की और आशीर्वाद लेकर तपस्वियों का अभिनंदन किया। शहर के इतिहास में मासक्षमण के 50 तपस्वियों का चल समारोह एक साथ पहली बार निकला।

राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के रतलाम चातुर्मास में चारों तरप धर्म, आध्यात्म, त्याग और तपस्या की गंगा बह रही है। रतलाम और देश के विभिन्न स्थानों पर उनकी प्रेरणा से श्रद्धालु कठिन तप-आराधना कर रहे हैं। बुधवार को भी जयन्तसेन धाम तपोमय रहा। सिद्धितप, अट्ठाई, 9 उपवास और मासक्षमण के तपस्वियों के पारणे हुए। राष्ट्रसंतश्री ने आशीर्वचन में कहा कि तप करने से तन और मन दोनों शुद्ध हो जाते हैं। शुद्धि होने से ही सिद्धि प्राप्त होती है। कई आत्माएँ तपस्या कर खुद को निर्मल बना रही हैं। उनकी तपस्या से रतलाम की धरा पावन और पवित्र हो गई है।

देशभर के गुरुभक्त राष्ट्रसंतश्री से मिच्छामी दुक्कड़म् कर आशीर्वाद लेने पहुँच रहे हैं। जावरा श्रीसंघ अध्यक्ष बाबूलाल तांतेड़ (पटवारी साहब) 11 बसों से संघ लेकर जयन्तसेन धाम आए।

राष्ट्रसंतश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद लेने के बाद उन्होंने चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप का अभिनंदन किया। श्री राजेन्द्र जैन पेढ़ी ट्रस्ट जावरा द्वारा भी सम्मान किया गया। जयन्तसेन धाम में राष्ट्रसंतश्री की प्रेरणा से तपस्या के साथ केशलोच कराकर धर्मलाभ कमाने वालों का भी तांता लगा हुआ है। बुधवार को करवड़ के 4 वर्षीय लवि भंडारी का साध्वी श्री तत्वलताश्रीजी म.सा. के हाथों केशलोचहुआ।

चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप परिवार ने समारोह आयोजित कर जयन्तसेन धाम में दीर्घ तप-आराधकों का अभिनंदन कर तप अनुमोदना की। तप अनुमोदना समारोह में आयोजक परिवार के चेतन्य काश्यप, मातुश्री तेजकुंवर बाई काश्यप, नीता काश्यप, सिद्धार्थ काश्यप व श्रवण काश्यप ने मासक्षमण तपस्वियों को स्वर्ण मुद्रा के साथ अभिनंदन पत्र भेंट कर उनका सम्मान किया। चार घंटे से अधिक चले इस समारोह में मासक्षमण के साथ 21, 15, 11, 9 तथा अट्ठाई की तप आराधना करने वाले तपस्वियों का भी बहुमान किया गया। समारोह का शुभारंभ राष्ट्रसंतश्री ने मंगलाचरण कर किया। उन्होंने हजारों की संख्या में उपस्थित तपस्वियों, उनके परिजनों, ईष्ट-मित्रों व श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि तपस्वियों द्वारा किया गया त्याग और तपस्या रतलाम की शान व धर्म प्रभावना को बढ़ाएगा। धर्मसभा में राष्ट्रसंतश्री ने सभी तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए।

प्रदेश के ऊर्जा मंत्री, अ.भा. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पारसचंद्र जैन ने रतलाम में तपस्या का ऐतिहासिक अवसर निर्मित करने के लिए राष्ट्रसंतश्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप परिवार को साधुवाद दिया। उन्होंने स्वरचित पंक्तियों के माध्यम से तपस्वियों के तप की अनुमोदना की।

इस मौके पर श्री काश्यप ने कहा कि रतलाम में राष्ट्रसंतश्री के चातुर्मास से सर्वत्र आध्यात्मिकता घुल गई है। यह उनके परिवार का सौभाग्य है कि श्रीसंघ ने चातुर्मास आयोजन का लाभ उन्हें दिया है। वे मानते हैं कि गुरुदेव के आशीर्वाद से तप अनुमोदना समारोह का सबसे बड़ा लाभ परिवार को मिला है। यह अनुमोदना बहुत बड़ा काम करेगी। रतलाम की धर्म धरा पर राष्ट्रसंतश्री के आशीर्वाद से हो रहे आयोजन को पूरा देश देख रहा है। उन्होंने जैन दर्शन की महिमा के साथ तप की अनुमोदना की। काश्यप परिवार द्वारा इस मौके पर त्रिस्तुतिक संघ, तपस्वियों के परिजनों, इष्ट-मित्रों का स्वामीवात्सल्य भी आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन राजकमल जैन ने किया।

प्रतिष्ठांजनशलाका की धूम

रतलाम। जयन्तसेन धाम में राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में श्री मुनिसुव्रत स्वामी एवं श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमंदिर के प्रतिष्ठांजनशलाका महामहोत्सव के तहत पंचकल्याणक उत्सव हुआ। पहले दिन पाण्डाल में च्यवन कल्याणक का राज दरबार सजा, जिसमें स्वप्नदर्शन, इन्द्र सिंहासन कम्पायमान, माता-पिता व इन्द्र-इन्द्राणी स्थापना का मंचन किया गया। इस दौरान पाण्डाल में स्वर्ग का आनन्द बिखरा। गीत-संगीत की धुनों ने श्रद्धालुओं को रोमांचित कर दिया। राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में नवकार आराधना की गई। उन्होंने इस मौके पर परमात्मा को ही सच्चा मार्गदर्शक बताया।

च्यवन कल्याणक उत्सव के दौरान 20वें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी के गर्भ धारण और उससे पूर्व बालिकाओं द्वारा माता को आए 14 स्वप्न की प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया। राष्ट्रसंतश्री ने इस मौके पर कहा

कि परमात्मा जीव मात्र को दुख से मुक्ति और सुख की प्राप्ति का मार्ग बताते हैं। उनके द्वारा बताए गए मार्ग का अनुसरण करने वाला सदैव मोक्ष को प्राप्त होता है।

राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में जयन्तसेन धाम के विशाल मंच पर राजा-रानी, महामंत्री, सेनापति, नगर सेठ, कोषाध्यक्ष एवं दासी किरदारों ने च्यवन कल्याणक के प्रसंग की जीवंत प्रस्तुति दी। 14 अगस्त को प्रतिष्ठांजन शलाका महोत्सव के तहत जन्म कल्याणक, 56 दिग्कुमारी उत्सव, इन्द्र महोत्सव, राज ज्योतिष आगमन एवं प्रियंवदा बधाईका मंचन हुआ। कार्यक्रम में तगराज हीराणी परिवार रेवतडा के सदस्यों धीरज, राकेश, सुनील, रवि, प्रदीप, दिलीप, अमित, अमन, रोहित, आशीष ने दक्षिणी परम्परा अनुसार चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप का शाल, श्रीफल से अभिनंदन किया।

जयन्तसेन धाम में श्री मुनिसुव्रत स्वामी जिनालय एवं श्री राजेन्द्रसूरि गुरुमंदिर के प्रतिष्ठांजनशलाका महामहोत्सव के आयोजनों की धूम रही। पंचकल्याणक पूजा के साथ दीक्षा कल्याणक और वर्षीदान के आयोजन में हजारों श्रद्धालु उमड़े। राष्ट्रसंत श्री विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में भव्य शोभायात्रा निकली। इससे पूर्व भगवान के 18 अभिषेक, नामकरण, पाठशाला गमन, लग्न महोत्सव, मामेरा, राज्याभिषेक, माता-पिता, कुल

महत्तारा द्वारा आज्ञा प्रदान के प्रसंगों के मंचन ने भी समां बांधा। शोभायात्रा में दीक्षा कल्याणक की जय-जयकार हुई।

राष्ट्रसंतश्री ने दीक्षा कल्याणक के प्रसंग पर कहा कि संयम के पथ पर चलने वाला साधक ही सिद्धि प्राप्त करता है। परमात्मा भी मोह-माया को त्यागकर संयम पथ की ओर अग्रसर होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि त्याग के बिना वीतराग बनना संभव नहीं है। संसार के किसी भी पदार्थ में शाश्वत सुख देने का सामर्थ्य नहीं है। उसमें मात्र सुख का आभास है। आत्मा के लिए स्थिर होने वाला ही शाश्वत सुख को पा सकता है। उन्होंने कहा आत्मा के गुणों नम्रता, क्षमा, सहनशीलता, ज्ञान, सरलता आदि की प्राप्ति से ही मोक्ष मिल सकता है। संयम का मार्ग ही इन गुणों को प्राप्त कर सकता है। बाहरी वैभव को छोड़ने वाले को ही आत्मवैभव का आनन्द मिलता है।.

इस मौके पर जयन्तसेन धाम परिसर से बैंडबाजों के साथ परमात्मा के दीक्षा कल्याणक का भव्य चल समारोह निकला। उसके बाद परिसर में वर्षीदान के आयोजन में श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। काश्यप परिवार के सिद्धार्थ काश्यप ने संगीतमय स्तवन प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध किया। चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप परिवार की ओर से तपस्वी का सम्मान किया गया।

इससे पूर्व जयन्तसेन धाम में 18 अगस्त को होने वाले प्राण-प्रतिष्ठा और अंजनशलाका महोत्सव को सब मिलकर सफल बनाने का संकल्प शुक्रवार शाम राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में आयोजित सकल जैन श्रीसंघ की बैठक में लिया गया। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए चातुर्मास आयोजक एवं विधायक चेतन्य काश्यप ने कहा कि रतलाम में आचार्यश्री का चातुर्मास अंजनशलाका का भी इतिहास बनाएगा।

श्री काश्यप ने कहा कि जयन्तसेन धाम में 13 अगस्त से पांच दिवसीय जन्म कल्याणक महोत्सव प्रारंभ हो जाएंगे। राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में 18 अगस्त को सुबह 8.30 बजे काश्यप परिवार द्वारा नवनिर्मित श्री मुनि सुव्रत स्वामी जिनमंदिर और दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के गुरुमंदिर में भव्य प्रतिष्ठा तथा अंजनशलाका महोत्सव होगा। इस अवसर पर सकल जैन श्रीसंघ रतलाम और आमंत्रित जनों के स्वामी वात्सल्य (सहभोज) का आयोजन होगा। जयन्तसेन धाम का निर्माण पिछले 8-10 सालों से चल रहा था, लेकिन प्राण-प्रतिष्ठा का अवसर अब मिला है। इस नवोदित तीर्थ के लिए भूमि का लाभ डॉ.ओ.सी.जैन ने, साधु-साध्वी उपाश्रय के निर्माण का लाभ श्री लालचंद रतनलाल सुराना ने तथा भक्ति भवन के निर्माण का लाभ श्री पूनमचंद लुणावत

परिवार ने लिया है। 14 कक्षों की धर्मशाला का निर्माण भी विभिन्न लाभार्थियों के सहयोग से किया गया है।

श्री काश्यप ने बताया कि आचार्यश्री ने मंगल प्रवेश के प्रवचन में कहा था वे रतलाम में पूरे मानव समाज के संत बनकर आए हैं। प्रवेश के चल समारोह में समाज की जागृति और संबंधों का प्रकटीकरण किया है। मानव समभाव का जो परिदृश्य तब दिखा था, वही पुनः दिखाने का अवसर महोत्सव के रूप में मिला है। रतलाम में 110 से अधिक मूर्तियाँ अंजनशलाका के लिए आई हैं, जो मालवा के 25 से 30 नगरों में प्रतिष्ठित होकर रतलाम का गौरव बढ़ाएंगी। श्री काश्यप ने समाजजनों से प्राण प्रतिष्ठा एवं अंजनशलाका महोत्सव को सफल बनाने का आह्वान किया। इस मौके पर सकल जैन श्रीसंघ के घर-घर निमंत्रण पहुँचाने के लिए सुरेन्द्रकुमार सेवक, नवीन सेवक, अनिल सेवक का सम्मान कर उन्हें पत्रिकाएं प्रदान की गईं। बैठक का शुभारंभ आचार्यश्री के मंगलाचरण से व समापन मांगलिक से हुआ। संचालन प्रकाश मूणत ने किया। आभार त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष डॉ. ओ.सी. जैन ने माना। बैठक में तपागच्छ जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष सुनील ललवानी, साधुमार्गी जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष चन्दनमल छाजेड़, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक बरमेचा, श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के अध्यक्ष ललित पटवा, शांत क्रांत जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष मोहनलाल पिरोदिया, दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष ओम अग्रवाल, श्री पार्श्वनाथ जैन मित्र मंडल के अध्यक्ष कोमलसिंह कुमठ, सज्जनमिल जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष जयन्त वोहरा, भगतपुरी जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष अशोक भाणावत, जैन विद्या विकास समिति के अध्यक्ष रंगलाल चौरड़िया, जैन सोश्यल ग्रुप के अध्यक्ष नरेन्द्र गादिया सहित पूनम महिला मंडल टीआईटी रोड, राजेन्द्र जैन महिला परिषद्, समता महिला मण्डल, धर्मोत्तेजक महिला मण्डल, तेरापंथ महिला मण्डल, महावीर महिला सेवा समिति, नमीनाथ महिला मण्डल कस्तूरबानगर, मरूदेवी महिला मण्डल, अलकापुरी जैन महिला मण्डल, जैन दिवाकर बहु मण्डल एवं समता बहु मण्डल के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित थे।

राष्ट्रसंतश्री ने आशीर्वचन में रतलाम समाज की संगठन शक्ति को अनुकरणीय व अभिनंदनीय बताते हुए कहा कि सबकी सहभागिता ने उन्हें अभिभूत किया है। यहाँ सभी साधर्मी, तन, मन, धन से सामाजिक कार्यों में योगदान दे रहे हैं, जो अविस्मरणीय है। रतलाम में चार दशकों पहले भी उन्होंने चातुर्मास किया, लेकिन सबसे सम्पर्क करने का मौका उन्हें अब मिला है। उनकी कामना है कि सभी साधार्मिक शासन प्रभावना के कार्य में सदैव तत्पर बने रहें।

काश्यप परिवार ने वोहराया उत्तराध्ययन सूत्र

24 जुलाई। जयन्तसेन धाम में चातुर्मास के पहले रविवार से धर्म के साथ-साथ तप-आराधना की बयार शुरू हो गई। राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के सान्निध्य में गुरुभक्तों ने सामूहिक तपस्या का दौर शुरू किया। राष्ट्रसंतश्री ने प्रवचनमाला में उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन शुरू किया। इससे पूर्व चातुर्मास आयोजक एवं विधायक चेतन्य काश्यप परिवार की मातुश्री तेजकुंवरबाई काश्यप, नीता काश्यप एवं सिद्धार्थ काश्यप ने श्रद्धा और भक्ति भरे माहौल में आचार्यश्री को उत्तराध्ययन सूत्र वोहराया। रविवार को जयन्तसेन धाम में देशभर के गुरुभक्त उमड़े। राष्ट्रसंतश्री के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद लेने वालों का तांता लगा रहा।

राष्ट्रसंतश्री ने विशाल धर्मसभा को आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि उत्तराध्ययन सूत्र में कुल 36 अध्ययन हैं और इनमें पहला विनय है। विनय जीवन का सबसे बड़ा गुआ है। विनय के बिना जीवन कभी निर्मल और पवित्र नहीं हो सकता। कहने और दिखने में विनय शब्द छोटा है, पर इसी शब्द में जीवन दर्शन समाया हुआ है। विनय जहाँ होता है, वहाँ अहंकार नहीं होता। विनय और अहंकार एक-दूसरे के परस्पर विरोधी हैं। अहंकारी का नाश होता है, जबकि विनयवान कभी पराजित नहीं होता। जीवन में विनय रखकर उसे सार्थक बनाएँ। आचार्यश्री ने कहा कि रत्नपुरी की पावन धरा पर चातुर्मास के दौरान सामूहिक तपस्या का दौर शुरू हो चुका है। तप-आराधना कर सभी साधक जीवन को आत्मकल्याण की ओर ले जाने के मार्ग पर अग्रसर होंगे।

चातुर्मास अन्तर्गत पहले रविवार को मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने 'मुझे गुस्सा क्यों आता है?' विषय पर विशेष प्रवचन देते हुए कहा कि क्रोध की आग में सद्गुण खत्म हो जाते हैं। क्रोध, शांति, व्यवहार, प्रेम सब कुछ खत्म कर देता है। क्रोध का अनुसरण जीवन में कर्त नहीं करना चाहिए। कोई यह नहीं माने कि जिनशासन मिल गया तो उसका कल्याण हो गया। जब तक क्रोध जैसे अवगुण नहीं छोड़ेंगे, तब तक कल्याण संभव नहीं। क्रोध करने पर व्यक्ति चाण्डाल बन जाता है। इसलिए क्रोध करने से पहले हजार बार सोच लेना चाहिए।

केन्द्रीय मंत्री तौमर ने दिलाया युवाओं को संकल्प

जयन्तसेन धाम में 10 सितम्बर को युवा संस्कार शिविर रतलाम के इतिहास में राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन एक नई ईबारत लिख गया। शिविर के सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में चेतन्य उद्घाटन सत्र में केन्द्रीय ग्रामीण वकीस काश्यप फाउण्डेशन द्वारा आयोजित एवं पंचायती राज मंत्री नरेन्द्रसिंह

तोमर ने हजारों युवाओं को स्वच्छता का संकल्प दिलाकर संस्कारों के रोपण की शुरुआत की। राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि आज शिविर नहीं संस्कार पर्व है। मानव जन्म लेने वाला संस्कारवान बनकर महामानव बन जाता है। संस्कार व्यक्ति को पूजनीय बनाते हैं। युवा ही देश का भविष्य हैं, वे संस्कारित रहे तो भारत को विश्व गुरु बनने से कोई नहीं रोक सकेगा।

युवा संस्कार शिविर का शुभारम्भ दादा गुरुदेव श्री राजेन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. के चित्र पर दीप प्रज्वलन व माल्यार्पण के साथ हुआ। केन्द्रीय मंत्री श्री तोमर के साथ चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप, महापौर डॉ. सुनीता यार्दे, जिला पंचायत अध्यक्ष रमेश मईडा, विधायक संगीता चारेल, जिला भाजपा अध्यक्ष बजरंग पुरोहित मंचासीन थे। राष्ट्रसंतश्री ने प्रारम्भ में मंगलाचरण किया, तत्पश्चात् संबोधन में युवाओं को संस्कारवान बनने की प्रेरणा देते हुए कहा कि युवाओं में संस्कारों की अभिवृद्धि उनके परिवार के उत्थान की राह खोलेगी। सभी सुबह उठने के बाद माता-पिता, देवगुरु को प्रणाम करें। बचपन में जो अच्छे संस्कार लेता है, वह पीछे मुड़कर नहीं देखता। मानव किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय का हो, संस्कार सबके लिए अच्छे होते हैं। आज की युवा पीढ़ी देश के लिए रीढ़ की हड्डी है। यह हड्डी मजबूत होगी तो देश मजबूत होगा।

राष्ट्रसंतश्री ने स्वच्छता की प्रेरणा देते हुए कहा कि कोई भी व्यक्ति मैला पसंद नहीं करता, इसलिए शिविर से यह संकल्प लेकर जाएं कि मन-वचन-काया से जीवन को सदैव गंदगीमुक्त रखेंगे। मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने कहा कि स्वच्छ भारत की तरह राष्ट्रसंतश्री स्वच्छ हृदय का अभियान चला रहे हैं। हृदय संस्कारों से स्वच्छ होता है। यह शिविर इस दिशा में सार्थक प्रयास है।

युवा ही ला सकते हैं परिवर्तन

- श्री तोमर

केन्द्रीय मंत्री श्री तोमर ने स्वच्छता संकल्प दिलाने से पूर्व कहा कि किसी भी राष्ट्र के लिए युवा बहुत बड़ी पूंजी होते हैं। उन्हें सही दिशा दिखाना सबकी जिम्मेदारी है। इतिहास गवाह है कि परिवर्तन हमेशा युवा ही लाए हैं। जगद्गुरु आदि शंकराचार्य, स्वामी विवेकानन्द, रानी लक्ष्मीबाई और अन्य सभी

क्रांतिकारियों ने युवावस्था में ही इतिहास लिखा है। राष्ट्रसंतश्री भी युवावस्था में ही दीक्षा, देशाटन और तपस्या कर इस मुकाम पर पहुँचे हैं। युवावस्था मानव जीवन की महत्त्वपूर्ण अवस्था होती है। इसमें यदि शिक्षा संस्कारहीन, धर्महीन और दायित्वहीन होगी तो महत्त्वहीन हो जाएगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने लाल किले से देशवासियों को स्वच्छ भारत अभियान में जुड़ने का आह्वान किया है, पर यह सोचें कि आजादी के 70 वर्ष बाद इस अभियान की जरूरत क्यों पड़ी? स्वच्छता हमारे संस्कारों में है, उसे अपनाकर हम भारत को विकसित राष्ट्र बना सकते हैं। श्री तोमर ने कहा कि युवा घर, स्कूल कहीं भी गंदगी नहीं होने देने का संस्कार अपना लें तो पूरा रतलाम स्वच्छ हो जाएगा। हमने भगवान राम, कृष्ण और महावीर को नहीं देखा, लेकिन आचार्यश्री को देख रहे हैं जो तपस्या के बल पर पूजनीय हो गए हैं। उनके आशीर्वाद से होने वाला संस्कारों का बीजारोपण भारत को नई दिशा देगा।

भौतिक विकास ही नहीं, संस्कारों का विकास भी जरूरी- श्री काश्यप

शिविर के आरम्भ में फाउण्डेशन के अध्यक्ष चेतन्य काश्यप ने कहा कि रतलामवासियों ने उन्हें जनप्रतिनिधि चुनकर जो जिम्मेदारी दी है, इसमें शहर के भौतिक विकास के साथ संस्कारों का विकास करना भी उनकी जिम्मेदारी है। भौतिक दृष्टि से मेडिकल कॉलेज, नमकीन क्लस्टर, फोरलेन आदि कई सौगातें रतलाम को मिल चुकी हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से संस्कारों के विकास के लिए यह शिविर हो रहा है। इसकी अवधारणा राष्ट्रसंतश्री के मंगल प्रवेश के दौरान उस वक्त बन गई थी, जब आचार्यश्री ने कहा कि वे रतलाम में जाति,समाज के लिए नहीं अपितु पूरे मानव समाज के संत बनकर आए हैं। शिविर में हजारों युवाओं की उपस्थिति इस बात का प्रतीक है कि रतलाम की धर्मधरा पर भौतिक और आर्थिक विकास के साथ युवा तरुणाई संस्कारों को लेकर काफी उत्साहित है। जीवन में संस्कारों का बहुत महत्व है। पारिवारिक संस्कारों ने उन्हें अहिंसा ग्राम की स्थापना से लेकर युवा संस्कार शिविर जैसे आयोजनों की प्रेरणा दी है। शिविर में आए युवा संस्कारों की वाणी सुनें, चिन्तन व मनन करें और उसे जीवन में ढालें तो निश्चित ही एक दिन वे भी देश के नामचीन व्यक्तियों में शामिल होंगे। इस अवसर पर श्री काश्यप ने केन्द्रीय मंत्री श्री तोमर एवं मंचासीन अन्य अतिथियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भी प्रकाश डाला।

जीवन में पहली बार देखा

प्रतिभाओं का महासंगम

1650 मेधावी विद्यार्थी सम्मानित

ज्ञान के बिना किसी का विकास नहीं होता। ज्ञान, व्यक्ति को उन्नत और निर्मल करता है। सद्भाव और अपनत्व का भाग जगाता है। शास्त्रों में कहा गया है कि ज्ञान के बिना तो संसार ही अधूरा है। सारी धन-दौलत चोरी हो सकती है, लेकिन ज्ञान की सम्पत्ति कभी चुराई नहीं जा सकती। ऐसे ज्ञान की ओर तत्पर मेधावी छात्र-छात्राओं में छुपी प्रतिभा का महासंगम जीवन में पहली बार देखने को मिला है। इसके लिए चेतन्य काश्यप फाउण्डेशन साधुवाद का पात्र है।

राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के इन

आशीर्वचनों के बीच जयन्तसेन धाम में 7 अगस्त 2016 को आयोजित प्रतिभा सम्मान समारोह में 10 वीं एवं 12वीं बोर्ड की परीक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले रतलाम के 1650 मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान हुआ। मुख्य अतिथि म.प्र. विधानसभा अध्यक्ष डॉ.सीतारमन शर्मा थे। अध्यक्षता म.प्र.भाजपा अध्यक्ष श्री नन्दकुमारसिंह चौहान ने की। विशेष अतिथि के रूप में महापौर डॉ. सुनीता यार्दे, विधायक मथुरालाल डामर, संगीता चारेल, जितेन्द्र गेहलोत उपस्थित रहे। उनके साथ जिला पंचायत अध्यक्ष परमेश मईडा, नगर निगम अध्यक्ष अशोक पोरवाल, जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष अशोक चौटाला, जिला भाजपा अध्यक्ष बजरंग पुरोहित, त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष डॉ. ओ.सी.जैन सहित 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले 98 विद्यार्थी भी मंचासीन थे।

राष्ट्रसंतश्री ने सम्मानित मेधावी छात्र-छात्राओं को तरक्की की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह विकास का उत्सव है। सभी विद्यार्थी अच्छा ज्ञान प्राप्त करें। जाति-सम्प्रदाय के भेदों में न पढ़कर सिर्फ मानव समाज के उत्थान का भाव लेकर सभी आगे बढ़ें और स्वयं, परिवार, नगर, प्रदेश और देश का नाम रोशन करें। आचार्यश्री ने अतिथियों को साहित्य प्रदान किया। आरम्भ में फाउण्डेशन अध्यक्ष एवं विधायक चेतन्य काश्यप, सिद्धार्थ काश्यप, श्रवण काश्यप, प्रतिभा सम्मान समारोह समिति के शैलेन्द्र डागा, निर्मल लूनिया, महेन्द्र नाहर, मनीषा शर्मा, सोना शर्मा, मुकेश सोनी, आनन्द जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर अशासकीय शिक्षण संस्था संघ की ओर से फाउण्डेशन अध्यक्ष व विधायक चेतन्य काश्यप का अभिनन्दन किया गया। समारोह में आईपीएस के लिए चयनित रजत सकलेचा एवं सी.ए. परीक्षा में राष्ट्रीय स्तर पर 9वीं रैंक प्राप्त करने वाले सोमेश जैन के परिजनों का भी सम्मान किया गया।

श्री काश्यप ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान ने दो वर्ष पूर्व कक्षा 12वीं की परीक्षा में 80 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को लेपटॉप देने की जो योजना शुरू की है, उसीसे प्रेरित होकर उन्होंने प्रतिभा सम्मान की शुरूआत की है। गतवर्ष 1500 मेधावी छात्र-छात्राएं सम्मानित हुए थे और इस वर्ष यह आंकड़ा 1650 तक पहुंच गया है।

संतों के मिलन से धन्य हुआ जयन्तसेन धाम

नवोदित तीर्थ जयन्तसेन धाम में राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. और श्री नित्यानंद आश्रम के संत नर्मदानंदजी महाराज का आत्मीय मिलन हुआ। इस दौरान दोनों के बीच धार्मिक और आध्यात्मिक चर्चा हुई। देश में संस्कृति और संस्कारों को मजबूत करने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी गई। राष्ट्रसंत ने माँ नर्मदा पर स्वयं द्वारा लिखे गए गीत नर्मदानंदजी को समर्पित किए। इस मौके पर चातुर्मास आयोजक और विधायक चेतन्य काश्यप परिवार तथा श्री त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ की ओर से अतिथि संत का स्वागत, अभिनंदन किया गया।

चातुर्मास हेतु जयन्तसेन धाम में विराजित राष्ट्रसंत और नर्मदानंदजी के बीच चर्चा की शुरूआत एक-दूसरे की

कुशलक्षेम पूछकर हुई और बाद में दोनों के बीच अनेक विषयों पर मंत्रणा हुई। नर्मदानंदजी ने राष्ट्रसंतश्री के आगमन को रतलाम की धरा के लिए पुण्यशाली बताया। उन्होंने नित्यानन्द आश्रम में आयोजित महारूद्र यज्ञ में राष्ट्रसंतश्री को आमंत्रित किया और बताया कि गुरु पूर्णिमा को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। नर्मदा नदी के किनारे बने आश्रम में भी राष्ट्रसंतश्री को आमंत्रित किया।

राष्ट्रसंतश्री ने बताया कि 39 वर्ष बाद इस बार चातुर्मास आयोजक और विधायक चेतन्य काश्यप की प्रबल इच्छा के कारण वे चातुर्मास के लिए पुनः रतलाम आए हैं। आचार्यश्री को जब बताया गया कि नर्मदानंदजी माँ नर्मदा के मानस पुत्र हैं तो उन्होंने माँ नर्मदा पर रचित कविता और गीतों से उनका बहुमान किया।

नर्मदानंदजी महाराज और राष्ट्रसंतश्री के बीच मंत्रोच्चार के बीच अभिवादन हुआ। पंडित नन्दकिशोर व्यास ने मंत्रोच्चारण किया। इस मौके पर मातुश्री तेजकुंवर बाई काश्यप की उपस्थिति में चातुर्मास आयोजक चेतन्य काश्यप, श्रीसंघ के सुशील छाजेड़, सिद्धार्थ काश्यप, श्रवण काश्यप ने शॉल, माला, श्रीफल से नर्मदानन्दजी का अभिनन्दन किया। संतों ने पहली वर्षगांठ पर सारांश श्रवण काश्यप को आशीर्वाद प्रदान किया।

नित्यानन्द आश्रम के संत श्री नर्मदानंदजी महाराज ने राष्ट्रसंतश्री से भेंट के बाद जयन्तसेन धाम का अवलोकन किया। उन्हें चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप ने परिसर में निर्मित मंदिरों, पांडालों सहित अन्य व्यवस्थाओं से अवगत करवाया। प्रवचन पाण्डाल भ्रमण के दौरान नर्मदानंदजी ने धर्म और आध्यात्म से प्रेरित प्रदर्शनी की प्रशंसा की।

इसी क्रम में गुरुवार को पुनः जयन्तसेन धाम में दो वरिष्ठ संतों का मिलन हुआ। राष्ट्रसंतश्री से मिलने अखण्ड ज्ञान आश्रम के महामण्डलेश्वर स्वामी श्री स्वरूपानन्दजी महाराज पधारे। उन्होंने राष्ट्रसंतश्री की कुशलक्षेम पूछने के बाद उन्हें भागवत गीता भेंट की। राष्ट्रसंतश्री ने भी स्वरचित साहित्य भेंट किया। इस मौके पर चातुर्मास आयोजक, विधायक व राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप ने महामण्डलेश्वर का शाल, श्रीफल से स्वागत-सम्मान किया। इस दौरान पूर्व महापौर शैलेन्द्र डागा, भाजपा जिला उपाद्यक्ष मनोहर पोरवाल, श्रीसंघ के सुशील छाजेड़, राजकमल जैन, स्वामीजी के साथ आए सर्वश्री देवस्वरूपजी, कैलाश जाट, अम्बर जाट, राजेन्द्र पुरोहित, छोटू सूर्यवंशी, अनोखीलाल दुबे आदि उपस्थित थे।

रत्नपुरी के पर्युषण याद रहेंगे

राष्ट्रसंतश्री

पर्युषण पर्व में जयन्तसेन धाम में राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि रत्नपुरी के पर्युषण याद रहेंगे। पर्वाधिराज के दौरान सामूहिक अट्ठाई की तप आराधना में भी रतलाम इतिहास रच रहा है। 108 अट्ठाई का आह्वान किया था, मगर अब तक 152 नाम आ चुके हैं, जो अनुमोदनीय है। तप करके आराधक अपने परिणामों को निर्मल करने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और चातुर्मास के रूप में मिले अवसर पर अपने जीवन को धन्य कर रहे हैं।

जयन्तसेन धाम के विशाल पाण्डाल में रविवार को प्रातः मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. ने कल्पसूत्र का वाचन किया। तत्पश्चात् मुनिराजश्री निपुणरत्नविजयजी म.सा. ने प्रवचन में चातुर्मास के अवसर का लाभ उठाकर गुरुदेव की निश्रा में अधिक से अधिक धर्मलाभ लेने का आह्वान किया। राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि हमारी आत्मा संसार में न जाने कितने नाटक खेलती है। हर घड़ी संसार के मंच पर यह जीव नए नाटक में शामिल होता है और मानव जीवन इसी में पूरा हो जाता है।

जयन्तसेनधाम में तकनीकी

शिक्षा के नए जिला प्रभारी, कौशल विकास, श्रम व स्कूली शिक्षा राज्यमंत्री श्री दीपक जोशी ने राष्ट्रसंतश्री से आशीर्वाद लिया। उन्होंने कहा कि संसार की श्रेष्ठ संस्कृति सनातन और उसमें श्रेष्ठतम जैनमत के आचार्यश्री से आशीर्वाद लेकर वे अभिभूत हैं। उनकी उन्नति में जैनमत का बहुत बड़ा योगदान है। वे धर्म से नहीं लेकिन कर्म से जैन हैं। उनका मानना है कि पूरा संसार यदि जैन मत को अपना ले तो सारी समस्याएँ खत्म हो जाएंगीं। उन्होंने राष्ट्रसंतश्री से आशीर्वाद मांगते हुए कहा कि उनसे राजनीति में गलतियाँ भले ही हो जाए, लेकिन बेईमानी कभी नहीं हो। इस मौके पर चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप ने श्री जोशी का स्वागत-सम्मान किया। संचालन राजकमल जैन ने किया।

कृतार्थ हुआ पालीताणा यात्रा संघ

बुधवार को महिदपुर जिला उज्जैन (म.प्र.) से निकला पालीताणा यात्री संघ चातुर्मास हेतु विराजित राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का सागोद रोड स्थित जयन्तसेन धाम में दर्शन-वंदन कर कृतार्थ हो गया। संघ में शामिल 125 श्रावक-श्राविकाओं को राष्ट्रसंतश्री ने मांगलिक सुनाई। इस मौके पर चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप परिवार और अ.भा.सौ. वृ.त.त्रिस्तुतिक श्वे. जैन श्रीसंघ की ओर से पालीताणा यात्री संघ के प्रतिनिधियों का बहुमान किया गया।

इस अवसर पर चातुर्मास आयोजक परिवार के सिद्धार्थ काश्यप, श्रीसंघ के सुशील छाजेड़ ने यात्री संघ लेकर आए मण्डल अध्यक्ष संदीप सेठिया और संघ में शामिल वरिष्ठ सिरेमल चौपड़ा का बहुमान किया। मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने संबोधित किया। संचालन सुशील छाजेड़ व जैनेन्द्र खेमेसरा ने किया।

राष्ट्रसंतश्री का आशीष लेने आए जापानी गुरुभक्त

राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.के भक्त देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी फैले हुए हैं। गुरुवार को जापान के भक्त जयन्तसेन धाम पहुँचे और गुरुदेव के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। चातुर्मास आयोजक व विधायक चेतन्य काश्यप ने भक्तों का स्वागत किया। भक्तों को विश्व हिन्दू परिषद् (गौ रक्षा विभाग) के राष्ट्रीय महामंत्री व अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष वीरेन्द्र भण्डारी लेकर आए।

जापान से रतलाम आई श्रीमती टोमोको ओसिरो, उनके बेटे उजे ताइगिरो, शंकरा ताइगिरो व श्रीमती रियोको से राष्ट्रसंतश्री ने कुशलक्षेम पूछी। श्री भण्डारी 13 वर्षों से जापानी भक्तों को राष्ट्रसंतश्री के पास ला रहे हैं। वे अब तक जापान के 2200 लोगों को पूर्णतः शाकाहारी बना चुके हैं। मार्बल मूर्ति का व्यापार करने वाले श्री भण्डारी देश में राष्ट्रसंतश्री के प्रवास स्थलों पर प्रतिवर्ष 400 से 500 जापानी भक्तों को लेकर आते हैं। आगामी सितम्बर माह में उनके साथ 40 सदस्यीय दल रतलाम आएगा। जापानी भक्तों के साथ श्रीमती मंजू भण्डारी उपस्थित रहीं।

पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन का सम्मान

जयन्तसेन धाम में शनिवार को प्रख्यात पत्रकार पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन का सम्मान किया गया। चातुर्मास आयोजक एवं विधायक चेतन्य काश्यप ने श्री हुसैन सहित, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अ.भा. सम्पर्क प्रमुख हस्तीमल जैन का शॉल, श्रीफल से सम्मान किया। उन्होंने कहा कि श्री हुसैन चिंतक और अच्छे विचारक हैं और धार्मिक, सामाजिक समरसता के लिए कार्यरत हैं। शाकाहार को अपना जीवन बनाने के बाद उन्होंने 'इस्लाम और शाकाहार' पुस्तक लिखकर पूरी दुनिया को प्रेरित किया है।

सम्मान पश्चात् राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि श्री हुसैन, भगवान महावीर की वाणी को आत्मसात कर जन-जन को परमात्मा के संदेशों के प्रति प्रेरित कर रहे हैं। भगवान महावीर ने जो बातें कहीं है वे सभी धर्मों में कही गई हैं। अहिंसा का संदेश सबने दिया है। मुर्दे में यदि जान नहीं डाल सकते तो किसी का जीवन लेने का भी कोई अधिकार नहीं है। परमात्मा की वाणी का अनुसरण करें और अहिंसक बनें। केवल हिंसा नहीं करना ही अहिंसा नहीं है। दोषमुक्त रहना भी अहिंसा है। हम भाग्यशाली हैं जो भगवान महावीर के शासन में जन्म मिला है। अहिंसक बनकर इसे सार्थक करना चाहिए।

सम्मान से अभिभूत श्री हुसैन ने कहा कि उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि खुद के कारण नहीं, अपितु भगवान महावीर के कारण मिली है। वे राष्ट्रसंतश्री और जैन धर्म को सजदा करते हैं।

मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन करते हुए परमात्मा की वाणी पर भरोसा करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि मानव जीवन भी बड़ा विचित्र है, इसमें डॉक्टर के कहने पर कुछ भी कर लेते हैं, घर पर कुछ रुपए का ताला लगाने के बाद रक्षा का भरोसा हो जाता है, लेकिन परमात्मा की वाणी पर हम भरोसा नहीं करते। यह वाणी जीवन को उन्नत कर मोक्ष मार्ग पर ले जाने वाली है। बीमारी का पता चल जाए तो ही दवा असर करती है। मानव जीवन में कषाय, राग, द्वेष की बीमारी सबको लगी है, इसका उपचार परमात्मा की वाणी सुनने और उस पर विश्वास करने से ही हो सकता है।

पर्वाधिराज पर्युषण पर्व हमें आत्मावलोकन का संदेश देता है

– राष्ट्रसंतश्री

राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में सोमवार को पर्वाधिराज पर्युषण की आराधना शुरू हुई। पहले दिन हजारों गुरुभक्तों को संबोधित करते हुए राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि पर्वाधिराज पर्युषण हमें जगाने, शिक्षा और दिशा देने आया है। यह पर्व हमें आत्मावलोकन का संदेश देता है। इस पर्व के दौरान धर्म, आराधना कर जीवन का कल्याण किया जा सकता है।

जयन्तसेन धाम में आयोजित धर्मसभा में राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि पर्युषण पर्व एक प्रकार की आध्यात्मिक दीपावली है। व्यापारी वर्ग जैसे दीपावली पर साल भर के आय-व्यय का पूरा हिसाब करते हैं, उसी तरह पर्युषण आने पर धर्मावलंबी वर्षभर के पुण्य और पाप का हिसाब करते हैं। उन्होंने पर्युषण महापर्व के दौरान दोषों को छोड़कर परमात्मा की साधना, आराधना और उपासना में जुटने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वर्ष में जैसे चातुर्मास का महत्व है, वैसे ही चातुर्मास में पर्युषण के दिनों का विशिष्ट महत्व होता है। इन दिनों में किए गए जप-तप कभी निरर्थक नहीं होते। पर्युषण के दिनों में साधार्मिक भक्ति करनी चाहिए।

मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने इससे पूर्व पर्वाधिराज पर्युषण के दौरान पालन किए जाने वाले कर्त्तव्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस पर्व में शब्दों की हिंसा भी नहीं करना चाहिए। साधार्मिक भक्ति करनी चाहिए और सदैव क्षमापना का भाव रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि

साधार्मिक भक्ति का तात्पर्य सिर्फ भोजन करना ही नहीं होता, जरूरतमंद व्यक्ति की हर तरह से मदद करना भी साधार्मिक भक्ति है। गुरुदेव की प्रेरणा से चेतन्य काश्यप परिवार ने 15 बच्चों को उच्च शिक्षित करने का नियम लेकर भी साधार्मिक भक्ति का उत्कृष्ट कार्य किया है। आपको भी कोई जरूरतमंद मिले या दिखाई दे तो उसकी मदद अवश्य करें।

केशलोचनः- जयन्तसेनधाम में प्रतिदिन प्रवचनों के माध्यम से धर्म की गंगा बहाने वाले मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने 9 मिनट में केश लोच करवा लिया। उनके केश लोच का कार्य मुनिराजश्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. ने किया। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व के पूर्व राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में चातुर्मास हेतु रतलाम में विराजित अधिकांश साधु भगवंत एवं साध्वीवृंद ने केश लोच करवा लिया है। सोमवार को उपस्थित गुरुभक्तों ने धर्मसभा में इस कठिन कार्य की करतल ध्वनि से अनुमोदना की।

कल्पसूत्र सूत्र सुनने वालों को मिलता है मोक्ष : राष्ट्रसंतश्री

'कल्प' का मतलब मर्यादा होता है और कल्पसूत्र, मर्यादा की बात सिखाने वाले सूत्र है। मर्यादा में रहने वाला जीव अपने जीवन को सुख और शांतिपूर्वक आगे बढ़ा सकता है। कल्पसूत्र को सुनने के बाद जो व्यक्ति मर्यादा सीख लेता है, वह महान बन सकता है। कल्पसूत्र को सुनने के बाद जीवन में उतारना चाहिए अन्यथा प्रतिवर्ष कल्पसूत्र सुनें और जीवन में उसका अस्तित्व न हो तो कोई मतलब नहीं रह जाता। ज्ञानी कहते हैं कि नौ बार कल्पसूत्र सुनने वाले को नौवें भव में मोक्ष मिल जाता है।

पर्युषण पर्व के चौथे दिन मुनिराज श्री निपुणरत्न विजयजी म.सा. के मुखारविंद से सुबह कल्पसूत्र का वाचन शुरू हुआ। इससे पूर्व चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप परिवार के सिद्धार्थ काश्यप ने कल्पसूत्र की पूजा की। वाचन के पहले दौर के बाद राष्ट्रसंतश्री ने उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि कल्पसूत्र में अपने और पूर्व काल के जीवों की कथा के साथ परमात्मा के जीवन की बातों का अद्भुत समावेश है। मर्यादा सब की होती है, छोटे-बड़े, माता-पिता और गुरुजनों की मर्यादा का पालन हर व्यक्ति को करना चाहिए। कल्पसूत्र सुनने के बाद जीवन मर्यादामय बनना चाहिए। भगवान के दो शब्द भी जीवन को उज्जवल और समृद्ध कर देते हैं। कल्पसूत्र में भगवान का सम्पूर्ण जीवन सुनने को मिलेगा, वे भी मनुष्य थे। उन्होंने अपने स्वरूप को कैसे मानव से महामानव व परमात्मा के रूप में तब्दील किया, यह जानने को मिलेगा। उसे नियमित श्रवण करें। दोपहर में मुनिराजश्री निपुणरत्न विजयजी, श्री पवित्ररत्न विजयजी एवं श्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा. द्वारा कल्पसूत्र का वाचन किया गया। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ अमोलकदास त्रिभुवनदास (थरादवाला) ने लिया।

'संवत्सरी' आत्मशुद्धि का महापर्व

: राष्ट्रसंतश्री

पुष्प, चंदन, और अगरबत्ती का स्वभाव जैसे सुगन्ध फैलाना है, वैसे ही मानव जीवन में हमें भी गुणों की खुशबू फैलाना चाहिए। संवत्सरी महापर्व आत्मशुद्धि का महा पर्व है। यह पर्व सुन्दर जप-तप-आराधना कर शुभ भावों की खुशबू से जीवन को महकाने की प्रेरणा देता है। राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.के इन उद्गारों के बीच जयन्तसेन धाम में सोमवार को संवत्सरी पर्व श्रद्धा एवं उल्लास से मनाया गया।

सुबह चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप परिवार द्वारा राष्ट्रसंतश्री को बारसा सूत्र वोहराया गया। इसके बाद मुनिराज श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म.सा. ने असंख्य श्रद्धालुओं को बारसा सूत्र श्रवण करवाया। चातुर्मास आयोजक परिवार के सिद्धार्थ काश्यप ने बारसा सूत्र के चित्रों का प्रदर्शन किया। शाम को राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में संवत्सरि महापर्व के प्रतिक्रमण हुए, जिनमें देशभर से आए हजारों गुरुभक्त उपस्थित रहे।

प्रतिक्रमण पूर्ण होने पर चातुर्मास आयोजक परिवार ने वर्षभर में हुए ज्ञात-अज्ञात अविनय के लिए गुरुदेव एवं समस्त उपस्थितजनों से क्षमायाचना की। इससे पूर्व जयन्तसेन धाम में चैत्य परिपाटी का आयोजन भी किया गया। रात्रि में कुमारपाल राजा के परिवेश में मुनि श्री सुव्रतस्वामी जिनालय में भव्य आरती की गई। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ नानालाल बाबूलाल कटारिया (भाणसा) दिल्ली वाले परिवार ने लिया।

राष्ट्रसंतश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.की निश्रा में 6 सितम्बर मंगलवार को क्षमापना पर्व मनाया गया। इस मौके पर पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में हुई तपस्या के पारणे भी हुए। चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप परिवार द्वारा सामूहिक अट्ठाई करने वाले 200 से अधिक तपस्वियों एवं सिद्धितप के तपस्वियों का बहुमान किया गया।

तपोमय हुआ हर कण

राष्ट्रसंत वर्त्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.की प्रेरणा से मंगलवार 6 सितम्बर को जयन्तसेन धाम तपोमय हो गया। सामूहिक अट्ठाई करने वाले तपस्वियों ने पारणा कर अपनी तप आराधना पूर्ण की। चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप परिवार ने अट्ठाई करने वाले 216 और सिद्धितप करने वाले 25 तपस्वियों का बहुमान किया। साधु-साध्वी भगवंत की तप-आराधना भी पूर्ण हुई। इस मौके पर क्षमापना पर्व भी मनाया गया।

राष्ट्रसंतश्री ने तप आराधकों एवं अन्य श्रद्धालुओं को संबोधन में कहा कि हमारी आत्मा राग-द्वेष और विषय-कषाय से कलुषित होकर किसी शरीर का आश्रय लेकर संसार में भटकती रहती है। इसका भव-भ्रमण मिटाने के लिए शास्त्रों में संयम और तप के दो उपाय बताए गए हैं। साधु-साध्वीजनों के मन निर्मल होते हैं और हृदय स्वच्छ होता है तो उसका कारण संयम और तप की विशेष साधना ही रहती है। इस साधना से उनकी आत्मा बुराइयों से रहित हो जाती है। मन, वचन और काया के संयम से वे अपने पापों पर जहां अंकुश लगाते हैं, वहीं कर्मों की निर्जरा भी करते हैं।

जप-तप और संयम का अनुसरण हर व्यक्ति को करना चाहिए और इससे हमारी आत्मा को पवित्र करना चाहिए। रतलाम में सामूहिक अट्ठाई की आराधना भी ऐतिहासिक हुई है। पर्वाधिराज पर्युषण के दौरान यह तप कर कई आत्माओं ने स्वयं को निर्मल किया है।

राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में इस अवसर पर सभी तपस्वियों के पारणे हुए। चातुर्मास आयोजक परिवार की ओर से श्रीमती तेजकुंवर बाई काश्यप, चेतन्य काश्यप, नीता काश्यप, सिद्धार्थ काश्यप, पूर्वी काश्यप, श्रवण काश्यप, अमि काश्यप आदि ने तपस्वियों का बहुमान कर पारणा करवाया। राष्ट्रसंतश्री की प्रेरणा से रतलाम में चातुर्मास हेतु विराजित साधु-साध्वी भगवंतों ने भी आराधकों के साथ तप-आराधनाएं पूर्ण कीं। मुनिराजश्री प्रसिद्धरत्न विजयजी म.सा., श्री प्रत्यक्षरत्न विजयजी म.सा., श्री तारकरत्न विजयजी म.सा., साध्वीश्री राजयशाश्रीजी म.सा. द्वारा वर्धमान तप की ओली, 9 उपवास एवं अट्ठाई की तपस्या पूर्ण की गई।

सर्वत्र गूँजा मिच्छामि दुक्कड़म्

पर्वाधिराज पर्युषण के समापन की बेला में क्षमापना पर्व उत्साह एवं उल्लास से मना। जयन्तसेन धाम सहित सर्वत्र मंगलवार को मिच्छामि दुक्कड़म् की गूंज रही। चातुर्मास आयोजक चेतन्य काश्यप एवं परिजनों ने राष्ट्रसंतश्री एवं अन्य सभी से वर्षभर में जाने-अनजाने में हुए अविनय के लिए क्षमायाचना की। श्रद्धालु एक-दूसरे से मिच्छामि दुक्कड़म् कहकर क्षमायाचना करते नजर आए। राष्ट्रसंतश्री ने कहा कि पर्युषण का एक नाम क्षमापना पर्व भी है, जिससे सिद्ध होता है कि यह पर्व क्षमा मांगने और क्षमा करने के लिए ही आयोजित होता है। क्षमा मांगना साहस का काम है। अहंकारहीन नम्र व्यक्ति ही क्षमायाचना कर सकता है। क्षमा करना वीरता का कार्य है। सभी तपस्याओं का मूल क्षमा ही है, इसलिए तपस्याओं से कर्मों की जो निर्जरा होती है, वह क्षमा से भी हो जाती है।

जन्म से अधिक महत्त्वपूर्ण है मृत्यु

–राष्ट्रसंतश्री

राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि संसार में जन्म लेना उतना महत्त्वपूर्ण नहीं है जितनी की मृत्यु है। मनुष्य दुनिया में आता-जाता रहता है, पर दुनिया में कुछ रहता है तो सिर्फ उसका व्यक्तित्व और कृतित्व। कुछ करने वाले ही याद किए जाते हैं। हमने जीवनभर क्या किया, उसकी जोड़ हम नहीं लगा सकते, दुनिया लगाती है। यह जोड़ भी बाजार में बाद में लगती है, श्मशान में पहले ही लगना शुरू हो जाती है। उज्जैनी के महाराजा विक्रमादित्य का चरित्र एक आदर्श है। वे अपने जीवन में ऐसा कर गए कि 2073 वर्ष बाद आज भी उन्हें याद किया जा रहा है।

राष्ट्रसंतश्री ने इन उद्गारों के साथ जयन्तसेन धाम में मंगलवार को उत्तराध्ययन सूत्र के बाद विक्रम चरित्र का वाचन शुरू किया। इससे पूर्व चातुर्मास आयोजक चेतन्य काश्यप परिवार की ओर से मातुश्री तेजकुंवर बाई काश्यप, चेतन्य काश्यप, नीता काश्यप तथा श्रवण काश्यप ने आचार्यश्री को विक्रम चरित्र अर्पित किया।

धर्मसभा में चातुर्मास आयोजक परिवार की ओर से श्रवण काश्यप ने तपस्वी रजत जैन और मातुश्री तेजकुंवरबाई काश्यप व नीता काश्यप ने तपस्वी बहन पल्लवी बोराणा का बहुमान किया। दादा गुरुदेव की आरती का लाभ बागरा श्रीसंघ (राजस्थान) ने लिया। इस मौके पर आचार्य पद्मसागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य पद्मरत्नसागरजी म.सा. का अहमदाबाद में देवलोक गमन होने पर राष्ट्रसंतश्री की निश्रा में श्रद्धांजलि स्वरूप नवकार मंत्र का स्मरण किया गया।

जयन्तसेन धाम में सैलाना रोड स्थित ऑरो आश्रम द्वारा संचालित श्री मातृविद्या मंदिर के विद्यार्थियों ने सुलोचना तंवर के मार्गदर्शन में राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के दर्शन-वंदन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। पूर्व कृषि राज्यमंत्री धूलजी चौधरी और तालनपुर तीर्थ में निर्माणाधीन जिनमंदिर के लाभार्थी टीकूभाई मोदी ने भी आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया।

लोकसंत की उपाधि से अलंकृत

कवर पृष्ठ 2 का शेष

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे सांसद, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भाजपा श्री विनय सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि क्षमा पर्व की अपनी अलग विशेषता है। सभ्य समाज की व्याख्या में भी क्षमा का समावेश है। आध्यात्म एक बहुत बड़ी चीज है, व्यापक दृष्टिकोण है। हम सभी अपनी प्रार्थनाओं में प्रतिदिन धरती माता, भगवान श्री गणेश आदि की वंदना में होने वाली गलतियों के लिए क्षमा मांगते हैं। क्षमापना पर्व आत्म परीक्षण का पर्व है। आपने कहा कि राष्ट्रसंत को 'लोकसंत' की उपाधि से सम्मानित करने का मौका मिला है।'लोक' का मतलब है जिन्होंने लोगों के दिलों में जगह बनाई है। आज तीन बातों के बारे में संकल्प करना चाहिए। राष्ट्र की क्षमा, समाज की क्षमा, लोगों के साथ ईमानदारी। कभी ऐसी स्थिति ना हो कि हमें अपने आप से क्षमा मांगना पड़े।

मन्दसौर सांसद श्री सुधीर गुप्ता ने क्षमा पर्व पर कहा कि ग्लोबलाइजेशन के इस दौर में सभी आगे बढ़ने की होड़ में लगे हैं ऐसे समय में क्षमा पर्व मनाना बड़ी बात है। क्षमा मन के भावों में ला सकें तो इस पर्व को मनाना सार्थक होगा। इस तरह से हम देश को नई दिशा की ओर ले जा सकते हैं, जहाँ अमन-शांति होगी। क्षमा पर्व को पर्वों में सबसे बड़ा पर्व बताते हुए उन्होंने उपस्थित श्रद्धालुओं से 'मिच्छामि दुक्कड़म' कहते हुए क्षमा मांगी। चातुर्मास आयोजक व राज्य योजना आयोग के उपाध्यक्ष विधायक श्री चेतन्य काश्यप ने स्वागत भाषण में कहा कि चातुर्मास में गुरु का आशीर्वाद हमें मिला है। भौतिक सुख जुटाना अलग बात है परन्तु गुरुभक्तों की भावना से जुड़ना यह अलग और बड़ी बात है। श्री जयन्तसेन धाम में दूर-दूर से लोग आचार्यश्री के दर्शन-वंदन को प्रतिदिन पहुँच रहे हैं। जैन दर्शन में क्षमा का बहुत बड़ा महत्व है। क्षमा पर्व पर प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में कम से कम एक व्यक्ति से अपना बैर खत्म करे। आचार्यों ने क्षमापर्व का महत्व बताते हुए सामूहिक समरसता का भाव पैदा किया है। श्री चेतन्य काश्यप ने अतिथियों का स्वागत कर उपस्थित श्रद्धालुओं से साल भर में जाने-अनजाने में हुई गलतियों के लिए क्षमायाचना की।

त्रिस्तुतिक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री वाघजी भाई वोरा ने अपने संबोधन में कहा कि चातुर्मास आयोजक एवं विधायक श्री चेतन्य काश्यप के प्रयासों से आज हम सभी यहाँ एकत्र हुए हैं। क्षमा पर्व के आयोजन में हम सबको यहाँ बोलने का एवं मिलने का अवसर मिला है। हर धर्म का मूल मंत्र है- 'जियो और जीने दो'। इस मंत्र को हमें जीवन में उतारना होगा। आचार्यश्री के सान्निध्य में चल रहे चातुर्मास के दौरान देशभर से गुरुभक्त आशीर्वाद लेने यहाँ पहुंच रहे हैं। यह आयोजन की बड़ी सफलता है।

कार्यक्रम के आरम्भ में चातुर्मास आयोजक परिवार की ओर से राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष श्री चेतन्य काश्यप, श्री सिद्धार्थ काश्यप, श्रवण काश्यप ने मंचासीन अतिथियों का शॉल व श्रीफल से स्वागत किया। त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री वाघजी भाई वोरा, रतलाम संघ अध्यक्ष डॉ. श्री ओ.सी.जैन आदि ने अतिथियों का

पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया। इसी तरह संयुक्त जैन समाज के प्रतिनिधियों ने राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष व चातुर्मास आयोजक श्री चेतन्य काश्यप का चातुर्मास के सफल आयोजन के लिए क्षमा पर्व पर आयोजित समारोह में शॉल श्रीफल भेंट कर बहुमान किया।

इस अवसर पर त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष वाघजी भाई वोरा, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के विभाग संचालक माधव काकानी, जिला प्रमुख वीरेन्द्र वाफगांवकर, भाजपा जिलाध्यक्ष बजरंग पुरोहित, महापौर डॉ. सुनीता यार्दे, जिला पंचायत अध्यक्ष परमेश मईडा, ग्रामीण विधायक मथुरालाल डामर, त्रिस्तुतिक जैन समाज के अध्यक्ष ओ.सी.जैन. रतलाम जैन श्रीसंघों के अध्यक्षगण भी मंचासीन थे। कार्यक्रम का संचालन अब्दुल सलाम खोकर ने किया।

कार्यक्रम के पश्चात् सकल जैन श्रीसंघ व आमंत्रितजनों का स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया।

मुम्बई से आए ऋषिकेश तम्बोलकर, शावेरी भट्टाचार्य ने स्वरों में सिद्धार्थ काश्यप का साथ दिया। वायलिन पर इकबाल, गिटार पर जंयती कौशल, तबले पर आशीष झा, ढोलक पर प्रतीक मेहता आदि ने संगत की। इस अवसर पर प्रस्तुत धार्मिक गीतों व भजनों में 'छब्बीस सौ वर्षों में ना कोई तुम सा आया है, तीर बिना, तलवार बिना जो महावीर कहलाया है...', ' कामनाएं मोक्ष की, भावनाएं भोग की, जिंदगी जंजाल है बस इस संजोग की....', ' हाथ जोड़ मिच्छामि दुक्कड़म हर प्राणी से कर ले...', ' सत्य अहिंसा के पथ पर चलकर जीवन अपना बनाना है, महावीर की वाणी को जन-जन तक पहुँचाना है' आदि की प्रस्तुति दी गई।

राष्ट्रसंतश्री को 'लोक संत' की उपाधि व प्रशस्ति पत्र भेंट

जयन्तसेन धाम में आयोजित कार्यक्रम में राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. को मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरकार्यवाह भैयाजी जोशी, कार्यक्रम के अध्यक्ष सांसद एवं भाजपा उपाध्यक्ष विनय सहस्त्रबुद्धे, विधायक एवं राज्य योजना आयोग उपाध्यक्ष चेतन्य काश्यप ने हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति में ' लोकसंत' की उपाधि से अलंकृत कर प्रशस्ति पत्र भेंट किया। प्रशस्ति पत्र का वाचन श्रीसंघ के राष्ट्रीय महामंत्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने किया।

अपने सम्मान के प्रत्युत्तर में आचार्यश्री जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. ने कहा कि आपने 'लोकसंत' की उपाधि से अलंकृत किया। इन भावनाओं को देखते हुए मुझे खुशी है। संत तो सबके होते हैं। आप रतलामवासियों ने मुझे अपना समझा और मैंने आपको अपना समझा। रतलाम में हर वर्ग ने प्रवेश अवसर पर मेरा स्वागत किया। आपकी भावना देखकर प्रसन्नता है। रतलाम के सभी समाज में एकता के साथ भक्ति का भाव हमेशा बना रहे।

आचार्यश्री ने कहा कि महावीर की वाणी को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें, क्योंकि महावीर ने जनकल्याण के साथ ही साथ प्राणीमात्र के कल्याण की

कामना की है। 'जियो और जीने दो' का संदेश दिया है। महावीर के संदेश को जीवन में उतारें तो हमारा चातुर्मास सार्थक होगा। आपने कहा कि यदि सुखमय जीवन चाहते हैं तो क्षमा देते चलो। क्षमा सिर्फ मांगने से काम नहीं चलेगा, क्षमा देनी भी पड़ती है, तभी समाज में शांति स्थापित होगी। जब तक क्रोध रहेगा, तब तक क्षमा मांगना निरर्थक रहेगा। क्रोध हमें पथ से विचलित कर देता है और अहंकार हमें क्षमा मांगने नहीं देता। मोह, माया, लोभ को छोड़कर हमें बैरभाव को खत्म करना है। महावीर की वाणी प्रत्येक प्राणी के हित में है इसलिए सभी से प्रेम से मिलो। आज क्षमापना पर सभी, सभी से क्षमायाचना करें।

कार्यक्रम के आरंभ में मुनि निपुणरत्न विजयजी म.सा. ने क्षमा पर प्रवचन देते हुए कहा कि क्रोध की स्थिति में व्यक्ति क्या बोलता है? उसे खुद भी पता नहीं चलता। इसलिए हमेशा अपने क्रोध पर काबू रखना चाहिए। सदा अपने अंदर क्षमा भाव धारण करना चाहिए। मुनिश्री ने कहा कि ' क्षमा, धर्म का सार है' यह प्रभु महावीर का वचन है। इन वचनों को हमें आत्मसात करना है। आपने कहा कि जीवन में सबसे सरल कार्य दूसरों को सलाह देना और सबसे कठिन कार्य अपनी गलती को स्वीकार करना है। क्षमा मांगना और क्षमा देना यही क्षमापना का सार है।

महासती प्रेक्षाजी म.सा. ने अपने प्रवचन में कहा कि जीवन में श्वांस लेना जितना जरूरी है, जीवन को सुखी बनाने के लिए उतना ही जरूरी है क्षमा को अन्तर में धारण करना। जो व्यक्ति क्षमा को धारण नहीं करता वह अपने सुख और शांति के साथ समझौता करता है। फिर छोटी सी जिंदगानी में तकरार किसलिए? दो दिलों के बीच यह दीवार किसलिए। संसार का सबसे बड़ा धर्म क्षमा है। क्षमा का महत्व भगवान महावीर, यीशु ने बताया, महाभारत, रामायण, कुरान में भी बताया गया है।

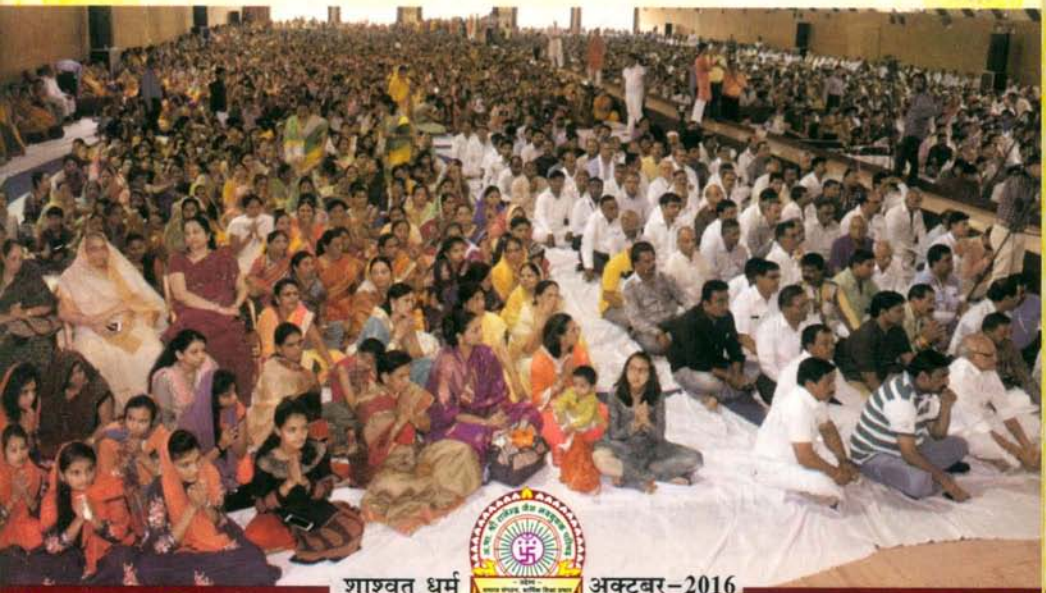

प्रवचन

दुःख का मूल : मोह (3)

(गतांक से आगे)

सुविशाल गच्छाधिपति युग प्रभावक लोकसंत
जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

योगबल से ध्यान में आया कि जीवाभाई किसी अन्न के गोदाम में बिल्ली बने हुए हैं। नारदजी वहीं जा पहुँचे। बिल्ली ने कहा- 'इस गोदाम की रक्षा का भार मेरे सिर पर है, इसलिए जब तक यह सारा अनाज बिक नहीं जाता, तब तक चूहों से इसकी रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है। आप मुझे एक वर्ष का अवसर दीजिए। इसके बाद मैं कोई नई जिम्मेदारी अपने सिर पर नहीं लूँगा।

नारदजी वहाँ से चले गए और गोदाम खाली होने की बात मालूम होते ही पुनः लौट आए। इधर - उधर पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि अनाज से भरी हुई एक बोरी शरीर पर गिर जाने से बिल्ली ने प्राण त्याग दिए थे।

दिव्यदृष्टि से नारदजी को मालूम हुआ कि वे किसी गटर के पास सूअर के रूप में उत्पन्न हुए हैं। नारदजी वहाँ भी चले गए, क्योंकि वे उत्तम पुरुष थे।

आरभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, आरभ्य विघ्नविहता विरमन्तिमध्यः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति।।

विघ्नों के डर से कार्य प्रारम्भ ही नहीं करते, वे नीच (अधर्म) श्रेणी के व्यक्ति होते हैं। जो प्रारम्भ तो कर देते हैं, परन्तु विघ्नों से घबराकर बीच में ही उस कार्य को छोड़ देते हैं, वे मध्यम श्रेणी के व्यक्ति होते हैं और बार-बार विघ्नों से प्रताड़ित होने पर भी प्रारब्ध कार्य को जो अन्त तक निभाते हैं, जब तक सफलता प्राप्त न हो जाए, तब तक निरन्तर करते रहते हैं, वे उत्तम श्रेणी के व्यक्ति माने जाते हैं।

सूअर का शरीर धारण किए हुए जीवाभाई ने जब नारदजी को अपने सामने देखा तो बोल उठे- 'अरे ! आप तो यहाँ भी आ पहुँचे। कहिए, मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?'

नारदजी ने कहा- 'आपने मुझसे वैकुण्ठ ले चलने की प्रार्थना की थी और मैंने इसमें आपकी सहायता करने का वचन दिया था। उसी वचन का पालन

करने के लिए और आपकी अभिलाषा पूरी करने के लिए मैं यहाँ आया हूँ। अब चलिए भी।'

सूअर पहले तो हँसा और फिर थोड़ी गम्भीरता से पूछने लगा- 'मुझे इस गन्दे जल की गटर में जो शान्ति मिलती है, वह भला और कहीं कैसे मिल सकती है ? जिस वैकुण्ठ में आप मुझे ले जाना चाहते हैं, वहाँ क्या ऐसे कोई गटर हैं ? यदि नहीं हैं तो मुझे क्षमा करें। मैं ऐसे वैकुण्ठ में नहीं आना चाहता।'

नारदजी अब क्या करते ? वे निराश होकर लौट गए। कहानी कल्पित है,परन्तु यह इस बात को भली-भाँति स्पष्ट करने में समर्थ है कि जीव में जब तक सांसारिक वस्तुओं के प्रति राग मौजूद है, तब तक उसका उद्धार नहीं हो सकता।

राजस्थानी भाषा में कहते हैं- 'या केवारी वात है, लेवारी नीं।' कथनी और करनी का यह अन्तर ममता से ही पैदा होता है।

सम्यग् ज्ञान, सम्यग्दर्शन और सम्यक् चारित्र को 'रत्नत्रय' कहा जाता है। इसे अपनाने की इच्छा किसमें नहीं होती ? सब में होती है, परन्तु अपनाने का साहस करोड़ों में से किसी एक को बड़ी मुश्किल से ही हो पाता है।

मुल्ला नसरुद्दीन तैरना नहीं जानते थे। दूसरों को तैरते हुए देखकर उनके मन में भी तैरने की अभिलाषा जागृत हुई, परन्तु केवल अभिलाषा से तो कुछ नहीं हो सकता न ? प्रयास भी करना जरूरी होता है।

घर से निकलकर मुल्लाजी तालाब के किनारे जा पहुँचे। कपड़े उतारकर ज्यों ही उन्होंने तालाब के जल में पाँव रखा,त्यों ही फिसलकर दो-तीन गुलाँट खा गए। उनका पाँव ऐसे पत्थर पर पड़ा, जिस पर काई जमी हुई थी। किसी तरह सँभलकर वे तालाब के जल से बाहर निकल आए और बोल उठे- 'कसम खुदा की। अब जब तक मैं तैरना पूरी तरह सीख न लूँ, तब तक तालाब के जल में पैर न रक्खूँगा।'

तब से अब तक मुल्लाजी के अनेक जन्म हो चुके हैं, परन्तु वे तैरना सीख ही न सके और यदि अपनी प्रतिज्ञा का ईमानदारी से पालन करते रहे तो वे किसी भी जीवन में तैरना कभी सीख ही नहीं पाएँगे। तैरना सीखने के लिए तैरना जाने बिना ही तालाब में उतरने का साहस जरूरी है। हिम्मत की कीमत होती है। साहसी के सामने ही सफलता के द्वार खुलते हैं।

साहसी जीवन का सदुपयोग करता है। जीवन है ही सदुपयोग के लिए, बचा-बचाकर रखने के लिए नहीं। अपने जीवन की एक घटना सुनाते हुए मुल्ला नसरुद्दीन मित्रों से कह रहे थे- 'जब मैं गधे पर सवार होकर सुदूर जंगल में जा निकला तो

वहाँ कुछ डाकुओं ने बन्दूक के बल पर जान लेने की धमकी देकर मेरे सारे रुपये, घड़ी और गधा तक छीन लिया और फिर वहाँ से नौ-दो ग्यारह हो गए।

एक मित्र ने कहा- 'लेकिन दोस्त ! तुम्हारी जेब में एक पिस्तौल भी तो थी ?'

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया - 'जी हाँ , थी अवश्य थी, लेकिन उस पर डाकुओं की नजर ही नहीं पड़ी।'

पिस्तौल की तरह जीवन भी बचाकर रखने के लिए नहीं, उपयोग के लिए है, ममता का त्याग करके समता को अपनाने के लिए है, निर्मोही बनने के लिए है, वीतरागी होने के लिए है।

संतों के संग

साधु संतों के
व्याख्यान सुन
चिंतलाय
मन-वचन
काम से
शुद्ध भाव हिये लाय
हे मनुज
सांसारिक कार्यों का
आकर्षण छोड़
मनुष्य जीवन मिला है
कुछ समय संतों के संग
चातुर्मास में
धर्म कार्य से जोड़
परमात्मा बनने की
इस जन्म में मिली
संभावना को
जप-तप-आराधना से जोड़

- सायरा उगमजी लालवानी बैंगलोर

श्री काश्यपजी को बधाई

महिदपुर । अ.भा. त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ व अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के मार्गदर्शन व चिन्तक रतलाम के विधायक चेतनजी काश्यप को म.प्र. शासन द्वारा योजना आयोग का उपाध्यक्ष मनोनीत किये जाने पर परिषद के राष्ट्रीय सदस्य नरेन्द्र धाड़ीवाल ने हार्दिक बधाई व शुभकामनाएँ स्पष्ट करते हुए कहा कि आपके कुशल नेतृत्व व चिंतन से गांव से लेकर शहर व प्रदेश का समग्र विकास होगा तथा प्रदेश किसान की नई ऊंचाईयों पर पहुंचेगा।

गणधरवाद

सुविशाल गच्छाधिपति लोकसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.
प्रवचनकार

अग्निभूति – दानादि क्रिया के कर्ता को भले ही अदृष्ट फल प्राप्त हो, क्योंकि वह वैसा फल चाहता है। किन्तु जो कृषि आदि क्रिया करते हैं, वे तो दृष्ट फल की ही आकांक्षा रखते हैं। अतः उनको भी अदृष्ट कर्म रूप फल क्यों प्राप्त होता है ?

महावीर – तुम्हारी यह आशंका ही अयोग्य है, क्योंकि कार्य का आधार उसकी साधन सामग्री पर अवलंबित है। मनुष्य की इच्छा हो या न हो किन्तु कार्य साधक सामग्री के होने पर वह कार्य उत्पन्न होता ही है। किसान अनजाने में भी यदि गेहूं के बदले कोद्रव बोये और उसे अनुकूल हवा पानी आदि सामग्री मिली, तो किसान की इच्छा हो या न हो लेकिन कोद्रव धान तो उत्पन्न होगा ही । इसी प्रकार हिंसादि कार्य करने वाला मांस भक्षक चाहे या न चाहे किन्तु अधर्म रूप अदृष्ट कर्म उत्पन्न होता ही है। तथा दानादि क्रिया करने वाले विवेकी पुरुष यद्यपि उसके फल की इच्छा नहीं करते किन्तु सामग्री होने से उनको धर्म रूप फल प्राप्त हो ही जाता है।

अतएव यह मानना चाहिए कि शुभ या अशुभ सभी क्रियाओं का, अदृष्ट शुभ या अशुभ फल होता है अन्यथा इस संसार में अनन्त संसारी जीवों की सत्ता संभव नहीं है। क्योंकि यदि अदृष्ट कर्म न हो तो बिना प्रयत्न के ही सभी पापी मुक्त हो जायेंगे और उस स्थिति में मृत्यु के पश्चात संसार का कारण अनिच्छित कर्म उनके रहेगा ही नहीं। परन्तु जो लोग अदृष्ट शुभ कर्म के लिए दान आदि क्रिया करते होंगे उनके लिए यह क्लेश बहुल संसार शेष रह जायेगा।

क्योंकि जिन्होंने दानादि शुभ क्रिया अदृष्ट के लिए की, उनको कर्म का बंध होगा और उसे भोगने के लिए वे नया जन्म धारण करेंगे और वहाँ पुनः वे कर्म विपाक का अनुभव करते हुए दान आदि क्रिया

करेंगे और उससे वे पुनः नये जन्म की सामग्री संचित करेंगे। इस प्रकार तुम्हारे अभिप्रायानुसार धार्मिक लोगों के लिए संसार और अधार्मिकों के लिए मोक्ष ऐसी विसंगति हो जायेगी।

अग्निभूति– इसमें असंगति जैसी क्या है ? अदृष्ट के लिए धार्मिक लोगों ने प्रयत्न किया और उससे उन्हें वह मिला और उनके संसार की वृद्धि हुई तथा हिंसा आदि अशुभ क्रिया करने वालों को तो इष्ट फल मांस आदि की ही आकांक्षा थी, जिससे उन्हें वह प्राप्त हो गया। तो फिर उनकी संसार वृद्धि क्यों हो ?

महावीर– असंगत क्यों नहीं ? यदि हिंसा आदि क्रिया करने वाले सभी मुक्त हो जायें, मोक्ष में चले जायें तो फिर इस संसार में हिंसा आदि क्रिया करने वाला कोई रहेगा ही नहीं और न हिंसा आदि क्रिया का फल भोगने वाला भी। परन्तु मात्र दान आदि शुभ क्रिया करने वाले और उसका फल भोगने वाले ही संसार में रहेंगे। परन्तु संसार में ऐसा दिखायी तो नहीं देता। धार्मिक-अधार्मिक दोनों प्रकार के जीव दृष्टिगोचर होते हैं, जिनमें अशुभ क्रिया करने वालों की अधिकता है और शुभ क्रिया करने वालों की स्वल्पता।

अनिष्ट अदृष्ट फल प्राप्ति की इच्छापूर्वक तो कोई भी जीव किसी भी क्रिया को करता नहीं हैं, किन्तु इस संसार में अनिष्ट फल भोगने वाले बहुसंख्यक जीव दिखायी पड़ते हैं। इससे मानना चाहिए कि क्रिया मात्र का तो अदृष्ट फल तो होता ही है। अर्थात शुभ या अशुभ सभी क्रियाओं का फल अदृष्ट कर्म अवश्य होता है। इससे विपरीत दृष्ट फल की इच्छा करने पर भी क्रिया का दृष्ट फल प्राप्त ही हो ऐसा एकान्त नहीं है। क्योंकि वैसा होने का कारण भी पूर्व बद्ध अदृष्ट कर्म ही होता है। सारांश यह है कि दृष्ट फल धान्यादि के लिए कृषि आदि करने पर भी पूर्व कर्म के कारण धान्य आदि दृष्ट फल किसी को प्राप्त हो भी और किसी को न भी हो, परन्तु अदृष्ट कर्म रूप फल तो अवश्य ही प्राप्त होने वाला है। क्योंकि चेतन द्वारा कृत कोई भी क्रिया निष्फल नहीं होती ।

अथवा यह समग्र चर्चा अनावश्यक है, क्योंकि तुल्य साधन होने पर भी फल की विशेषता के कारण कर्म की सिद्धि पूर्व में की जा चुकी है। और वहाँ यह बताया गया है कि फल विशेष कार्य होने से उसका कारण अदृष्ट कर्म होना चाहिये। जैसे कि घट का कारण परमाणु है। प्रस्तुत अनुमान में भी पुनः यही कर्म की सिद्धि की गयी है कि सचेतन क्रिया का कोई अदृष्ट कर्म रूप फल होना चाहिए, जो उस क्रिया से भिन्न होता है। क्योंकि कार्य कारण में भेद होता है। यहाँ क्रिया यह कारण है और कर्म यह कार्य है।

(क्रमशः)

इसलिए इन दोनों को भिन्न होना चाहिए।

अदृष्ट होने पर भी कर्म मूर्त है

अग्निभूति– यदि कार्य होने से कारण की सिद्धि होती है तो शरीरादि कार्य के मूर्त होने से उसका कारण भी मूर्त होना चाहिए।

महावीर– मैंने कब कहा है कि कर्म अमूर्त है ? मैं तो कर्म को मूर्त ही मानता हूँ। क्योंकि उसका कार्य मूर्त है। जैसे कि परमाणु का कार्य घट मूर्त होने से परमाणु भी मूर्त है, उसका कारण भी उपादान कारण आत्मा है।

अग्निभूति– सुख-दुख यों कर्म के कार्य हैं और वे अमूर्त हैं, अतः कर्म को भी अमूर्त मानना चाहिए। परन्तु ऐसा मानने पर तो कर्म मूर्त और अमूर्त सिद्ध होगा जो संभव नहीं है क्योंकि उसमें विरोध है। जो मूर्त है वह अमूर्त नहीं होता और जो अमूर्त है वह मूर्त नहीं होता।

महावीर– आयुष्मन ! जब मैं यह कहता हूँ कि मूर्त कार्य का कारण मूर्त और अमूर्त कार्य का कारण अमूर्त होना चाहिए, तब उसका अर्थ यह है कि वह कारण समवायी कारण अर्थात उपादान कारण समझना चाहिए, दूसरा नहीं। (क्रमशः)

तप महिमा

- भगवान आदिनाथ ने 13 महीने 10 दिन के उपवास किये थे।
- नंदन मुनि ने (भ. महावीर का पूर्वभव) 11, 80, 645 मासक्षमण किये थे।
- बाहुबलीजी ने एक वर्ष तक चउविहार उपवास किये थे।
- श्री वज्रायुद्ध चक्रवर्ती ने मुनिपने (भ. शांतीनाथ का पूर्वभव) एक वर्ष के चउविहार उपवास किये थे।
- महासती सुंदरी ने 2 करोड़, 19 लाख, 60 हजार आयंबिल किये थे। (60, 000 वर्ष)
- जगच्चन्द्रसूरीजी 12 वर्ष 6 महीने तक अखंड आयंबिल किये थे।
- श्री चन्द्रकेवली ने उत्कृष्ट वर्धमान तप की आराधना की थी।
- सनत् कुमार चक्रवर्ती ने मुनिपने में 700 वर्ष का घोर वीर तप किया था।
- विष्णु कुमार मुनि ने 6 हजार वर्ष तक तप किया था।
- नंदिषेण मुनि ने 54 हजार वर्ष तक छट्ठ के पारणे छट्ठ किये थे।

लेखांक 38

स्वर्णप्रभा

सुविशाल गच्छाधिपति लोकसंत जैनाचार्य
श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा.

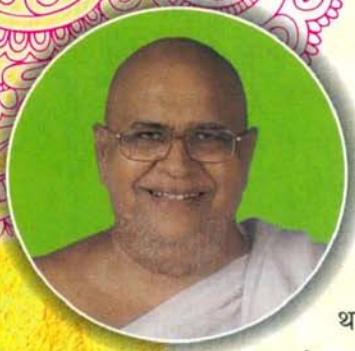

अमरचंद ने अपनी समस्या के लिए उस परिवार के लड़के को पहले देख लेना उचित समझा। उसका उद्देश्य यह था कि यदि लड़का अच्छा हुआ तो सम्बन्ध कर दिया जावेगा। परिवार वालों के साथ वर्षों पहले कभी कोई विवाद हुआ था और उसके कारण ही अमरचंद और उसका परिवार उस परिवार से अपना किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं रखता था, किन्तु अब, जब घर पर समस्या खड़ी घर में कलह घोल रही है तो, उस समस्या के समाधान के लिये वह इस परिवार के साथ अपनी पुत्री का सम्बन्ध करने के लिए सहमत हो गया। वह किसी बहाने उस नगर में गया। अपने एक परिचित के माध्यम से उस परिवार के उस लड़के को अन्यत्र बुलवाकर देखा। वह लड़का उसे अपनी पुत्री के अनुकूल नहीं लगा, फिर वह आयु में भी कुछ कम ही था। अपनी पुत्री में भले ही दोष है, किन्तु उसे कुएं में तो धकेला नहीं जा सकता। यही विचार कर उसने यहाँ सम्बन्ध करने का विचार त्यागा और अपने घर आ गया।

जब घर में युवा पुत्री हो और उसका वैवाहिक सम्बन्ध कहीं पर भी जम नहीं पा रहा हो तो माता-पिता की नींद उड़ जाती है। उनका चैन छिन जाता है। वे दिन-रात चिंता में डूबे रहते हैं। यहाँ तक कि उनकी भूख-प्यास भी लगभग समाप्त हो जाती है। लगभग यही हाल इन दिनों अमरचंद और उनकी पत्नी का था। उनकी पुत्री शारीरिक रूप से हर किसी युवक को आकर्षित करने की क्षमता रखती है। वह स्वस्थ भी है, किन्तु उसका स्वभाव उसके शारीरिक सौन्दर्य और यौवन के गुणों पर पानी फेर देता था। अब तो स्थिति यहाँ तक आ पहुंची थी कि आसपास के ग्राम नगर के उसके स्वजाति बंधु तो अमरचंद और उसकी पुत्री के सम्बन्ध में कोई बात करना भी पसंद नहीं करते थे। अमरचंद को अपनी पुत्री का विवाह होना असंभव

प्रतीत हो रहा था। उधर पुत्री फूलकुंवर के स्वभाव में और भी तीखापन आता जा रहा था। वह दिन रात ठाकुरजी की कृपा में रहती और परिवार के सदस्यों को जो भी मन में आता, कह दिया करती। साथ में यह भी कहती- 'तुम में से कोई भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ठाकुरजी की मुझ पर पूरी-पूरी कृपा है। ठाकुरजी की कृपा से ही तुम्हारा सबका अस्तित्व है। तुम सब मेरा आदेश मानो। यदि मेरे आदेश का पालन नहीं किया गया तो ठाकुरजी रूष्ट हो जावेंगे और सबको नष्ट कर देंगे।' वह केवल अपने माता-पिता का अवश्य कुछ सम्मान करती थी। उनके सामने वह अधिक नहीं बोलती थी, किन्तु विरोध तो वह अपने माता-पिता का भी करती रहती थी।

समय अपनी गति से बीतता चला जा रहा था। अमरचंद के प्रयास अपनी गति से चल रहे थे। इसी अवधि में कुछ अन्य कारणों से कुछ अतिथियों का आगमन भी हुआ। फूलकुंवर ने किसी न किसी बात को लेकर उनको भी प्रताड़ित किया। अतिथियों ने इसे अपना अपमान माना और अमरचंद को भला-बुरा भी कहा। इन अतिथियों में एक अतिथि ऐसा भी था जो सब कुछ समभाव से ग्रहण कर रहा था। उसने अमरचंद से कहा- 'बुरा न मानें। आपकी पुत्री लाड़-प्यार में पली है, इसलिये उसका स्वभाव ही ऐसा हो गया है। इसमें गलती आपकी ही है। अब आपकी पुत्री को सही मार्ग पर लाने के लिये एक मनोवैज्ञानिक की आवश्यकता है। वही इसे ठीक कर सकता है। साथ ही मेरा एक आग्रह और यह है कि हो सके तो आप इसका विवाह शीघ्रतीशीघ्र कर दें। हो सकता है, नये घर में जाने से इसके स्वभाव में परिवर्तन आ जावे।

'आप जो कुछ कह रहे हैं, सभी सत्य है । इसमें बुरा मानने जैसा कुछ भी नहीं है। मैं तो आप सबके सम्मुख बहुत ही लज्जित हूँ। अपनी पुत्री के द्वारा जो कुछ भी किया गया, उसके लिये मैं आपसे क्षमा चाहता हूँ। मैं यह भी चाहता हूँ कि कृपया इसके लिये आप कुछ उपाय बताकर हो सके तो उसके लिये उचित व्यवस्था करने की कृपा करें।' अमरचंद ने सविनय कहा।

'अमरचंदजी ! आपकी पुत्री सभी प्रकार से योग्य है। वह उत्तम गृहणी बन सकती है, बशर्ते उसका स्वभाव सामान्य और विनम्र हो

जावे। उसे किसी प्रकार से समझाने का प्रयास करें। आपकी पुत्री के लिये योग्य वर की जानकारी मिलने पर हम आपको अवश्य ही सूचित करेंगे। हम आपके दुःख को समझ सकते हैं।' एक, दूसरे अतिथि ने कहा।

'सब आपकी कृपा है । आप जैसे सज्जनों के सहयोग से यदि फूलकुंवर का विवाह हो जाता है तो मेरी समस्या का समाधान हो जावेगा। ' अमरचंद ने कहा।

'विश्वास रखो । परमात्मा सब कुछ ठीक करेंगे। प्रत्येक कार्य का समय निश्चित होता है। आपकी पुत्री के विवाह का समय भी निश्चित ही होगा और समय पर सब कुछ ठीक हो जावेगा।' अतिथि ने कहा।

इस वार्तालाप के पश्चात् सभी अतिथि वहाँ से चले गए। अतिथियों के आश्वासन से अमरचंद को बहुत शांति मिली। उसे लगा कि अभी भी कुछ लोग तो ऐसे हैं, जो दूसरों के प्रति सहानुभूति रखते हैं। वह अब कुछ आश्वस्त था। उसने अपनी पुत्री के विवाह के लिये पुनः प्रयास शुरू कर दिये। इस बार उसने दूरस्थ क्षेत्रों के अपने परिचित स्वजातीय बन्धुओं से सम्पर्क कर अपनी पुत्री की वय आदि जानकारी देते हुए उसके लिये योग्य वर की मांग की थी। इधर अमरचंद अपने प्रयास में लगा हुआ था और उधर घर में भाई-भौजाई किसी प्रकार फूलकुंवर को सदैव प्रसन्नचित रखने और जैसे-तैसे उसका विवाह हो जाए, इसके लिये प्रयत्नशील थे। (क्रमशः)

* क्षमा करने की कला सीखें । जो क्षमा करना जानते हैं, वे हमेशा खुश रहते हैं, क्योंकि वे तनाव को लादे नहीं रहते।
* जीवन में कुछ मौलिक अनुशासन लायें आसक्ति से दूर रहें।
* प्रार्थना के लिए कुछ समय अवश्य बचाकर रखें ।
* कभी-कभी लंबे अवकाश पर जायें, प्रकृति के करीब ।
* अतीत की चिंता नहीं, भविष्य का भरोसा नहीं, वर्तमान को व्यर्थ न जाने दें, सदा मुस्कुराते रहें ।

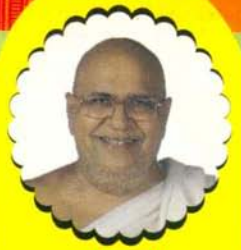

उत्तरदाता

प्रश्नोत्तरी

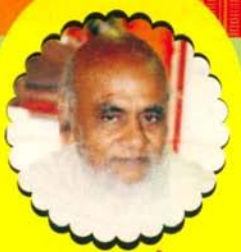

प्रश्नकर्त्ता

पू. श्रीमद् विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.

पू. मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

प्र. जाति नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से आत्मा एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पञ्चेन्द्रिय कही जावे उसे जाति नामकर्म कहते हैं।

प्र. शरीर नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से शरीर बने उसे शरीर नामकर्म कहते हैं।

प्र. शरीर के कितने भेद हैं ?

उ. शरीर के पाँच भेद हैं- 1. औदारिक 2. वैक्रिय 3. आहारक, 4. तैजस और 5. कार्मण।

प्र. औदारिक शरीर किसे कहते हैं ?

उ. उदार प्रधान अर्थात् जो प्राप्ति में साधन हो अथवा जो मांस अस्थि आदि से बना हुआ हो, उसे औदारिक शरीर कहते हैं।

प्र वैक्रिय शरीर किसे कहते हैं ?

उ. एक से अनेक और विचित्र-विचित्र रूप जिसके बन सकें उसे वैक्रिय शरीर कहते हैं।

प्र. आहारक शरीर किसे कहते हैं ?

उ. प्राणिदया, तीर्थङ्करों की ऋद्धि को देखना, सूक्ष्म पदार्थ को जानना, संशय छेदन करना इत्यादि कारण उत्पन्न होने पर चौदह पूर्वधारी मुनिराज लब्धि विशेष से जो शरीर बनाते हैं उसे आहारक शरीर कहते हैं।

प्र. तैजस् शरीर किसे कहते हैं ?

उ. तैजस पुद्गलों से बना हुआ आहार को पचाने वाला और तेजो लेश्या का साधक शरीर तैजस शरीर कहलाता है।

प्र. कार्मण शरीर किसे कहते हैं।

उ. ज्ञानावरणीय आदि कर्मों की वर्गणा में विभक्त कार्मणवर्गणा से बना हुआ शरीर कार्मण शरीर कहलाता है।

प्र. अंगोपांग नामकर्म किसे कहते हैं ?

उ. जिस कर्म के उदय से अंग (1 सिर, 2 पैर, 2 हाथ, 1 छाती, 1 पीठ, 1 पेट ये 8 (अंग) और उपांग (अंगुली, नाक, कान आदि) बने उसे अंगोपांग नामकर्म कहते हैं। एक-एक अंग के अनेक उपांग होते हैं। जैसे सिर के उपांग-नाक, कान इत्यादि हैं।

सांवत्सरिक क्षमायाचना सभी से

वाघजीभाई वोरा
राष्ट्रीय अध्यक्ष
श्रीसंघ

श्री पर्यूषण पर्व की साधना त्याग, धर्मक्रिया, तप तथा आत्म विशुद्धि का अनुपम त्यौहार है। इसकी धार्मिकता हमें तन-मन से पवित्र बनाती है। श्रावक इन प्रसंग पर विचारों तथा मन की परिणतियों से भी पवित्र रहने का प्रयास करता है। अट्ठारह पाप स्थानकों से बचकर वह दिनचर्या पूर्ण करने के प्रयास में रहता है। इस पर्व या उससे पहले या उपरान्त दीर्घ तपस्याएँ भी होती हैं, जिनके अनुमोदन में बहुमान के आयोजन होते हैं। तप की उत्कृष्टता को जैन संस्कृति ने भली भांति स्थापित किया है क्योंकि यह संवर तथा निर्जरा का मार्ग है। व्यक्ति को जीवन में बंध तथा आश्रव से दूर रहने एवं संवर एवं निर्जरा को अपनाने में संरत रहना चाहिए। पर्यूषण दिनों में यदि हमारे यहाँ चातुर्मास हो तो पूज्य साधुगण या साध्वीगणों से उपदेशामृत का लाभ लेते हैं। उनके उपदेश हमारे जीवन को आत्मकल्याण की सही दैनन्दिनी को अपनाने की ओर प्रेरित करते हैं। श्री पर्यूषण पर्व को जैन संस्कृति ने सर्वोच्च शिखर सा उन्नत पर्व मान्य किया है। श्री पर्यूषण पर्व की आराधना के दिनों में भी जो आरम्भ-समारम्भ के पाप कार्यों में जुटे रहते हैं, वे अपना जीवन निरर्थक ही करते हैं।

श्री पर्यूषण पर्व के आठ दिनों में त्याग, अनासक्त, विरति भाव से आराधना कर अंतिम दिन संवत्सरी महापर्व को श्री सांवत्सरिक प्रतिक्रमण करते हुए हम चौरासी लाख जीवयोनियों प्राणियों से अपनी ओर से मन वचन कर्म के समुच्चय के साथ क्षमायाचना करते हैं। यह क्षमायाचना हमारे भावों को निर्मल बनाती है तथा सच्ची क्षमापना होने पर हमें नया जीवन देती है। हमारा पूरा जीवन क्रोध की विकृति से परिपूर्ण है। क्रोध हमारे आत्मविकास का सबसे घातक शत्रु है। मानसिक दृष्टि से यह हमें क्षुब्ध करता ही है, साथ ही शारीरिक दृष्टि से भी हमारी ऊर्जा का सर्वनाश कर देता है। जो क्रोध को अपने स्वभाव से बाँधे रखता है, वह सदैन अशांत व अस्थिर रहता है। ज्ञानियों ने क्रोध से मुक्त होने का उपदेश दिया है। क्रोध से दूर या अलग होना ही क्षमापना है, जिसे पर्यूषण पर्व ने अपनी सार्थकता का मंगल मंत्र माना है।

मुझे विभिन्न संस्थाओं में सक्रिय कार्य करते रहने के कारण पू. आचार्यदेव श्री, पू. मुनि तथा साध्वी मंडल व आप सभी के सम्पर्क में आना रहता है। इस समय मेरे व्यवहार में अविनय, अविवेक या अव्यवहार होना मेरी मानसिक कमजोरी है। मैं पर्यूषण पर्व अवसर में क्षमा पर्व पर अपने अपराध या अविवेकी व्यवहार के लिए मन, वचन, कर्म से हार्दिक क्षमायाचना करता हूँ।

जय जिनेन्द्र! जय राजेन्द्र! जय जयन्त्!

– वाघजीभाई वोरा

धार्मिक शिक्षा प्रचार को प्रबल बनाएं

रमेशभाई धरू
राष्ट्रीय अध्यक्ष
नवयुवक परिषद

तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समय से इतिहास के पृष्ठों पर अब छब्बीस सौ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। उनका युग भी वैसे भारत/आर्यावर्त में धार्मिक क्रांति का ही था। जनकल्याण के उद्देश्य से एक से अधिक चिंतक अपने ज्ञान का प्रकाश फैलाने के लिए आत्म प्रेरित, संकल्पित और सक्रिय थे। सभी के अनुयायी थे।

लेकिन आज तीर्थंकर महावीर स्वामी का जैन धर्म ही फलती-फूलती स्थिति में है। हालांकि जैन धर्म के अनुयायियों की संख्या एकदम कम हो रही है। कुछ शताब्दी पूर्व तक भारत में जैन अनुयायी जितने करोड़ की संख्या में थे, आज उतनी गणना लाख में भी करना कठिन हो गई है। बौद्ध धर्म के अस्तित्व तथा महात्मा गौतम बुद्ध का नाम भी लिया जाता है, लेकिन उस धर्म का ठोस स्वरूप नहीं है। विदेशों में भी कई बौद्ध देश हैं जो धार्मिक दृष्टि से नाम मात्र के हैं।

इतने अंतराल के पश्चात् भी जैन धर्म की अनुयायियों की संख्या से चाहे न्यूनता दर्शित होती हो, लेकिन प्रभाव की दृष्टि से कहीं न्यूनता नहीं आई है। इसका कारण इसकी शिक्षाओं, ग्रंथों तथा सूत्रों का जीवन्त रहना है। आज भी इस वातावरण में जबकि व्यावहारिक शिक्षा के नाम पर नई शाखाओं तथा विज्ञान व तकनीक के विस्तार ने छात्र वर्ग को पूरी तरह तनाव में घेर रखा है, एक जैन बालक का धार्मिक ज्ञान प्रबल है तथा उसकी आस्था प्रगाढ़ है। इसका कारण हमारे परिवारों में बच्चों (छात्र-छात्रा दोनों) को धार्मिक ज्ञान प्रारंभ से ही दिया जाना है। उसका छोटी उम्र से ही पाठशालों में लगातार जाते रहना, हमारी धार्मिक पुस्तकों का प्रत्येक घर में होना, उनसे सूत्रों की रटन्त करवाई जाना, माता द्वारा धार्मिक सूत्र याद करने पर जोर देते रहना जारी रहता है। यदि यह स्थिति कमजोर पड़ती है तो भविष्य की अगली पीढ़ी धार्मिक क्षेत्र में/जीवन में संस्कारों की दृष्टि से नाम मात्र ही रह जाएगी।

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के चार दिव्य उद्देश्यों में एक प्रमुख उद्देश्य धार्मिक शिक्षा का प्रसार भी है। परिषद् के प्राण लोकसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. हमेशा धार्मिक शिक्षा के प्रसार पर बल देते रहे हैं। पूर्व में भी धार्मिक शिविरों, धार्मिक संस्कार ज्ञानायतनों के माध्यम के साथ श्री यतीन्द्रजयंत ज्ञानपीठ के द्वारा छात्रों को धार्मिक शिक्षण से बराबर जोड़ा जाता रहा है। परिषद् की शाखाओं तथा परिषदजनों का कर्त्तव्य है कि वे धार्मिक शिक्षा प्रचार की दिशा में सक्रिय रहकर सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने का प्रयास करें।

– रमेशभाई धरु

वैवाहिक महिला संगीत का विरोध

जीवन में संगीत का अपना स्थान तथा महत्व है। धार्मिक दृष्टि से मंदिरों या धर्मस्थलों पर भक्ति-संगीत, कीर्तन, चौवीसी काफी प्रचलित हैं । मीराबाई भक्ति में बावली बनकर हर क्षण संगीत की धुन को जीवन में अपनाए हुए थीं। धार्मिक प्रसंगों के अतिरिक्त भी जीवन के लगभग सभी आयामों में संगीत को मानव अपनाये हुए है। पुरुष वर्ग इतना संलग्न नहीं है लेकिन महिला वर्ग तो विशेषज्ञता प्राप्त करने तक प्रयत्नशील रहती हैं। होली से लेकर दीपावली तक के त्यौहारों पर महिला संगीत बराबर आयोजित होता है। यह आवश्यक नहीं कि वाद्य यंत्रों से संगति बिठाकर जो सस्वर पाठ होता है, वहीं संगीत है। गाना पुरुष हो या महिला प्रत्येक जीव की स्वाभाविक आदत में है। वह जहाँ भी तनाव तथा कार्यों से मुक्त होता है, गुनगुनाने लगता है। गुनगुनाने से लेकर उच्च स्वर में कंठ के स्वर का प्रदर्शन संगीत ही है।

वैसे तो प्रत्येक प्रसंग पर महिलाओं का संगीत पर्याप्त लोकप्रिय है । महिलाएँ स्वयं संगीत की शौकीन होती हैं। लेकिन वैवाहिक अवसरों पर संगीत को विवाह के मुख्य कार्यक्रम से भी अधिक सेलीब्रेटी बना दिया गया है । विवाह पर गीत गाने या संगीत के स्वरों के साथ पास पड़ौस सम्बन्धियों या मेहमान महिलाओं को एकत्र कर जश्न मनाने की प्रवृत्ति शताब्दियों से है। यह बात अलग है कि इनके स्वरूप में परिवर्तन आ गया है। वर्तमान में विवाहों में आयोजित महिला-संगीत विकृतियों के घर बन गये हैं तथा सभ्यता इनका साथ छोड़ती चली जा रही हैं । जैन पत्र-पत्रिकाओं में जैन समाज में महिला संगीत के बढ़ रहे अपवित्र स्वरूप की तीखी आलोचना हो रही है। कुछ स्थानों

पर सामाजिक निर्णय करते हुए विवाह अवसरों पर महिला-संगीत बंद करने का कदम उठाया गया है । हम आज इस निर्णय के कार्यान्वयन स्थिति अथवा परिणाम की भविष्यवाणी नहीं कर सकते , समय स्वयं ही यह दिखायेगा।

वर्षों पहले विवाहों के अवसर पर महिलाओं के संगीत क्षण एकदम सरल तथा सहज होते थे। विवाह समारोह के आगमन पर आठ-दस दिन तक रात्रि को दस-पांच पड़ौस की लड़कियाँ तथा महिलाएँ एकत्र होकर रात्रि में गीत गाकर खुशियाँ मनाती थीं। समारोह के अवसर पर मूंग हाथ लेने, माताजी की पूजन, चाक, घोड़ी चढ़ जैसे मौकों पर समाज में बुलवाकर महिलाएँ एकत्र की जाती थीं जो प्रासंगिक गीतों का जोरों से उच्चारण करती थीं।

इसके अलावा विवाह की सामग्री घरों पर ही तैयार की जाती थी। बीनने, सामान साफ करने, उसे संग्रहित कर सुरक्षित करने के अवसरों पर गुवाड़ी की महिलाएँ एकत्र होकर कार्य निपटाती थीं, उस समय गीत गा कर कार्य को आसान बना देती थीं। गीतों में एकाध धार्मिक गीत का सुर भी होता था, कोई भजन या मीराबाई के पद भी गा देते थे। तोरण, बिदाई आदि मौके भी गीतों से परिपूर्ण होते थे। सारा स्वरूप सांस्कृतिक होता था। शिष्टता उसमें झलकती थीं। सगे या सगी को गालियाँ गाने के नाम पर थोड़े व्यंग किये जाते थे, अश्लीलता दूर-दूर तक नहीं थी। बुजुर्ग महिलाएँ भी इन सभी में शामिल रहती थीं। इनसे जान-पहिचान, प्रेम, सहयोग तथा सद्भावना को प्रोत्साहन मिलता था।

शनैःशनैः पेशेवर लोगों विशेषतः महिलाओं ने इन कार्यक्रमों में प्रवेश करना प्रारंभ कर दिया बाहर के गायक (स्त्री या पुरुष) बुलाये जाने लगे। ये ही मंच पर गाते हैं, घर के सदस्य सम्बन्धी श्रोता बनकर रह गये। आपसी प्रेम व सद्भाव वाले तथ्य हवा हो गए। समय के साथ अधिक परिवर्तन हुआ । विवाहों में आज जो महिला संगीत की स्थिति बनती जा रही है, वह भद्दी, बेहूदी एवं संस्कृति से कोसों दूर है। फिल्मी तथा रि-मिक्स फिल्मी गीतों पर महिने पूर्व से तैयारी व रिहर्सल प्रारंभ हो जाती है। इसके लिये महंगे अध्यापक अथवा संस्थाएँ तलाशे जाते हैं। कार्यक्रम के दिन महंगी मंच सजावट की जाती है। लाईट तथा साउण्ड के नाम फिल्म-स्टुडियो सरीखी जमावट की जाती है। भोंडे गीत-संगीत का दौर चलता है। इन सभी में सांस्कृतिकता कहीं नहीं है। आपसी पारिवारिक मेलजोल या प्रेम का विकास हवा हो गया है। अश्लीलता भी छूने लगी है। अतएव जैन पत्र-पत्रिकाओं में इनका विरोध हो रहा है। कई नगरों में समाज ने एकत्र होकर इन पर बंदिश कर दी है।

तीर्थंकर श्री अजितनाथजी

(मुनिराज डॉ.श्री सिद्धरत्न विजयजी म.सा.)

दीक्षा ग्रहण करते ही प्रभु श्री अजितनाथ स्वामीजी को मनः पर्यवज्ञान प्रकट हो गया। प्रभु के दीक्षा ग्रहण के द्वितीय दिवस राजा ब्रह्मदत्त ने अयोध्या नगरी में ही अपने यहाँ प्रभु को क्षीरान्न से बेले के तप का पारणा कराया। जिससे वे प्रभु अजितनाथ जी के प्रथम भिक्षादाता हुए। प्रभु श्री अजितनाथ दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् बारह वर्षों तक छद्म अवस्था में ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए तपश्चरण द्वारा कर्मों की निर्जरा करने लगे। पौष शुक्ल एकादशी के दिन जब चन्द्रमा का रोहिणी नक्षत्र के साथ योग हुआ। प्रभु सहस्राम्रवन में बेले की तपस्या के साथ ध्यानमग्न थे। तभी प्रभु ने क्षपकश्रेणि पर आरूढ़ हो घातिकर्मों का नाश कर केवल दर्शन की प्राप्ति के साथ केवली नामक गुणस्थान में प्रवेश किया एवं सर्वज्ञ-सर्वदर्शी हो गये। इन्द्रादि देवों ने आकर प्रभु का केवल ज्ञान महोत्सव मनाया। समवसरण की रचना हुई। प्रभु के केवल ज्ञान का समाचार प्राप्त होते ही महाराजा सगर तत्काल अपने परिजनों सह प्रभु के दर्शन के लिए पधारे। प्रभु अजितनाथ ने अमोघ देशना प्रदान की। प्रभु की देशना को सुनकर अनेक जीवात्माओं ने श्रमण-श्रमणी एवं श्रावक-श्राविका धर्म स्वीकार किया। प्रभु के प्रथम गणधर सिंहसेन हुए एवं प्रथम शिष्या का नाम फल्गु था जो प्रभु के साध्वीसंघ की प्रवर्तिनी हुई। इस प्रकार प्रभु ने प्रथम देशना में श्रुतधर्म और चारित्रधर्म की शिक्षा देकर चतुर्विध संघ की स्थापना की।

भगवान अजितनाथ विभिन्न प्रान्तों में सभी जीवों को मोक्ष मार्ग हेतु धर्माराधना का उपदेश देते हुए कौशाम्बी नगरी में पधारे। वहां एक उद्यान में अशोक के वृक्ष के नीचे देवों द्वारा रचित समवरण में विराजमान होकर देशना दी। एक ब्राह्मण द्वारा विनयपूर्वक प्रश्न करने पर प्रभु ने समवरण की व्याख्या करते हुए बताया कि यह सम्यक्त्व का प्रभाव है। इसका बहुत बड़ा प्रभाव है। इसके प्रभाव से प्राणियों के वैर शांत हो जाते हैं, व्याधियाँ नष्ट हो जाती हैं, अशुभ कर्म समाप्त हो जाते हैं तथा देवआयु का बंध होता है। देवी-

देवतागण स्वयं उपस्थित रहते हैं। सम्यक्त्व की उत्कृष्ट उपासना से प्राणी सभी प्रकार के कर्मों का क्षय कर पावन एवं सर्वश्रेष्ठ तीर्थंकर पद को भी प्राप्त कर सकता है।

देशना में उपस्थित अन्य श्रोताओं को इस रहस्य से पूर्णतः अवगत कराने के लिए प्रभु के मुख्य गणधर ने विनम्र भाव से प्रभु से विनति की कि कृपया आपके द्वारा ब्राह्मण को दिये गये उत्तर के रहस्य को स्पष्ट रूप से समझाने की कृपा करें। इस पर प्रभु श्री अजितनाथजी ने शालिग्राम के एक ब्राह्मण दम्पत्ति शुद्धभट्ट और सुलक्षणा की कहानी सुनाकर सम्यक्त्व की व्याख्या को स्पष्ट किया एवं जिनभक्ति के प्रभाव से अवगत कराया।

प्रभु की दिव्य अमृतवाणी को सुनकर ब्राह्मण दम्पत्ति के साथ आए हुए शालिग्राम के निवासियों की आस्था जिन भक्ति के प्रति सुदृढ़ हो गई एवं समवसरण में उपस्थित सभी लोगों ने सम्यक्त्व ग्रहण किया। ब्राह्मण दम्पत्ति ने भी उसी समय श्रमण धर्म की दीक्षा ली एवं विशुद्ध श्रमणाचार का पालन करते हुए समस्त कर्मों का क्षय कर अन्त में मोक्ष प्राप्त किया।

प्रभु श्री अजितनाथजी बहत्तर लाख पूर्व की आयु पूर्ण कर एक हजार मुनियों के साथ सम्मेत शिखर पर पहुंचे तथा एक मास तक तपस्या करते हुए चैत्र शुक्ल पंचमी को मृगशिर नक्षत्र में परम पद मोक्ष को प्राप्त कर सिद्ध, बुद्ध हुए।

चिरकाल तक उनका धर्मशासन जयपूर्वक चलता रहा जिसमें अनेक पुण्य आत्माओं ने अपने जीवन का कल्याण किया। प्रभु के धर्म परिवार में 95 गणधर, 2200 केवली, 12500 मनः पर्यवज्ञानी, 9400 अवधिज्ञानी, 3700 चौदहपूर्वधारी, 20400 वैक्रियलब्धिधारी, 12400 वादी, 100000 साधु, 330000 साध्वियाँ, 298000 श्रावक और 545000 श्राविकाएँ थीं।

* सेठ, पंडित और चोर एक ही समय चल रहे थे। भगवान ने उन्हें दोबारा पृथ्वी पर भेजने के लिए उन लोगों की इच्छाएँ पूछी। सेठ ने कहा, मुझे किसी बड़े शहर में बहुत सारा धन देकर भेज दीजिए। पंडित ने कहा, मुझे किसी बड़े मंदिर में भेज दें। सबसे बाद में चोर से पूछा। चोर ने कहा, भगवान, मुझे उस शहर का नाम बता दें जहां आप इन दोनों को भेजने वाले हैं।

भरत क्षेत्र तथा महाविदेह क्षेत्र

(स्व. आचार्य श्री विजययतीन्द्रसूरिजी म.सा.)

जैनवाङ्मय अगाध है, उसमें अनेक ज्ञातव्य बातें भरी पड़ी हैं- जिनके मनन करने में बुद्धि भी संकुचित सी हो जाती है। परन्तु वे बातें असत्य नहीं कहीं जा सकती। उन बातों की सत्यता को जानने के लिये खोज करने और विचार को विशाल बनाने की आवश्यकता है। आज जो आश्चर्यजनक आविष्कारों का प्रार्दुभाव हुआ और प्रतिदिन हो रहा है वह सब खोज का ही प्रभाव है। कहावत भी है कि 'जिन खोजा तिन पाईया, गहरे पानी पैठ।' दरअसल में खोज शाखों का मन्थन है। जो बात हजारों वर्ष पहले हुई या शास्त्रों में कही गई जिनकी सत्यता को मानने में हृदय सन्दिग्ध रहता है, खोज ने उसकी वास्तविक परिस्थिति को प्रत्यक्ष कर दिया है।

हजारों वर्ष पूर्व जैनशास्त्रों में खनिज-पदार्थों में जीव बतलाया था जिसको लोग दिल्लगी में उड़ाते और गप्प समझते थे। परन्तु जब डाक्टर जगदीशचन्द्र बोस ने अनेक साधनों के द्वारा वनस्पति और खनिज पदार्थों में जीवात्मा के अस्तित्व का स्वयं अनुभव किया, तब उन्होंने निसंदेह अपना संदेश जनता को सुनाया कि- 'जब मैंने खनिज पदार्थ और वनस्पति आदि के मुख्य भावों को और उन सब में एक ही आदि तत्व के अस्तित्व को देखा, जब मैंने प्रकाश किरणों में चमकने वाले सूक्ष्म धूलिकण में पृथ्वी पर निवास करने वाले असंख्य प्राणियों और आकाश में प्रकाशित होने वाले सूर्यादिक ग्रहों में इसी एक आदि तत्व का अस्तित्व देखा तब मुझे पहली बार ही मेरे पूर्व ऋषियों की उन बातों का जिनको उन्होंने तीन हजार वर्ष पहले कहा था, कुछ - कुछ अर्थ समझ में आया। उन पूर्वजों ने क्या कहा था ? उन्होंने कहा था कि इस विश्व की अनेक भिन्न-भिन्न वस्तुओं में वह एक ही आदि तत्व भरा हुआ है । जो मनुष्य इस बात को देखता है वही उस अन्तिम सत्य को पा सकेगा। दूसरा नहीं। बोस ने यह केवल कहा ही नहीं, किन्तु प्रयोगों के द्वारा सिद्ध करकर भी बतलाया है। डाक्टर बोस के आविष्कार के बाद इस सत्यता को सारी दुनिया मानने लगी है।

आप कथित जैनवाङ्मय में जितनी बातें बातें गुम्फित हैं वे असत् नहीं, अक्षरक्षः सत्य हैं। उनमें कतिपय

बातें परिशोध (खोज) मांगती हैं। हम यहाँ एक प्राचीन पत्र उद्धत करते हैं जो श्री राजेन्द्रजैनागमग्रन्थ संग्रह के फुटकर पत्रों के बिंडल को देकते हुए उपलब्ध हुआ है। इसमें लेखन समय और लेखक का नामनहीं है, लेकिन लिपी पर से अनुमान किया जा सकता है कि विक्रमीय 14 और 15 वीं शताब्दी के बीच का लिखा हुआ होगा। इसमें प्राकृतभाषामय आर्याछन्दों में तीन गाथाएँ और उन पर संस्कृत में व्याख्या लिखित है।

प्रथम गाथा में 'विदेह क्षेत्र के एक कवल में भरतक्षेत्र के मनुष्य के कितने कवल होते हैं।' द्वितीय गाथा में 'विदेह-क्षेत्र के मनुष्य का मुख- परिमाण' और तृतीय गाथा में 'विदेह- क्षेत्र के एक साधु की मुखवस्त्रिका में भरत क्षेत्र के साधु की कितनी मुख-वस्त्रिकाएँ होती हैं ?' बस, यही विषय सन्दर्भित है जो जानने और विचारने लायक है- जिसकी सत्यता का भार पाठकों की विचार-शीलता पर निर्भर है।

विदेह और भरतक्षेत्र का कवलपरिमाण

मूल- बत्तीसे कवलाहारी, बत्तीसं तत्थ मूढया कवलो।
एगो मूढ- सहस्सो, चउवीसाए समहिओ अ ।।1।।

टीका- आसां व्याख्या- इह विदेहेषु च सम्पूर्णः पुरुषस्याऽऽहारः 32 कवलै-स्यात्, एकैकश्च महाविदेहकवल इहत्यैः 32 सूटकैः स्यात् । कथं चैत् ? उच्यते- एकस्यापि महाविदेहतण्डुलस्तस्य दैर्ध्येण चत्वारि शतानि 400, पृथुत्वेन चतुष्षष्टि 64, स्तूलत्वेन द्वात्रिंशच्च 32 इहत्या भरतक्षेत्र तण्डुलाः स्युः। न तु भरतण्डुलादायामपृथुत्व विष्कम्भैर्विदेहतण्डुलस्य चतुःशतगुणत्वे नैकस्य विदेहतण्डुलस्याऽऽयामादिभिः प्रत्येक चत्वारि तण्डुल शतानि किं न सम्भवतीति चेत् ? उच्यते विदेहतण्डुस्य मध्यभागे यत्र गाढं स्थूलत्वमस्ति, तस्य भागस्य दलेन यादृशाः 400 तण्डुला मध्यभागे स्थूला निष्पाद्यन्ते तस्यैव च तण्डुलस्य तदन्यस्थानदलेन न तादृशाः 400 स्युः । मध्यादन्यत्राऽल्पतरस्थूलत्वान्निष्पाद्य तण्डुलानां सर्वेषां मध्यभागे परस्परं सदृषस्थूलत्वाच्च एवं च निश्चयैनयमतेन तण्डुले नियंत किमपि स्थूलत्वादिकं न सम्भवतः, तथापित व्यवहारनयमतेन विदेहतण्डुलस्य दैर्ध्येण 400 भरततण्डुला आयातः ।

पृथुत्वेन च 64 तण्डुलाः पृथवः, स्थूलत्वेन च 32 तण्डुलाः स्थूलाः सम्पद्यन्ते । यतस्तण्डुलो व्यवहारनयेन स्वदैर्ध्यात् सपादषष्ठांशेन पृथूलाः सम्पद्यन्ते। यतस्तण्डुलो व्यवहारनयेन स्वदैर्ध्यात् सपादषष्ठांशेन पृथुलः,

सार्द्धद्वादशांशेन च स्थूलो विवक्ष्यते। चतुर्णा शतानां च सपादः षष्ठोशश्च तुष्षष्ठिरेव स्यात्। चतुर्णा शतानां सार्द्धद्वादशे चांशे द्वात्रिंशत्समागच्छति। अयं भावः- चतुष्षष्टिर्द्वात्रिंशच्च सपादैः षड्भिः, सार्द्धैर्द्वादिशभिश्च गुण्यते तदा चत्वारी शतानि समागच्छन्ति अथवा यदि चतुर्णा शतानां चतुष्षष्ठया द्वात्रिंशता च भागो दियते तदा सपादाः षट् सार्द्धद्वादशां च सभागच्छन्ति। अथो दैर्ध्यसत्कानि चत्वारि शतानि पृथुत्वसत्कया चतुष्षष्ठ्या गुण्यन्ते, जातानि 25600, एथानि च स्थूलत्वसत्कया द्वात्रिंशता गुण्यन्ते, जातानि 819200, एतावन्त एकस्मिन् विदेहसत्कतण्डुले भरततण्डुलाः स्युः।

एकैकश्च कवलः 500 तण्डुलैः स्यात्, अतः प्रागुक्तोंकः 819200 पञ्चभिः शतैर्गुणनीयः। गुणने च जातमेककवकतण्डुलमानं 409600000, इदं च पृथक् स्थाप्यते। एकस्मिश्च सूटके मानकानि 640 स्युः। एकैकस्मिंश्च मानके 20000 तण्डुलाः स्युः। यतः पञ्चभिर्माणकैर्जात्यतण्डुलानां लक्षमेकं भवेत्। अतः प्रागुक्तोंऽङ्को भूटकसत्कतण्डुलसंख्यया 12800000 भजनीयः। भागे व लब्धाः 32, एते एककवलसत्काः 32 भरतक्षेमूटका जाताःष एते च द्वात्रिंशता गुणयितव्या यतो द्वात्रिंशता कवलैः संपूर्ण आहारो भवेत्, गुणने च जाताः 1024 एले विदेहसत्कसंपूर्णाहारेण भरतभूटका जायन्ते, इति।

अनुवाद- विदेह क्षेत्र में एक पुरुष का भोजन 32 कवल (ग्रास) का होता है, वहाँ के एक कवल में भरतक्षेत्र के 32 मूटक होते हैं। विदेह क्षेत्र के एक तंडुल की लम्बाई 400, चौड़ाई 64 और मोटाई 32 भरतक्षेत्र के तंडुल के बराबर होती है। विदेह- क्षेत्र के एक तंडुल की लम्बाई, चौडाई और मोटाई में भरतक्षेत्र के इतने तंडुल नहीं समा सकते ऐसा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि विदेह-क्षेत्रीय तंडुल के मध्य भाग में जहाँ बहुत मोटापन है और कहीं-कहीं अपेक्षाकृत कम मोटाई भी है। निश्चयनय के मत से तंडुल में ठीक-ठीक, लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई निश्चित नहीं, है, तो भी व्यवहारनय के मत से उसकी लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई में भरत-क्षेत्र के उतने तंडुल समा जायेंगे। व्यवहार से विदेह का तंडुल अपनी लंबाई से 6.30 अंश चौडा और 12.3 अंश मोटा है। 400 का सवा छवां हिस्सा 64 और 400 का साढ़े बारहवां हिस्सा 32 होगा। इसका मतलब यह है कि 64 और 32 को 6.30 से और 12.3 से गुणा करने पर 400 आता है, या 400 में 64 तथा 32 का भाग देने से क्रम से 6.30 और 12.3 से आता है। इसलिये लम्बाई के 400 को चौड़ाई के 64 से गुणा करने पर 25600 होते है।

इसलिये लम्बाई के 400 को चौडाई के 64 से गुणा करने पर 25600 होते

हैं और मोटाई के 32 से गुणा करने पर 819200 होते हैं, अतः विदेह-क्षेत्र के एक तंडुल में 819200 भरत-क्षेत्र के तंडुल हुए।

विदेह-क्षेत्र का एक कवल 500 तंडुलों का होता है। अतएव 819200 को 500 से गुणा करने पर भरत क्षेत्र के 409600000 तंडुल विदेह के एक ग्रास में हुए। एक मूटक 640 मन का होता है। एक मन में 20000 तंडुल और 5 मन में एक लाख तंडुल होते हैं। इसलिये पूर्वोक्त मूटकसत्क 409600000 संख्या में 12800000 का भाग देने पर लब्ध-अंक 32 आया। विदेहक्षेत्रीय पुरुष का एक ग्रास भर-क्षेत्रीय 32 भरत-क्षेत्रीय 32 सूटक के बराबर होता है। इसलिये विदेहक्षेत्रीय पुरुष के 32 कवल के संपूर्ण आहार में भरतक्षेत्रीय पुरुष के 32x32 = 1024 मूटक हुए।

विदेहक्षेत्र के पुरुष का मुखपरिणाम

मूल- रयणीओ पन्नास, विदेहवासम्मि वयणपरिणामं।
पत्ततलस्स पमाणं, सत्तरधणुहाइ दीहं तु ।।2।।

टीका- उत्सेधाङ्गुलत्रिखं नरमुखपरिणामं, 400 गुणने 24 भागं च 50 हस्ता जायन्ते तथा चत्वार्य8ङ्गलानि एश्चविंशतिभागीकृताङ्गुलशतद्वयं च 4.30 तुम्बकबुध्नपरिणामं ज्ञेयम्,यतः सल्लक्षणं तुम्बकमेतावन्माणं भूमौ लगति, असल्लक्षणानि तु तुम्बकानि हीनाधिक-बुध्नान्यपि भवन्ति। चच्च 4.25 बुध्नपरिणामं 400 गुणितं सत् षण्णवत्या धनुरङ्गुलैर्भज्यते 17 धनूंषि लभ्यन्ते।

अनुवाद - विदेह-क्षेत्र के पुरुष का मुख तीन उत्सेधाङ्गुल का होता है, यह उन्हीं के अङ्गुल से जानना चाहिये। उसमें 400 को गुणा करने और उसमें 24 का भाग देने से भरतक्षेत्रीय पुरुष के 50 हाथ हुए। विदेह-क्षेत्र के मनुष्यों के भोजन-पात्र का परिणाम 102 अङ्गुल का होता है- जिसमें चार अङ्गुलवाले 25 का भाग देने पर 4.25 बुध्नपरिणाम हुआ।

यदि 4.25 बुध्न-परिमाण को 400 से गुणा करें और उसमें 96 का भाग दे तो 17 धनुष का उनके पात्र-तल का परिमाण हुआ, जो भरत-क्षेत्र के पुरषाङ्गुल से समझना चाहिए।

विदेहक्षेत्र मुखवस्त्रिका परिणाम

मूल- मुहणंतएण तेसिं, सहिसहस्सा य एगलक्खा य।
भरहस्सय साहूणं, एयं मुहणंतयं मामं ।।3।।

टीका- एकस्यां विदेहमुखवस्त्रिकायां भरतक्षेत्रसाधुमुखवस्त्रिकातुल्य विस्तारा यदि चीरकाः क्रियन्ते, तदा

चत्वारि शतानि मुखवस्त्रिका भवन्ति। अतो विस्तारसत्कानि चत्त्रारि शतानि यद्यायामसत्कैश्चतुर्भिः शतैर्गुण्यन्ते तदा 1600000 मुखवस्त्रिकाः उत्सेधाङ्गुलेनाऽध्युष्टहस्तप्रमितदेहानां भरतसाधूनां योग्या भवन्तीति भद्रम् । इति विचारपत्रकम्।

अनुवाद- महाविदेहक्षेत्र के साधुओं की एक मुखवस्त्रिका में भरतक्षेत्र के साधु की मुखवस्त्रिका के समान विस्तारवाले यदि खंड किये जाये तो 400 खंड होते हैं और एक-एक खंड में 400 से गुणा करने पर 160000 मुखवस्त्रिका आठ हाथ शरीर वाले भरतक्षेत्र के साधुओं की होती हैं।

शमिति। विक्रम की 18 वीं, या उसके बाद की शताब्दी में अंचलगच्छीय श्री हर्षनिधानसूरिने 'रत्नसंचयप्रकरण' नामक ग्रन्थ संग्रहित किया है- जिसमें कुल 548 प्राकृतभाषामय गाथाओं का संग्रह और वह जुदे-जुदे सूत्र-ग्रन्थों से उद्धृत है। प्रस्तुत तीनों गाथाएँ मूलमात्र उसी संग्रहित प्रकरण में गाथा नं. 405, 406, 407 पर दर्ज हैं। रत्तसंचयप्रकरण की मुद्रित पुस्तक में गाथाओं का गुजराती भाषा में भावार्थ भी दिया हुआ है। परन्तु उससे भी तीनों गाथाओं की प्रस्तुत संस्कृत व्याख्या में विशेष स्पष्टीकरण किया गया है, जो पाठकों के सामने है।

आदर्शवादी दीपों की संख्या बढ़नी चाहिए

दीपावली ज्योति पर्व है, अज्ञानांधकार की, अमावस्या जैसी रात्रि में दीपक की तरह टिमटिमाते जगमगाते, जाग्रतात्मा-कर्मठ प्राणवानों की विशाल पंक्ति की इन दिनों जरूरत है। कार्तिक अमावस्या के अंधकार में टिमटिमाने वाले दीपकों से तो एक रात्रि की शोभा से थोड़ी मूक प्रेरणा पाकर भी संतुष्ट हुआ जा सकता है, किन्तु चैतन्य दीपकों के कर्त्तव्यों की इतिश्री नहीं मानी जानी चाहिये। इन दीपकों-दीयों की भूमिका तो लंबी-दीर्घकालीन है। पात्रत्व तो उनका स्थिर है। स्नेह उनमें भरा ही है। वर्तिका भी उनकी लंबी है। अज्ञान-अमावस्या भी अभी समाप्त नहीं हुई तो दीपक जलेंगे, जलते ही रहेंगे। एक जलता हुआ दीपक हजारों दीपक जला सकता है। यदि ऐसे आदर्शवादी दीपकों की संख्या बढ़े तो ज्योति निखरे। फिर काली-कलुटी अमावस्या भी सुहावनी और दर्शनीय हो जाएगी।

शांति और क्रांति के अग्रदूत-दादा गुरुदेव

(धीमी गति वाला)

तीर्थ तारक हैं। तीर्थ तैराने वाले हैं परमात्म श्रद्धा बढ़ाने वाले हैं, आत्म ज्योति की पहचान कराने वाले हैं, मन को शुद्ध करने वाले हैं, आचरण को पवित्र बनाने वाले हैं। तीर्थ सम्यक् दर्शन, ज्ञान, चारित्र प्रदाता हैं और इनको पुष्ट करने वाले हैं।

अरावली की मोहक पर्वतमालाओं के मध्य स्थित राणकपुर तीर्थ में स्थित अति भव्यातिभव्य जिन प्रासाद परमात्म भक्त का एक अनुपम कलात्मक भक्ति पुष्प है। श्रेष्ठि धरणाशाह ने करोड़ों स्वर्णमुद्राओं का सद्व्यय करके यह अनुपम भक्ति पुष्प परमात्मा आदिनाथ को समर्पित किया था। इस जिनप्रासाद की शिल्पकला विश्व में बेजोड़ है। प्रथम देवलोक के नलिनीगुल्म विमान की प्रतिकृति रूप यह विशाल जिनमंदिर है। इस मंदिर में 1444 स्तंभ हैं, किसी भी स्तंभ के पास खड़े रहकर मूलनायक आदिनाथ परमात्मा के दर्शन किये जा सकते हैं, बीच में अन्य किसी भी स्तंभ से दर्शन में व्यवधान उत्पन्न नहीं होता है। जब तीर्थ यात्री भव्य मंदिर में प्रवेश करके त्रिलोकीनाथ तीर्थपति आदीश्वर दादा के दर्शन करता है तो धरणाशाह की प्रभुभक्ति का स्मरण उसके हृदय में भी प्रभु भक्ति, प्रभु के प्रति प्रेम का प्रवाह उमड़ा देता है और जिनप्रासाद की कलात्मकता से भावविभोर होते-होते प्रभु ने जिस अद्भुत कलात्मकता के दर्शन करवाए हैं, वैसी धर्मकला और आत्मिक अनुभूति की कला में भी वह सराबोर होने लगता है।

रमणीय वन प्रदेश के मध्य, एकान्त और नीरव स्थान पर स्थित यह पावनकारी तीर्थ प्रभुभक्ति, धर्मसाधना, ध्यान, स्वाध्याय आदि के लिए अत्यंत उपयुक्त स्थान है। इस तीर्थ पर पदार्पण के साथ ही हमारे कथानायक दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी यानी कि उस समय के मुनिराज रत्नविजयजी को अत्यंत आल्हादक मनःशान्ति की प्राप्ति होती है। उनके मन में शिथिलाचार के खिलाफ जो द्वंद्व मचा हुआ था, वह निर्णायक स्थिति में पहुंचे इसीलिए मानो भवितव्यता उन्हें यहाँ खींच लाई थी। उनके सान्निध्य में सिद्धचक्र आराधना करने के लिए कई आराधक यहाँ आये हुए थे। आराधना प्रारंभ हुई। मुनिराज रत्नविजयजी के प्रवचन, ज्ञान ध्यान, त्याग तपस्या की कीर्ति की सुगंध

प्रसर रही थी लेकिन वे खुद शिथिलाचार को कैसे खत्म किया जाए, इस अंतर्द्वन्द्व में उलझे हुए थे। दूसरी ओर श्री पूज्य धरणेन्द्रसूरिजी थे, उनकी युवा वय थी, यतिवर्ग में कुछेक यति तो अत्यंत शिथिलाचारी बन गये थे, महाव्रतों का पालन उनके लिए भार था, चाहना और लालसा के बीहड़ वन में वे भटक गये थे, शाही ठाठबाट , सुखशीलता और दिखावे के प्रपंच में वे पड़ गये थे, साधन साध्य की पवित्रता उनकी नजरों से ओझल हो गई थी और उन यतिओं की हवा श्री पूज्य धरणेन्द्रसूरिजी को भी लगने लग गई थी। अब सुधार के लिए कौन किसे क्या कहे ?

मुनिराज रत्नविजयजी की धर्मध्यान, स्वाध्याय, तत्वचिंतन आदि की साधना शुभकारी, शुद्धकारी तीर्थ की स्पर्शना से और प्रभु आदिनाथजी की छत्रछाया में अत्यंत उत्कृष्ट स्थितियों को छूने लगी। मुनिराज रत्नविजयजी यहां की निस्तब्ध गुफाओं में यहां के मनोहारी वन प्रदेश में ध्यान और चिंतन के लिये समय-समय पर जाने लगे। भव्य जिनप्रासाद के पीछे ही पहाड़ी में एक घने फले-फूले आम्रवृक्ष के नीचे एक विशाल पत्थरखंड था, प्रायः उसी पर बिराजमान होकर मुनिराज ध्यानलीन हो जाते थे। बाहर की दुनिया से तटस्थ होकर, शरीर के प्रति निःस्पृह होकर वे वहाँ अंतरात्मा में जाकर बस जाते थे। पाताल कुएं की अंतिम परत टूटते ही पानी का फव्वारा अत्यंत वेग से उपर की ओर उछलता है वैसे ही ध्यान और वैराग्य के सहारे आत्मा की गहराइयों में पहुंचने पर, आत्मसंवेदन करने पर जो आनन्द के फव्वारे उछलते थे, उससे उन्हें आत्मा, आत्मा की गहन शक्ति का अनुभव होता था। जो गुड़ खाता है वही उसकी मिठास को जान सकता है, आत्मा को, आत्मा के आनंद को तो जो अंदर जाकर अनुभव करता है, वही जान सकता है, उसका वर्णन कथन से कुछ परे, अनुभव में ही स्थित रहता है।

परमात्मा महावीर का 2389 वां जन्म कल्याणक चैत्र सुदी तेरस की पूर्व संध्या। मुनिराज रत्नविजयजी संध्या को प्रतिक्रमण करके जिनमंदिर के पीछे की उसी प्रस्तर शिला पर जाकर बिराजमान हो जाते हैं। निर्भय हैं, प्रशमरस से भरे हैं, वैराग्य से भरपूर हैं, आत्मतीर्थ की यात्रा प्रारंभ कर दी है। महावीर की स्वरमणता की और पररमणता से विमुखता की साधना आदर्श बनकर ध्रुव तारे की तरह उनके सामने चमक रही है। शान्तरस के आनन्द में, आत्मरस के पान में संपूर्ण रात्रि कब व्यतीत हो जाती है, पता ही नहीं चलता है। रात्रि का अंतिम प्रहर प्रभातकाल आने का संदेशा दे रहा है।

मुनिराज ध्यान से निवृत्त होते हैं। तीर्थपति आदिनाथ की स्तवना स्वरूप भक्तामर स्तोत्र का मंद, मंजुल, मधुर स्वर में पाठकर एक नवीन आत्मशक्ति की प्राप्ति करते हैं। अब अनुप्रेक्षा प्रारंभ करते हैं। अनुप्रेक्षा स्वाध्याय का एक अंग है। अनुप्रेक्षा यानी सूत्रार्थ का पुनः पुनः नवीन चिंतन। अनुप्रेक्षा का साधक प्रज्ञा के प्रकाश को और आत्मप्रगति के मार्ग को शीघ्र प्राप्त कर लेता है। आज उनकी अनुप्रेक्षा के केन्द्र हैं दशवैकालिक ग्रंथ के सूत्र/ यह आचार्य शय्यंभवसूरिजी की वह महान कृति है जिसमें प्रभु महावीर के द्वारा प्ररूपित संपूर्णशुद्ध साध्वाचार और उसकी मर्यादा का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रंथ में साध्वाचार की उज्ज्वलता और गंभीरता का सुंदर वर्णन है। इसमें महाव्रतों के पालन में आने वाले खतरों से सावधान होने का प्रघोष, आहार-विहार निहार वस्त्र औषध आदि के ग्रहण की मर्यादा, आश्रवों का त्याग, संवर पालन, समिति गुप्ति का आचरण, पांचों इंद्रियों का निग्रह, भाषा के गलत प्रयोग के कटुक परिणाम आदि अनेक बातों का समावेश है। मुनिराज रत्नविजयजी का चिंतन अबाध गति से चल रहा था कि कहां सूत्र निर्दिष्ट आज का यह शिथिलाचारी पतनोन्मुख आचरण, कहाँ श्रमणाचार की उज्ज्वल गरिमामयी स्थिति और कहाँ शिथिलाचार के दलदल में फँस गया आज का यति। त्याग विराग की यह कैसी अवदशा ? माया, छल और दिखावा पसंद बन गया है आज का यति। गृहत्याग के समय मैंने प्रतिज्ञा ली थी 'सावज्जं जोगं पचक्खामि'। सपाप कार्यों का मैं त्याग करता हूँ। मेरी प्रतिज्ञा भी आचार शैथिल्य की भूलभुलैया में फंस गई है। हे रत्न ! कहाँ है आत्महित यहाँ ? यह दफ्तरी पद तो जाल में फंस गया मुझे । आत्महित के पथ पर चला तू माया, ममता और यश ख्याति के चक्रवात में उलझ गया है। हे वीर प्रभु ! तेरा बतलाया शुद्ध मार्ग ही अब मेरे लिए शरणभूत है। आज का उगता यह सूरज मेरे जीवन में नया प्रकाश अवश्य लाएगा। मैं अपनी संपूर्ण शक्ति लगाकर शिथिलाचार के कलंक को धो देने का प्रयास करूंगा।

आज प्रभु वीर का जन्म कल्याणक दिवस है। वह प्रेरणा दे रहा है कि महावीर का सेवक कायर बने यह हो नहीं सकता। महावीर के मार्ग पर कदम आगे बढ़ाने हैं, महावीर से शक्ति अवश्य मिलेगी। मुनिराज रत्नविजयजी जानते हैं कि शिथिलाचार निवारण के कार्य में संकट बहुत हैं, साथियों का अभाव है, शिथिलाचार यति तरह-तरह की परेशानियाँ खड़ी कर सकते हैं, मृत्यु भी आ सकती है। महावीर द्वारा प्रदत्त आत्मशक्ति से मैं सब संकटों का

सामना करने के लिए तैयार हूँ। आत्मा अनन्त बली है। आचार विचार की पवित्रता के आगे अंततः विरोधी भी नमते हुए चले आएंगे। अनुप्रेक्षा निर्णय का उपहार दे देती है। बेचैनी दूर हो जाती है। चेहरे पर एक नया तेज, नया आत्मविश्वास प्रकट हो जाता है। सूर्योदय हो गया है। नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर मंदिर पधारते हैं। प्रभु की स्तुति करते हैं । प्रभु आप पापों को दूर करने वाले हैं, वांछित को पूर्ण करने वाले हैं, आत्मश्रेय प्रदान करने वाले हैं, आप साक्षात कल्पवृक्ष हैं, मैं आपकी शरण में हूँ। तदनंतर देववंदन करते हैं और फिर संकल्प लेते हैं। 5 वर्षों के अंदर क्रियोद्धार करने का प्रत्याख्यान (पच्चक्खाण) लेते हैं। क्रियोद्धार यानी क्रिया का, चारित्र का शुद्धिकरण । चारित्र में जो भी अशुद्धियां हो रही हैं, उन्हें दूर करना । इस तरह प्रभु आदिनाथ और प्रभु महावीर से क्रांति करने की शक्ति प्राप्त करते हैं और उनके हृदय में प्रगाढ़ शान्ति का उदय हो जाता है।

मुनिराज रत्नविजयजी का बढ़ता प्रभाव इनकी जनमानस में ख्याति, इनकी विलक्षण बुद्धि की चारों ओर चर्चा, इनके भक्तों का इनके प्रति बढ़ता आकर्षण, यह सब शिथिलाचारी यतिओं को खटकने लगा, उनमें खलबलाहट होने लगी। अपने सुख साहबी के कार्यों में मुनिराज रत्नविजयजी के कारण बाधा पड़ेगी, इसका स्पष्ट आभास उन्हें होने लगा। इसलिए वे श्रीपूज्य धरणेन्द्र सूरिजी के कान मुनिराज रत्नविजयजी के खिलाफ भरने लगे। जब मुनिराज रत्नविजयजी क्रियोद्धार का प्रत्याख्यान करके मंदिर से उपाश्रय की ओर जाने लगे तो मार्ग में सैकड़ों तीर्थयात्री दिखाई दिये वे सब जन्म कल्याणक के पावन अवसर पर तीर्थ यात्रा करने आये थे। एकाएक पन्यास श्री रत्नविजयजी को अपने बीच पाकर वे तीर्थयात्री हर्ष विभोर हो गये और जयघोष के नारे लगाने लगे। मुनिराज रत्नविजयजी कुछ आगे बढ़ते हैं कि सामने से श्रीपूज्य धरणेन्द्रसूरिजी का आगमन हो जाता है। वे दफ्तरीजी की अलसाई लेकिन तृप्त आँखों को देखकर कहते हैं कि दफ्तरीजी आज तो आपने जबर्दस्त ध्यान का प्रयोग किया, यति कह रहे थे कि सारी रात आप बैठे थे। क्या हमें भी उस लाभ में से कुछ प्रसाद नहीं मिलेगा ? दफ्तरीजी कहते है कि क्यों नहीं मिलेगा ? साधु का तो काम ही बांटना है। लेकिन आप उस प्रसाद को पचा पाएंगे या नहीं, यह प्रश्न है। इन शब्दों में मुनिराज रत्नविजयजी बहुत कुछ कह गये थे, श्री पूज्यजी सकपका जाते हैं, कहते हैं कि ठीक है मैं उपाश्रय में आता हूँ, यह कहकर वे आगे बढ़ जाते हैं।

(क्रमशः)

आचार्य श्री भद्रबाहु

(मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा.)

चित्रकूट राज्य के महाराज श्री जितारी के राजपुरोहित श्री हरिभद्र उस समय के महान विद्वान थे। वे वेद-वेदांग एवं अन्य सभी विद्याओं में निष्णात एवं पारंगत थे अतः उन्हें अपने पांडित्य पर बहुत गर्व था।

एक दिन रात्रि में अपने निवास स्थान पर लौट रहे थे तो मार्ग में उन्हें एक भक्त से वृद्धा द्वारा पद्य की मधुर स्वर लहरियां सुनाई दी। वह पद्य हरिभद्र को बहुत ही मनोहारी लगा। परन्तु बहुत कोशिश करने के बाद भी वे उस पद्य का अर्थ समझने में असफल रहे।

प्रातः काल पद्य के अर्थ को जानने की लालसा से वे उस भवन पर पहुंचे जहाँ उन्होंने तपोपूता जैन वृद्धा साध्वी के दर्शन अभिवादन कर पूछा कि 'हे माता ! क्या रात्रि में आप ही पद्य का उच्चारण कर रही थीं। वृद्धा साध्वी ने उन्हें हाँ में उत्तर दिया। तब हरिभद्र ने विनम्र भाव से उसका अर्थ जानने की भावना व्यक्त की, तब साध्वी ने उत्तर देते हुए कहा कि पुत्र यदि तुम जिनागमों का गहन ज्ञान प्राप्त करना चाहते हो तो तुम हमारे गुरु के पास जाओ।

हरिभद्र गुरु का नाम स्थानादि पूछकर आचार्यश्री जिनभट्टसूरि के पास पहुंचे। आचार्यश्री के दर्शन से ही हरिभद्र के हृदय में उनके प्रति श्रद्धा भाव उत्पन्न हुआ एवं उन्हें सादर नमन किया। आचार्यश्री जिनभट्ट सूरि ने हरिभद्र को पहचानकर उनके आने का प्रयोजन पूछा तब हरिभद्र ने विनम्र स्वर में निवेदन कर पद्य की घटना से अवगत कराया तब आचार्य जिनभट्ट सूरिजी ने कहा कि यदि तुम्हें जैन सिद्धान्तों का अगाध ज्ञान प्राप्त करने की वास्तविक भूख है तो मेरा शिष्यत्व ग्रहण करो।

हरिभद्र जिनभट्टसूरि के पास जैन दीक्षा ग्रहण कर उनके शिष्य बन गये।

जिनभट्ट सूरिजी ने वृद्धा साध्वी का परिचय करवाते हुए कहा कि वह मेरी गुरु भगिनी महत्तरा याकिनी है। वे सब आगमों में प्रवीण और सब साध्वियों की शिरोमणि है। तब मुनि हरिभद्र ने विनयपूर्वक कहा कि सभी शास्त्रों का विद्वान होते हुए भी मुझे यह अनुभव हो रहा है कि मैं अब तक मूर्ख की भांति ही अपने ज्ञान पर मिथ्या अभिमान कर रहा था। मेरे पुण्य के उदय से ही मुझे इस धर्ममाता याकिनी महत्तरा ने मुझे धर्म के मार्ग पर प्रशस्त किया।

उसी दिन से मुनि हरिभद्र स्वयं को

'याकिनी महत्तरा सुनू' लिखना प्रारंभ कर दिया एवं गुरु के चरणों की सेवा में रहते हुए जैन आगमों का गहन अध्ययन किया। अपनी श्रद्धा भक्ति एवं निष्ठापूर्वक अध्ययन से उन्हें आगमों का तलस्पर्शी ज्ञान हो गया।

आचार्य जिनभट्ट सूरि ने हरिभद्र को हर प्रकार से योग्य समझकर शुभ मुहूर्त में उन्हें आचार्य पद प्रदान किया।

आचार्य पद ग्रहण करने के पश्चात् हरिभद्र सूरि ने निरन्तर विहारकर जैन धर्म का प्रचार-प्रसार किया।

एक दिन हरिभद्रसूरिजी के दो भानजे हंस और परमहंस उनके सम्मुख संसार से विरक्ति की भावना स्वरूप उनके सम्मुख उपस्थित हुए।

उन दोनों भाइयों की उत्कृष्ठ भावना को जान हरिभद्र सूरिजी ने उन्हें दीक्षा दान देकर शिष्य बना लिया। दोनों भाई उनके पास विद्याध्ययन करने लगे। आचार्य हरिभद्र ने अल्प समय में ही हंस और परमहंस दोनों मुनियों को आगमों एवं न्यायशास्त्रों में विद्वान बना दिया। वे दोनों बहुत ही मेधावी थे। जैन आगमों का गहन अध्ययन कर उनके मन में बौद्ध दर्शन एवं बौद्ध तर्क शास्त्रों के अध्ययन की भी लालसा जाग्रत हुई। इस हेतु उन्होंने हरिभद्रसूरिजी के सम्मुख अपनी यह इच्छा प्रकट की। अपने ज्ञान के बल पर अनिष्ठ की आशंका का ज्ञान होने से आचार्य ने दोनों शिष्यों को वहीं रहते हुए अध्ययन करने की आज्ञा दी। तब शिष्यों ने निवेदन किया कि 'हम लोगों पर आपका यह वात्सल्य भाव होना स्वाभाविक है। आपकी कृपा ने ही हमें सजग-समर्थ बनाया है। आपके नाम का जाप सब जगह किसी भी विकट स्थिति में हमारी रक्षा करेगा। आपके आशीर्वाद से हमें कही भी कुछ नहीं हो सकता।'

दोनों शिष्यों द्वारा बार-बार प्रार्थना करने पर आचार्य श्री हरिभद्रसूरिजी ने उन्हें दूरस्थ नगर में जाकर बौद्ध तर्क शास्त्रों के अध्ययन की आज्ञा दे दी। दोनों शिष्य वेष परिवर्तन कर बौद्ध राज्य की राजधानी में पहुंच गए। वहाँ उन्हें बड़ी-बड़ी दानशालाएँ एवं विशाल विद्यापीठ में अध्यापन की उत्कृष्ठ व्यवस्था को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई। हंस और परमहंस ने भी विद्यापीठ में प्रवेश प्राप्त कर लिया। उत्तम व्यवस्था होने से कुशाग्र बुद्धि दोनों मेधावी बालक सहज ही बौद्धदर्शन का गहन अध्ययन कर उसमें निपुण हो गये एवं अपने पूर्व पठित आगम पाठों से परिपुष्ठ अनेक अकाट्य प्रतितर्कों, युक्तियों एवं प्रमाणों को पृथक-पृथक पत्रों में लिपिबद्ध करने लगे।

एक बार संयोगवश उनमें से दो पत्र उड़कर बौद्ध विद्यार्थियों के हाथ लग गये। बौद्ध विद्यार्थियों ने उन पत्रों को अपने गुरु के समक्ष प्रस्तुत किया। जब बौद्धाचार्य ने पत्रों को पढ़ा तो अपने पक्ष के निर्बल होने तथा जैन पक्ष के सबल होने के भय से आतंकित हो उठे।

(क्रमशः)

कैसे मनाएँ दीपावली

(साध्वी श्री प्रीतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

दी– दिनकर की तरह बनो प्रकाशनमान

पा– पानी की तरह बनो पावन

व– वमन करो दोषों का

ली– लीन बनो प्रभु भक्ति में

दीपावली यानी अपने परमोपकारी परमात्मा महावीर स्वामी भगवान का निर्वाण दिवस। प्रभु वीर साक्षात् भाव दीपक थे उनकी याद में द्रव्य दीपक प्रगटाए और दीपावली शब्द प्रख्यात हुआ।

'दीपावली' शब्द का प्रथम अक्षर 'दी' हमें संदेश देता है कि दिनकर की तरह प्रकाशमान बनो। दिनकर (सूरज) का जब उदय होता है तो दुनिया के अंधकार को नष्ट कर सारी दुनिया को प्रकाश से भर देता है। आनंद तथा उत्साह व स्फूर्ति का संचार कर देता है। वैसे ही हम दीन दुखियों के जीवन के अंधकार को नष्ट कर अपने तन–मन–धन एवं बुद्धि का सदुपयोग करके दीपावली को सार्थक बनाएँ।

लाखों, करोड़ों रु. के फटाखे फोड़कर, भयंकर हिंसा का तांडवनृत्य करके, कागज जलाकर ज्ञान की आशातना करके उसमें आनंद तथा अनुमोदना करके पापानुबंधी पाप का अर्जन करते हैं। फटाखे फोड़ना हमारे निष्ठुर हृदय का परिचायक है, संपत्ति तथा अहंकार का झूठा प्रदर्शन है, गरीबों का क्रूर मजाक है तथा जैनत्व के विरुद्ध है। फटाखे की आवाज से निर्दोष पशुपक्षी भयभीत हो जाते है, बालकों के हृदय कमजोर हो जाते हैं तथा कान के पर्दे को भी नुकसान होता है। फटाखों की फैक्ट्री में काम करने वाले बालकों के हृदय व फेफड़े नष्ट हो जाते हैं। जैसा लुटाएँगे वैसा लौटेगा, अपने धन का सदुपयोग करके दूसरे को समाधी, शांति साता व सुख दें। ऐसे हिंसक कृत्य करके उसमें आनंदित होकर अनुमोदना करने से हमें भी कई भवों तक उनके दुष्परिणाम भुगतने पड़ते हैं। मूकपन, बधिरत्व अंधत्व प्राप्त होता है, अनेक भवों में एक्सिडेन्ट आदि से मृत्यु होती है। माता–पिता आदि स्वजन का बचपन में ही वियोग हो जाता है। अपंगता, मंदबुद्धि आदि के शिकार बनते हैं। दुख के दिन आते हैं तब कोई आश्वासन देने वाला भी नहीं मिलता है। अतः दीपावली को सात्विक ढंग से मनाने का निश्चय करें।

इस हेतु –

1. पक्षियों को पटाखे फोडकर त्रास देने की बजाय दाना डालकर उन्हें खुश करें।

2. चिकित्सालय में गरीब एवं बीमार मरीजों को फ्रूट (फल) आदि प्रदान करें।

3. गरीबों को भोजन करवायें, मिठाई वितरण करें।

4. दीपावली के मंगलकारी प्रवचन का श्रवण करें।

5. ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।

6. दीपावली में छट्ठ (बेला) का तप करें। कहा गया है कि 'लख कोड़ि छट्ठ करी कल्याण करो एह' अर्थात् दीपावली पर छट्ठ करने से लाख को क्रोड़ के

साथ गुणा करें उतने छट्ठ का लाभ प्राप्त होता है।

7. रात्रि भोजन, टी.वी. आदि का त्याग करें।

8. दीपावली का देववंदन तथा जाप अवश्य करें।

'दीपावली' का दूसरा अक्षर 'पा' हमें संदेश देता है कि पानी की तरह पावन तरल सरल बनो। पानी में जैसा रंग डालो वैसा वह हो जाता है। लाल रंग डालो तो लाल हो जाता है। पीला डालो तो पीला हो जाता है। हर रंग के साथ अपने आपको एडजस्ट कर लेता है। वैसे ही अपने को हर परिस्थिति के साथ एडजस्ट हो जाना चाहिए हर स्वभाव के साथ मिल जाना चाहिए उसका विरोध नहीं करना चाहिए। परिस्थिति को बदलने की अपेक्षा स्वयं उनके अनुसार एडजस्ट हो जाने पर अधिक आनंद आता है। सामना करने की बजाय सहन करने से द्वेष भाव नहीं आता है। मन जल की तरह निर्मल बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। दीपावली का तृतीय अक्षर 'व' हमें संदेश देता है कि वमन करो दोषों का। अपने जीवन में रहे हुए दोषों को दूर करना है। हर दीपावली में एका-एक दोष का भी त्याग करते जायेंगे तो जीवन में दोषों का ह्रास होगा और गुण प्रकट होते जायेंगे।

चिंतन करें कि हमारे जीवन में ऐसे कौन से दोष हैं या ऐसा कौन सा व्यसन है जिससे स्वपर की हानि होती है। जैसे यदि आपको क्रोध अधिक आता है तो उससे होने वाली हानियों पर चिंतन करते हुए दृढ़ संकल्प करें कि मुझे अति आवेश में नहीं आना है। यदि किसी की निंदा करने की आदत है तो उसका त्याग करें। किसी की निंदा करना उसकी पीठ का मांस खाने के बराबर है। दशवैकालिक में कहा गया है 'पिट्ठिमंसं' न खाएज्जा। यदि आपकी आत्मप्रशंसा करने की गलत आदत हो तो इस पर चिंतन करके उसे दूर करने का प्रयास करें 'बड़ा बढ़ाई ना करे, बड़ा न बोले बोल' इस प्रकार अपने दोषों पर चिंतन करके अपने मन के कचरे को बाहर निकालें और उसे पवित्र रखने का प्रयास करें। मात्र घर की सफाई करके संतुष्ट नहीं होना है यही दीपावली का 'व' हमें संदेश देता है।

दीपावली का चतुर्थ अक्षर 'ली' हमको प्रभु शक्ति में लीन बनने की प्रेरणा देता है। जो प्रभु भक्ति में लीन होता है वह स्व में लीन हो सकता है। परमेश्वर के परमरागी श्री गौतम स्वामीजी परमात्मा के विरह से व्यथित हो गए। प्रभु भक्ति से उनको स्वयं में लीन होने की शक्ति प्राप्त हुई। स्व का भान आया और वीतराग बन गए।

अमावस्या के दिन जब प्रभु का निर्वाण हुआ तो 50 हजार केवली शिष्यों के गुरु, चार ज्ञान के धनी श्री गौतम स्वामीजी ने वीर प्रभु के विरह में एक बालक की तरह विलाप किया। सैंकड़ों साधु साध्वीजी भगवन्त ने अनशन स्वीकार कर लिया। प्रभु की विरह वेदना से देव भी दुखी हुए। अतः प्रभु का निर्वाण दिवस यानी प्रभु के विरह का दिन हमें खा-पीकर मौज करके नहीं मनाना चाहिए बल्कि तपत्याग करके धर्म ध्यान में लीन होकर प्रभु का निर्वाण दिवस मनाएँ। प्रभु के विरह को महसूस करें।

रात्रि भोजन महापाप

(साध्वीजी श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

पूर्वकाल में रात्रिभोजन त्याग के उपदेश की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि श्रावकवर्ग रात्रिभोजन को महापाप मानते थे। रात्रि भोजन त्याग एवं जमिकंद त्याग ये जैनों की पहचान थी किन्तु अब कंदमूल का भक्षण करना, रात्रि भोजन करना सामान्य बात हो गई है। रात्रि भोजन करने को चाहे सामान्य पाप मानें परन्तु रात्रि भोजन नरक का प्रथम द्वार कहा गया है। नरक में जाने का नेशनल हाइवे- रात्रि भोजन।

सूर्यास्त से लेकर दूसरे दिन सूर्योदय तक यदि भोजन किया जाए तो वह रात्रि भोजन कहलाता है।

रात्रि भोजन त्याग के मुख्य कारण - 1. सर्वप्रथम परमात्मा की आज्ञा का उल्लंघन होता है और यदि हमें प्रभु आज्ञा का बहुमान हो तो रात्रि भोजन त्याग कर देना चाहिए।

2. सूर्यास्त के पश्चात् अनेक सूक्ष्म जीवों की उत्पत्ति होती है। उन्हें विद्युत प्रकाश में भी देखा नहीं जा सकता। ऐसे जीव भोजन में मिलकर नष्ट हो जाते है। हिंसा का भयंकर पाप लगता है।

3. रात्रि भोजन करने से काम-विकार बढ़ते हैं।

4. रात्रि भोजन स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त ही हानिकारक है। रात्रि में हृदय और नाभिकमल सिकुड़ जाने से और जठराग्नि मंद हो जाने से रात्रि में खाया हुआ भोजन पचता नहीं है। पेट भारी हो जाता है, कब्ज, अजीर्ण, गैस बढ़ जाने से हार्ट अटैक, बैचेनी, प्रमाद, जड़ता आती है प्रातः उठने का मन नहीं होता, शरीर में दर्द, सर्दी, गंदी डंकार, उल्टी-दस्त, आँखों को हानि, दाँतों में सड़न, चिड़चिड़ाहट, याददाश्त कमजोर होती है आदि अनेक रोगों का घर शरीर बन जाता है।

भोजन पचाने के लिए आवश्यक ऑक्सीजन सूर्य की उपस्थिति में ही प्राप्त होता है। सूर्य की अल्ट्रावायलेट नाम की किरणों से जंतु बाहर नहीं आते हैं एवं सूर्यास्त होते ही जन्तु चारों ओर उड़ने लग जाते हैं। इस कारण डॉक्टर भी मेजर ऑपरेशन रात को नहीं करते। रात में बनाए हुए ताजे भोजन में भी हजारों कीटाणु पैदा होते हैं। जो शरीर में जाकर अनेक रोग उत्पन्न करते हैं। यदि भोजन में चींटी आ जाए तो बुद्धि का नाश हो जाता है। खाने में जूं आ जाए तो जलोदर रोग हो जाता है। मक्खी आ जाए तो उल्टी हो जाती है। खाने में मकड़ी आ जाए तो कुष्ठ रोग होता है। खाने में बाल आ जाए तो स्वर भंग होता है आवाज बैठ जाती है। एवं विषैले जन्तु की लार भोजन में आए तो मृत्यु हो जाती है। रात्रि में भोजन करते समय अपने आयुष्य का बंध हो जाए तो नरक-तिर्यंच के आयु

का बंध होता है एवं भविष्य में जैनधर्म की प्राप्ति भी अति दुर्लभ हो जाती है। इस प्रकार अनेक दृष्टिकोणों से विचार करने पर रात्रि भोजन में अनेक दोष ज्ञात होते हैं। अतएव इसकी गणना अभक्ष्य में की गई है।

सूर्यास्त के कुछ समय पूर्व भोजन करने में क्या लुट जाता है ? आपको भूख नहीं लगे तो थोड़ा कम खालें परन्तु रात्रि भोजन जैसा महापाप तो नहीं करना चाहिए। कई लोग तो जानबूझकर शौक से रात को खाते हैं, परन्तु वे जानते नहीं कि इस मजे के पीछे भयंकर सजा तैयार है। आधुनिक जमाने में कितनी ही कुरीतियाँ आईं। ऐसे रात्रि भोजन भी एक फैशन हो गया है।

'योगशास्त्र ग्रंथ में रात-दिन देखे बिना खाने वाले मनुष्य को सींग और पूँछहीन पशु की उपमा दी गई है। और वह नर पिशाच है, ऐसा लिखा है। दिन को छोड़कर रात्रि में खाने वाले मानो रत्न को छोड़कर काँच ग्रहण करने वाले की तरह मूर्ख हैं। रात्रि भोजन करने से घर की महिलाओं की प्रतिक्रमण आदि धार्मिक क्रियाएँ नहीं हो सकती। सुबह से रात्रि तक रसोई घर में ही रहना पड़ता है। घर के झूठे बर्तन दूसरे दिन के प्रातःकाल तक पड़े रहते हैं जिससे असंख्य जीव मरते हैं।

योग शास्त्र में कहा है रात में निंरकुश भ्रमण करते हुए भूत-पिशाच व्यंतर देव अन्न को झूठा कर देते हैं जिससे अनेक व्यक्तियों को भूत, प्रेत की बाधा से पीड़ित होना पड़ता है।

रात को कौन खाता है ? उल्लू, बिल्ली, गिद्ध, चूहा आदि। यदि हम रात्रि भोजन करेंगे तो हमें भी मांसाहारी पशु की योनी में जाना पड़ेगा।

जो मनुष्य दिन के आरंभ और अंत की दो घड़ी छोड़कर भोजन करता है वह पुण्य का पात्र बन जाता है। उत्सर्ग मार्ग यह है कि प्रातः सूर्योदय के दो घड़ी पश्चात और सांय सूर्यास्त से दो घड़ी पूर्व भोजन करना चाहिए।

शरीर के लिए सात्विक और पौष्टिक आहार लेना जितना आवश्यक है, उतना ही नियत समय पर आहार लेना भी।

आज के वैज्ञानिकों ने ही नहीं, विदेशी कवियों ने भी रात्रि भोजन के त्याग का अनुमोदन किया है। इटली के एक कवि की कविता का सारांश यह है-

पाँच बजे उठना और नौ बजे भोजन करना,
पाँच बजे भोजन करना और नौ बजे सोना।

इस जीवन क्रम से 99 वर्ष तक व्यक्ति जीवित रह सकता है।

रात्रि भोजन महापाप है, इस विषय में शास्त्रीय प्रमाण महाभारत में कहा है- जो मांस, मंदिरा, रात्रि भोजन तथा कन्दमूल का भक्षण करते हैं, उनके द्वारा आचरित तप, जप सभी निष्फल हो जाते हैं।

अन्यधर्म मार्कण्डेय ऋषि ने पुराण में कहा है- दीनानाथ सूर्य के अस्त हो जाने पर पानी पीना रुधिरपान के बराबर है और

भोजन करना मांस भक्षण के समान है।

पूर्वाचार्य की सज्झाय में कहा है– रात्रि भोजन में अनेक दोष हैं। विस्तार से क्या कहें ? यदि एक करोड़ वर्ष तक केवल कथन करें तब भी पार नहीं आता।

रात्रि भोजन का त्याग करने वाले पुण्यात्माओं को एक मास में 15 उपवास का फल मिलता है। आजीवन त्याग करने वाले को आधी जिन्दगी के उपवास का फल मिलता है।

भोजन के शुद्धभांगे – 1. दिन में बनाया हुआ भोजन रात को खाना – अशुद्ध।

2. रात को बनाया हुआ रात को खाना – अशुद्ध।

3. रात को बनाया हुआ दिन में खाना– अशुद्ध।

4. दिन के समय यतना–विवेक पूर्वक बनाया हुआ भोजन दिन में खाना यही एक शुद्ध भाग है।

सामुहिक रात्रि भोजन का त्याग तो करना ही चाहिए – सामूहिक रूप से जो पाप किया जाता है वह सामूहिक रूप से उदय में आता है जैसे भूकम्प में, एक्सिडेन्ट से, अतिवृष्टि या अनावृष्टि से एक साथ कितने ही व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है, घायल हो जाते हैं। रात्रि भोजन भी महापाप है अतः शादी–ब्याह, पार्टी एवं रिसेप्सन आदि प्रोग्राम दिन में ही रखना चाहिए। रात्रि में करने से रात्रि भोजन का महापाप लगता है। बड़े–बड़े हेलोजन लगाए जाते हैं, जिसमें कितने ही जीव उड़–उड़कर आते हैं एवं मर जाते हैं। जो रात्रि भोजन करवाता है सारे पाप का भागी वह होता है। क्योंकि रात्रि भोजन करवाने के मूल में वो ही है। मेहमान तो आकर भोजन करके चले जाएंगे किन्तु इस मजा की भयंकर सजा आपको मिलेगी ही, यह भूल मत जाना।

सामूहिक रात्रि भोजन त्याग करने से लाभ – सर्वप्रथम प्रभु की आज्ञा का पालन होता है। लाइट डेकोरेशन का खर्चा बच जाता है। यदि भोजन बच जाए तो दिन में गरीबों में भी वितरित किया जा सकता है। वेस्ट होने से बच जाता है। झूठे बर्तन रातभर पड़े रहने के बजाय दिन में ही साफ हो जाते हैं एवं शेष साफ–सफाई भी दिन के उजाले में हो जाती है। जीवों की विराधना से बच जाते हैं। आदि अनेक लाभ होने से व्यक्ति को सामूहिक रात्रि भोज करवाने का त्याग करना ही चाहिये।

अज्ञानी पक्षी भी रात्रि भोजन नहीं करते, वे रात को विश्राम करते हैं। तब इस पाप को अनन्त दुःख का मूल समझकर मानव को भी रात्रि भोजन का त्याग करना समुचित है। सैकड़ों व्यक्ति ऐसे होंगे जो रात्रि भोजन त्याग करते हैं एवं दृढ़ता से नियम का पालन करते हैं। कितनी ही समस्याओं का सामना करते है किन्तु रात्रि भोजन नहीं करते हैं। कितने व्यक्ति रात्रि भोजन का नियम पालने के लिए एक टाइम भोजन करते हैं, एकासना करते है। भूखे रह जाते हैं किन्तु रात्रि भोजन नहीं करते हैं।

जो अकारण रात्रि भोजन करते हैं उनकी दयनीय दशा विचारने योग्य है।

आशीर्वाद

(साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी म.सा.)

आशीर्वाद अर्थात् अन्दर से निकली हुई दुआ... हृदय के उद्‌गार... !ब्लेसिंग आदि।

संस्कृत में आशीर्वाद 10 काल में से एक काल है जिसका उपयोग किसी को आशीर्वाद देने में, प्रेरणा देने में किया जाता है।

'आशीर्वाद' एक ऐसा शब्द है, जिसके कारण व्यक्ति कहाँ से कहाँ पहुँच जाता है। रोड़पति करोड़पति बन जाता है, गरीब धनवान बन जाता है, बुद्धिहीन बुद्धिमान बन जाते हैं, गुरु के आशीर्वाद से शिष्य आचार्य बन जाता है। पुत्र हो, भक्त हो या शिष्य हो जो भी अपने पूज्यजन की भाव से, बहूमान से सेवा करता है उनका भौतिक के साथ आध्यात्मिक विकास भी होता है। किसी को कोई अद्‌भुत शक्ति प्राप्त होती है, कोई लब्धि प्राप्त होती है वो सिर्फ और सिर्फ गुरु के आशीर्वाद से, गुरु की कृपा से ही प्राप्त होती है।

गुरु के आशीर्वाद से कुमारपाल राजा 18 देश के राजा बने और गुरु के दिल में ऐसे बस गए कि गुरुदेव श्री हेमचंद्राचार्य ने कुमारपाल के हित के लिए 'वीतराग स्तोत्र' की रचना की। यतीन्द्रसूरीजी के आशीर्वाद से वर्तमान गच्छाधिपति राष्ट्रसंत परम पूज्य आचार्य भगवान श्री जयंतसेनसूरिजी एक महान आचार्य बने जिन्होंने जिनशासन के लिए अनेक कार्य किये। हीरसूरी के आशीर्वाद से अकबर जो 500 चिड़ियों की जीभ खाता था, वो बंद कर दी। राजा विक्रमादित्य ने सिद्धसेन दिवाकर के आशीर्वाद से प्रेरणा के अनेक महान कार्य किये। बप्पभट्टसूरीजी के आशीर्वाद से आमराजा ने भी महान कार्य किये। गुरु के आशीर्वाद से एक भिखारी संप्रतिराजा बन जाता है। महावीर स्वामी के आशीर्वाद से गौतमस्वामी को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई। मेरी 2 साल पहले बहुत तबीयत बिगड़ गई थी। गुरुदेव के आशीर्वाद से ही ठीक हुई हूँ। जितने भी महान आचार्य बने, प्रवचनकार, लेखक आदि बने सब गुरु के आशीर्वाद से ही बने। गुरु का परोक्ष या प्रत्यक्ष आशीर्वाद सभी पर बरसता ही रहता है।

आशीर्वाद किसको प्राप्त होता है ? और किसको नहीं ? आशीर्वाद उन्हीं को मिलते हैं जो गुरु के प्रति, अपने वडील के प्रति पूर्ण वफादार रहते हैं, विनयवान होते हैं, निराभिमानी होते हैं जिनका तन-मन-धन गुरु के चरणों में समर्पित है, जो गुरु की प्रत्येक इच्छा को जानता है, समझ

सकता है, स्वीकार कर सकता है। जिसको गुरु के प्रति अटल श्रद्धा हो, जिसका संपूर्ण जीवन गुरु चरणों में समर्पित है, जिसके रोम-रोम में, श्वास-श्वास में गुरु, गुरु के वचन, गुरु की आज्ञा बसी है। उन्हीं को गुरु का अन्तर से आशीर्वाद प्राप्त होता है।

जो मायावी होते हैं अर्थात जो गुरु के आगे अच्छा बनने का दिखावा करते और बाहर से उनकी निंदा करते हैं। जो अपनी मनोकामना पूर्ण हो जाए ऐसी लालच की भावना रखकर आते हैं और अन्दर से तो उनके गुरुदेव के प्रति श्रद्धा, भक्ति, बहुमान नहीं रहता है। जो गुरु की आशातना करते हैं ऐसे लोगों को गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त नहीं होता है। कहते हैं-

जो मांग- मांग करता है उसको कुछ नहीं मिलता है और जो कुछ नहीं मांगता है उसको सब कुछ मिल जाता है।

आशीर्वाद कब लेना चाहिए ?

1. जब बच्चे स्कूल जाते हैं तब माता-पिता, दादा-दादी आदि वरिष्ठजनों का चरण स्पर्श करके उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।

2. जब गुरु प्रसन्न मुद्रा में हों, स्वस्थ हों, चिंता से मुक्त हों, शांत हों तब आशीर्वाद लिया जाता है।

3. घर से बाहर निकलते समय वरिष्ठ जनों का और उपाश्रय से बाहर निकलते समय गुरु का आशीर्वाद लिया जाता है।

4. कोई अच्छे काम की शुरूआत करने के लिए गुरु से या वरिष्ठ से आशीर्वाद लिया जाता है।

5. कोई नये सूत्र की शुरूआत करने के लिए, तपस्या आदि करने के लिए गुरु का आशीर्वाद लिया जाता है।

आशीर्वाद क्यूं लेना चाहिए ?

गुरु का आशीर्वाद इसलिए लेना चाहिए कि- हम भी गुरु के जैसे सरल और सहज बनें, उनके गुण हमारे अन्दर प्रगट हों जाएं... हमारी विषय-कषाय रूपी आग बुझ जाए ... हम उनकी आज्ञानुसार जीवन जी सकें...हम मोक्ष मार्ग में आगे बढ़ें, हमारी देव-गुरु-धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़े...सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति हो... हमारी बुद्धि निर्मल बने... हम गलत कार्यों से पीछे हटें... आदि के लिए आशीर्वाद लेना चाहिए। लेकिन आजकल के ज्यादातर लोग इसलिए गुरु का आशीर्वाद लेना चाहते हैं कि मेरा घर/दुकान अच्छी चले, मेरे बेटा/बेटी की शादी हो जाए, नौकरी लग जाए, बीमारियां ठीक हो जाए, मैं पैसे वाला बन जाऊं, मुझे पद मिल जाए... आदि भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए गुरुदेव से आशीर्वाद लेते हैं। यह गलत है। ऐसे भाव से आशीर्वाद नहीं लेना चाहिए।

गुरु किस चीज का आशीर्वाद देते हैं ?

1. गुरुदेव सिर्फ दो चीज का ही आशीर्वाद देते हैं... 'धर्मलाभ' अर्थात् तुम्हें सर्वविरती धर्म की प्राप्ति हो और 2. 'नित्थार पारगाहो' अर्थात् संसार सागर से पार हो जाओ।

मेरे गुरुजी ने मुझे आशीर्वाद पर लेख लिखने को कहा। गुरुजी के आशीर्वाद से पहली बार लेख लिखा गया। गुरु के आशीर्वाद के बिना कुछ भी कार्य करना असंभव है। सब कुछ गुरु की कृपा से ही प्राप्त होता है, गुरु के आशीर्वाद से सब कार्य सफल हो जाते हैं। जीवन में हमेशा दो बातें याद रखनी चाहिए 1. जो कुछ भी अच्छा कार्य होता है वह गुरु के आशीर्वाद से ही होता है 2. और कुछ भी बुरा कार्य होता है वह अपने कर्मों के कारण होता है।

लोकस्त

एक नजर कृपा की कर दो जयंतसेनसूरि प्यारा ओ लोक सन्त मनोहरा ।
जो में हूं यदि अति पतित तो पावन कर दो काया ।।
मेरे मन से गायब कर दो जग की झूठी माया ।
ओ रिद्धि सिद्धि के दाता मेरी खाली झोली भर दो ।।एक।।
जिसको मैंने अपना समझा वो ही धोखा देते ।
भाईए बन्धु और मित्रगण सबही मजा है लेते ।।
सच कहने की ताकत मुझमें कूट-कूट कर भर दो ।।एक।।
सुरेश समीर हे शरण तुम्हारे रख दो सर पर हाथ ।।
ज्योति तेरे द्वार खड़ी है कर दो उसे सनाथ ।
आश्रय की है यही प्रार्थना घर सुख सम्पति से भर दो ।।एक।।

– सुरेश समीर, राणापुर

किसने -किससे बोध पाया

इन्द्रभूतिजी ने	– महावीर स्वामी से	अरणिक मुनि ने	– दीक्षिता माँ से
चण्डकौशिक ने	– महावीर स्वामी से	इक्षुकर राजा ने	– रानी कमलावती से
बाहुबली ने	– ब्राह्मी सुन्दरी से	धन्नाजी ने	– सुभद्रा से
रथनेमि ने	– राजमती से	राजा सयंति ने	– गर्दभिल्ल मुनि से
कौशावेश्या ने	– स्थूलिभद्र से	मृगावती ने	– चन्दनबाला से
श्रेणिक राजा ने	– अनाथी मुनि से	कनकावती ने	– सुव्रता साध्वी से
जम्बु स्वामी ने	– सुधर्मा स्वामी से	परदेशी राजा ने	– श्री केशिकुमार श्रमण से

चिंतन चांदनी-5

* आर्तध्यान तिर्यंचगति का कारण है और शैद्रध्यान नर्वगति का मार्ग है। इसलिए जीवन में एक पल के लिए भी आर्तध्यान या रोद्रध्यान करना नहीं चाहिए।

- आचार्य जयन्तसेनसूरि

* भारतीय वीतराग संस्कृति त्याग प्रधान है, जैन संत जीता-जागता उसका प्रमाण है। 'जय महावीर' और 'जय जिनेन्द्र' के शुभ घोष से लोग समझ जाते है कि ये जैन की संतान है।

- मुनि सिद्धरत्नविजय

* कोई भी कार्य के पीछे फल की अपेक्षा रखनी नहीं चाहिए क्योंकि अपेक्षा दुख की जननी है।

- मुनि चारित्ररत्नविजय

* मेरु जितने दुःख और राई जीतनी निर्जरा अर्थात् आए जो धर्म करते हो उसके पीछे समझ नहीं है।

- मुनि निपुणरत्नविजयजी

* क्षेत्र की स्पर्शना करना शक्य है परन्तु काल की स्पर्शना करना अपक्य है।

- मुनि प्रसिद्धरत्नविजय

* धन प्राप्ति, सुख प्राप्ति, विजय आदि की तरह पुत्र आदि की प्राप्ति में मुख्य कारण धर्म ही है, जीभ मंत्र तो सैनिकों की भांति सहायक भाव भजते है।

- मुनि अपूर्वरत्नविजयज

* मनुष्य की प्राप्ति के बाद देवता के पास कुछ इच्छा रखे तो वो व्यक्ति समझदार नहीं है।

- मुनि प्रत्यक्षरत्नविजय

* अनंत जीव, अनंत बार कुदरत के पास जाते है उनमें से 1 जीव को मनुष्यभय मिलता है बाकी सभी दुर्गति में जाते है। सोचना आपको मिला हुआ मनुष्यभव कितना दुर्लभ है।

- मुनि जिनागमरत्नविजय

* व्यक्ति को संसार में कोई समस्या आती है तो समझना वो अभी तक धर्म नहीं समझा।

- मुनि पवित्ररत्नविजय

बाल शाश्वत....

(मुनिराजश्री जिनागमरत्नविजयजी म.सा.)

प्रिय बच्चों !

स्नेहभरा धर्मलाभ...

आप सभी स्कूल या कॉलेज में पढ़ाई करने हेतु जाते होंगे लेकिन धर्म क्या है ? आत्मा कैसी है ? मोक्ष कहाँ है ? यह सारी बातें शायद आप सभी को वहाँ सीखने नहीं मिलती होगी । पर ये सब जाने बिना तो चलेगा ही नहीं ना ? इसलिए हम सभी के प्राण प्यारे गुरुदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से धर्म की बातें सरलता से सीखाने हेतु 'बाल शाश्वत' मैं प्रयत्न करूंगा। आप सभी उसे पढ़कर आपको होने वाले फायदो से हमें अवगत कराना ।

आज मेरी पहली हितशिक्षा में मैं आपको धर्म का महत्व बताऊँगा आप उसे ध्यान से पढ़ना ।

* धर्म के प्रभाव से हमें मनुष्य जन्म मिला है।
* धर्म के प्रभाव से अच्छे माता-पिता और सद्गुरु मिले हैं।
* धर्म के प्रभाव से स्वस्थ शरीर, बढ़िया ताकत, खूबसुरती मिली है।
* धर्म के प्रभाव से पैसे, बँगला और गाड़ी मिली है।

अब अगर हम धर्म नहीं करेंगे और इन सारी अच्छी चीजों का उपयोग करेंगे तो हमारा पुण्य पूरा हो जायेगा फिर तो मनुष्य जन्म, अच्छे माता- पिता, सद्गुरु, स्वस्थ शरीर यह सब कैसे मिलेगा ? इसलिए अपन सभी अच्छे और सच्चे जैनधर्म का आचरण करें बराबर ना ?

ऐसे धर्म के आचरण करने हेतु इस बाल शाश्वत में गुणों की बातें, कहानी, बाल तत्व, संदेश, गेम आदि बताया गया है और अंत में आप सभी का 'हेल्थ' अच्छा रहे उसकी टिप्स भी दी गई है उसका भी पूरा पालन करें ।

- मुनि जिनागमरत्नविजय

गुण शाश्वत = ज्ञानोपासना

ज्ञान दिव्य ज्योति है

अज्ञान घना अंधकार है

ज्योति को प्राप्त करने और अंधकार दूर भगाने यहाँ जो टिप्स दी गई है उसका पालन करने से आप सभी स्कूल और पाठशाला में अव्वल आयेंगे ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है ।

तो बच्चों चलो जल्दी - जल्दी ये सारी टिप्स पढ़कर उसका अमल करना

शुरू करो ।

ज्ञान प्राप्त करने हेतु – * एकाग्रता से पढ़ाई करो । * शांति से पढ़ाई करो ।* विनय से पढ़ाई करो ।* शिक्षक को आदर सम्मान दो ।* पाठशाला में नियमितता रखो।* पुस्तक को पटको नहीं .* कॉपी-किताब पर बैठो नहीं ।* कॉपी-किताब * मोड़ना नहीं ।

याद रखो भाई ! आप विद्यार्थी हो * **आपका उच्चारण–** अक्षर साफ सुथरे चाहिए। * फेशन और व्यसन से दूर रहो । * व्यवहार अच्छा बनना चाहिए। * पढ़ाई में किसी की ईर्ष्या मत करो । और हाँ ! अक्षर वाले कपड़े कभी मत पहनो। यह सब करने से ज्ञानावरण कर्म टूटेगा और आप बन जाओगे ज्ञानवान ।

शास्त्रों में 6 प्रकार के मनुष्यों का वर्णन आता है। उनके नाम और व्याख्या यहाँ दी गई हैं आपका नंबर कौन से मनुष्य में आता है वो आप देखकर अपने मार्क भी देखो।

1. अधमतम– ये मनुष्य सभी को दुःख देने की चेष्टा करता है।

2. अधम– ये मनुष्य सिर्फ खुद ही सुखी बनने का प्रयत्न करता है, स्वार्थी है।

3. विमध्यम– ये मानव अपने परिवार को और खुद को सुखी करता है।

4 मध्यम– ये मनुष्य केवल अपने नजदीक रहने वाले सदस्यों को सुखी बनाता है।

5 उत्तम– यह मानव सभी को सुखी करता है और खुद मोक्ष के लिए प्रयत्न करता है।

6 उत्तमोत्तम– यह मानव संपूर्ण विश्व को सुखी करता है और सभी जीवों को मोक्ष ले जाने का भाव रखते हुए खुद भी मोक्ष जाने का प्रयत्न करता है।

अगर आप 1 या 2 नंबर के जीव हों तो 0-20 मार्क, 3 नंबर में 40 मार्क, 4 नंबर के मनुष्य को 60 मार्क, 5 नंबर में 80 और 6 नंबर में 100 मार्क दिये हैं । इसलिए हम सभी 5 या 6 नंबर के मनुष्य बनकर धर्ममार्ग से अपना जीवन बनाने का प्रयत्न करें।

बालकों की कहानी

एक राजा अपने दुर्व्यसनी पुत्र से बहुत ही दुःखी थे। उन्होंने पुत्र का व्यसन दूर करने हेतु एक वैद्य को पुत्र की देखरेख में रख लिया। वैद्य ने राजपुत्र को कहा की कल से आप व्यसन की मात्रा दुगुनी कर दो। राजपुत्र चौंका किन्तु अनन्तः प्रसन्न होकर राजकुमार ने वैद्य को पूछा- यह व्यसन दुगुना करने से मुझे क्या लाभ होगा ?

वैद्य ने बताया की राजकुमार आपको 4 लाभ होंगे इससे ।

1. चोर भाग जायेंगे 2. आपका शरीर दुबला नहीं होगा 3. हमेशा

बैठने हेतु वाहन मिलेगा 4. बुढ़ापा कभी नहीं आयेगा। राजपुत्र भी मूर्ख नहीं था कि वो वैद्य की बात पर शंका न करे इसलिए फिर राजपुत्र ने वैद्यजी से पूछा आप मुझे कृपा करके यह लाभ स्पष्ट समझायें तब वैद्य ने बताया कि व्यसन करने से 1. रात भर खांसी चलती रहेगी तो चोर भाग ही जाएंगे 2. सूजन और बादी से शरीर मोटा हो जाएगा 3 पैरों में चलने की शक्ति न रहने से वाहन का उपयोग करना पड़ेगा और 4. जवानी में मौत आयेगी तो बुढ़ापा कहाँ से आयेगा । यह उत्तर सुनते ही राजपुत्र इस तरह चौंका जैसे किसी ने बिजली का करन्ट छुआ दिया हो। वह चीख उठा मैं आज और अभी ही सारे व्यसन का त्याग करता हूँ । मुझे मरना नहीं, जीना है और खुश रहना है।

बच्चों ! आप भी ध्यान रखें की जीवन में खुश रहना हो तो कभी व्यसन न करें । कभी -कभी तो चाय, सुपारी आदि भी व्यसन के राह पर ले जाता है इसलिए उससे भी दूर रहे।

ज्ञान गम्मत

यहाँ दिये गये शब्द में से 1 शब्द अलग है उसे दूर करो ।

1. नवकार, परमात्मा, लोग्गस, शत्रुंजय 2. तप, ज्ञान, चारित्र, दर्शन 3. संज्ञी, असज्ञी, पर्याप्त, पुण्य, 4. गाँव, नगर, शहर प्रांत, 5. ध्वज, थाली, दण्ड, कलश 6. धूप, दीप, केसर, नैवेद्य 7. 68, 5, 9, 2, 8. मुंहपत्ति, चरवला, ओघा, डंडासण 9. जन्म, दीक्षा, लग्न, केवलज्ञान 10. दान, तप, धर्म, भाव।

उत्तर पीछे दिए गए हैं उससे आपका लेवल चेक करें ।

श्लोक शाश्वत

पूजनं देवराजस्य, सद्गुरोः क्रमवन्दनम्,
स्मरणं मन्त्रराजस्य, सर्वं पापं व्यपोहति।।

अर्थ–देवाधिदेव का पूजन, सद्गुरु को किया हुआ वंदन और मंत्रराज का स्मरण सभी पापों का नाश करता है ।

बच्चों यहाँ दिया गया श्लोक और उसका अर्थ आप याद करना क्योंकि 1 श्लोक याद करने से अपने बहुत सारे ज्ञानावरणीय कर्म क्षय होते हैं और हमारी ज्ञानशक्ति भी बढ़ती है।

कथानुयोग की वाचना

एक बार पूज्यपाद हेमचन्द्राचार्य म.सा. पाटण नगरी में प्रवेश कर रहे थे तब उनकी पहनी हुई कामली बहुत ही पुरानी और मैली थी, इसे देखकर कुमारपाल महाराजा लज्जित हुए और उन्होंने हेमचन्द्राचार्य गुरुदेव को कहाँ ....!

गुरुदेव !! ' आप पाटण नगरी में प्रवेश कर रहे हो तब अच्छी कामली पहनिए क्योंकि मैं राजा हूँ और मेरे वहाँ आपके प्रवेश पर यह कामली शोभा

नहीं देती। तब हेमचन्द्राचार्यजी म.सा. ने कहा भाई तुम जो नगर में रहते हो वहाँ के कोई जैन श्रावक ने मुझे यह कम्बल वहोराई है। इसलिए यह तो मुझे निर्दोष ही मिली है किन्तु आप सोचो आपके नगर में से जिन्होंने मुझे यह कम्बल वहोराई वह कितना गरीब होगा। आप उनके लिए कुछ करो। क्योंकि... 'सामर्थ्ये सति दानेन, सज्जने, दुर्जने समः यो नैवाऽजनि जानेस्य वसुधायं मुधा जनिः।

अर्थात- सामर्थ्य होने के बावजूद भी सज्जन और दुर्जन को दान न करने वाले का जन्म पृथ्वी पर निष्फल है।

यह सुनकर कुमारपाल महाराजा प्रतिवर्ष 1,25, 000 लाख स्वर्ण मोहरे दान साधार्मिक भक्ति में देने लगे।

प्रिय बच्चों !! आप भी अभी से छोटे-छोटे दान करना शुरू कर देना जिससे अपना जीवन सफल बन जाये।

तत्त्व दर्शन

बच्चों जो व्यक्ति रात्रि को भोजन करता है, जमीकंद, अभक्ष्य का खान-पान करता है वो मरकर सीधा नर्क या पशु-तिर्यंच गति में जाता है। आज के समय में स्कूल, कॉलेज में अभ्यास करने वाले विद्यार्थी नर्क के बारे में माने या न माने लेकिन सत्य तो सत्य ही है। चलो अपन सभी नर्क गति कैसी होती है वो समझते हैं।

अपन जहाँ रहते हैं उससे ठीक 1,80, 000 योजन अर्थात् 21,60, 000 कि.मी. नीचे पहली नरक है। इस तरह अलग-अलग अंतर पर सात नरक हैं।

पहली नरक रत्न से बनी है और वहाँ विशेष रत्न होते हैं इसलिए उसका नाम रत्नप्रभा है, दूसरी नर्क में कंकर ज्यादा हैं इसलिए उसका नाम शर्करा प्रभा है फिर तीसरी नर्क में मिट्टी, चौथी में कादव, पाँचवी नर्क में धूम्र, छट्टी नर्क में अंधकार और सातवी नर्क में बहुत ही ज्यादा अंधकार है इसलिए उनका भी नाम पालुका प्रभा, पंक प्रभा, धूम प्रभा, तमः प्रभा और तमः स्तम प्रभा दिया गया है।

सभी नर्क में बहुत ही कीचड़, खून, माँस आदि की दुर्गंध होती है, यह दुर्गंध कोई भी जीव सहन नहीं कर सकता। (क्रमशः)

यहाँ दिए गए सवाल के जवाब लिखें :- 1. तीसरी नर्क का नाम क्या है ? 2. सभी पाप का नाश करता है ? 3. शिक्षक को क्या देना चाहिए ? 4. उत्तमोत्तम व्यक्ति की व्याख्या लिखो ?

ज्ञान गम्मत के उत्तर - (1) लोगस्स (2) तप (3) पुष्य (4) शहर (5) थाली (6) केसर (7) 68 (8) चखना (9) लग्न (10) धर्म।

सामान्य प्रश्नोत्तरी

(संकलन- मुनिराजश्री तारकरत्नविजयजी म.सा.)

* दिन में सोये रात में रोये (उत्तर- मोमबत्ती) । * ए,बी. का पिता है बी कहता है मैं पुत्र नहीं हूँ (उत्तर - पुत्री) । * बिना आग के कौन जलाती है (उत्तर- ईर्ष्या, तृष्णा, चिंता, कर्जदारी, नवजवान, कुंवारी लड़की, विधवा, बहु, बेटी) * वशीकरण का सिद्ध मंत्र क्या है ?(उत्तर- अभिमान का त्याग, निःस्वार्थ सेवा, मधुर भाषण, सत्संग और सद्व्यवहार) * सुख कहाँ है (उत्तर अच्छे आचरण में) * वायु से भी अधिक गति किसकी है (उत्तर-मन और मस्तिष्क) * सबसे बड़ा मकान कौन सा है जो कभी सकड़ा नहीं पड़ा (उत्तर-पृथ्वी) * जीवन मरण का चिन्ह क्या है ? (उत्तर- सांस) * कामदेव की स्त्री का नाम क्या है ? (उत्तर- रति) * फूल कौन सा उत्तम है (उत्तर-जाई) * कन्या विवाह के बाद क्या करे (उत्तर- सासरे जाये) * दीवार घड़ी में एक का अंक कितनी बार आता है (उत्तर- पाँच बार) * दीवार घड़ी में दो का अंक कितनी बार आता है (उत्तर-दो बार) * सौ रुपये हैं और सौ बर्तन लाना है जिसमें एक तपेली पाँच रुपये में , एक रुपये की चालीस कटोरी, तीन रुपये की एक थाली है । (उत्तर - उन्नीस तपेली, अस्सी कटोरी, एक थाली)

1. तीन अक्षर का मेरा नाम आता है रहने के काम, मध्य कटे तो बन जाता है मन, प्रथम कटे तो बनुं मैं कान (उत्तर- मकान)

2. रोज शाम को आती है सुबह चली जाती है, काली चादर औढ़कर लाखों मोती चमकाती है (उत्तर-रात) ।

3. छोटी सी चिड़िया, लम्बी सी पूंछ क्या करेगी चिड़िया जो कट जाये पूंछ (उत्तर-सूई धागा)

4. नदी किनारे साधु करे हरी करे हरी का जाप अभक्ष्य खाये भक्ष को छोड़े (उत्तर- बगुला)

5. 11 अक्षर का मेरा नाम उलटा सीधा एक समान (उत्तर-परसराम से मरासरप)

6. एक गुफा में कई बन्दर सबका मुँह है काला, पूछ पकड़ कर आग लगाता झटकर से उजाला (उत्तर- माचिस की डिब्बी में तीली) ।

7. बिन हवा के चल नहीं पाता, सबका मन बहलाता सबके पैरों से ठोकर खाता लेकिन वह निर्जीव कहलाता (उत्तर - फुटबाल । 8. 17 में से क्या कम करें कि 70 हो जायें (उत्तर-आ की मात्रा)

9. ऐसा कौन सा कान है जहाँ पर हम रहते हैं (उत्तर-मकान)

जिनालय दर्शन– फल

जिनालय जाने की इच्छा मात्र से	–	एक उपवास का फल
जिनालय जाने के लिए खड़े होने पर	–	दो उपवास का फल
जिनालय जाने हेतु कदम उठाने पर	–	तीन उपवास का फल
जिनालय हेतु कदम भरने पर	–	चार उपवास का फल
जिनालय के लिये थोड़ा चलने पर	–	पांच उपवास का फल
जिनालय दिखते ही	–	एक महीना उपवास का फल
जिनालय पहुंचते ही	–	छः महीने उपवास का फल
जिनालय द्वार में पहुंचते ही	–	एक वर्ष उपवास का फल
प्रभु की प्रदक्षिणा देते	–	सौ वर्ष उपवास का फल
देवाधिदेव की पूजा करते	–	हजार वर्ष उपवास का फल
स्तुति, स्तवनादि करते	–	अनंत गुण पुण्य प्राप्त होता है।

रहस्यमय जैन मंदिर

जयपुर से करीब 130–135 किलोमीटर पर एक गांव है। उसका नाम उदयपुर वाटी है। उस गांव में एक भी जैन परिवार नहीं है। छोटी सी एक पहाड़ी बनी हुई है। पहाड़ी पर दो कमरे बने हुए हैं। उस कमरे में एक करीब 11 अंगुल की चतुर्थ काल की प्रतिमा विराजमान है। मंदिर से हर रात में घुंघरु, मृदंग आदि कई तरह की आवाजें आती हैं। उस गांव का एक ब्राह्मण परिवार विगत कई वर्षों से मंदिर की सेवा कर रहा है। उस गांव के एक सज्जन ने श्री महावीरकुमारजी जैन लालसोठ वालों को यह समाचार दिया। महावीरजी ने कलकत्ता में संपतकुमार सेठी, वास्तुशास्त्री को एवं श्री राजेशकुमार जैन को जयपुर बुलाया। उस जगह का निरीक्षण किया गया। चतुर्थकाल की बड़ी ही मनमोहक प्रतिमा है। कुछ उभरे हुए चिन्ह से पद्मप्रभ भगवान की प्रतिमा होने की संभावना है। भय से उस गांव का कोई भी आदमी मंदिर के करीब नहीं जाता है। जैन समाज को इस विस्मयकारी पुरातन धरोहर पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

– वागरेचा भीकमचंद भौमराज जैन, गढ़सिवान

वर्ग पहेली - 51

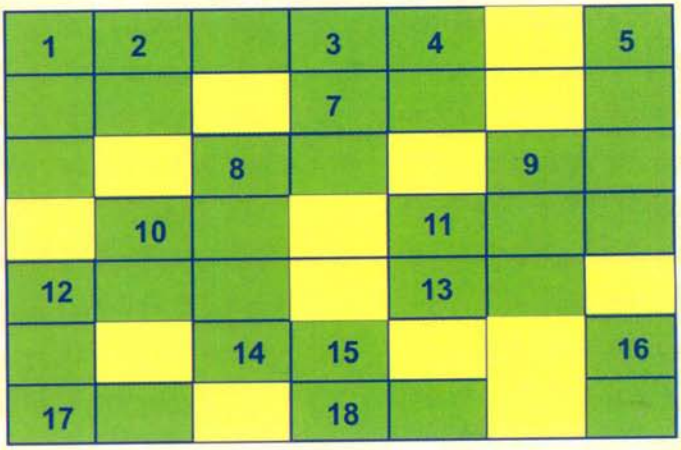

दाएँ से बाएँ –

1. परमात्मा महावीर स्वामी के शासनकाल में प्रसिद्ध एक अभव्यजीव का नाम ? (5)
6. दुर्व्यसन, बुरी टेव आदत का पर्यायवाची (2)
7. तीर्थंकर प्रभु के क्या नहीं बढ़ते है ? (2)
8. नव तत्त्वों को किसके उदाहरण से समझाया गया है ? (2)
9. किसी सर्प के मस्तक पर क्या होती है ? (2)
10. फटे हुए कपड़े पर कपड़ा लगाकर सिला जाता है उसे क्या कहते हैं ? (2)
11. दशवैकालिक सूत्र की रचना किन मुनि के लिए करी गई थी ? (3)
12. सब कुछ नष्ट हो जाना, संसार के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना है ? (3)
13. गुप्ति कितने प्रकार की होती है ? (3)
14. जंबूद्वीप कितने योजन का है ? (2)
17. यति धर्म कितने प्रकार के होते हैं ? (2)
18. क्या करने से स्त्रीवेद में उत्पन्न होते हैं ? (2)

ऊपर से नीचे –

1. ज्ञान का एक साधन ? (3)
2. आचार्य भगवान का वर्ण कैसा होता है ? (2)
3. असुर, राक्षस का पयार्यवाची ? (3)
4. शिक्षा, परामर्श ? (2)
5. मध्यान्हकाल में गौचरी जाते धूप

परिषह सहन नहीं करने से पतित मुनि का नाम ? (5)

8. गुरु बाहर से कठोर एवं भीतर से नरम होते हैं इसमें किसी की उपमा दी गई है ? (4)

9. अच्छी तरह से अध्ययन करना ? (3)

10. छह द्रव्यों में एक द्रव्य का नाम बताइये ? (2)

11. पाँच ज्ञान में से एक ज्ञान ? (2)

12. कर्मबंधन के पाँच कारणों में से एक ? (3)

15. क्रोध का प्रतिपक्षी गुण कौन सा ? (2)

16. सबसे बड़े माप वाला शाश्वत पर्वत कौन सा है ? (2)

उत्तर शीट–50

1 य	2 ती	न्द्र	3 सू	4 रि		5 भू
6 म	न		7 म	त		पे
		8 दा	न		9 इ	न्द्र
10 ध	11 रा			12 स्वा	ह	
13 न		14 न		ति		15 सू
चं		16 ग			17 सा	त
18 द	रा	र		19 हा	लि	क

* बलभद्र मुनि ने 115 वर्ष 6 महीने अखंड तप किया था।
* ढंढण अणगार ने 6 महीने उपवास किये थे।
* धन्ना कांकदी ने यावज्जीव छट्ठ के पारणे आयंबिल किये थे।
* शालीभद्रजी–धन्नाजी ने 12 वर्ष 6 महीने उग्र तप किया था।
* शिवकुमार (जंबु स्वामी का पूर्वभव) 12 वर्ष 6 महीने छट्ठ के पारणे आयंबिल किये थे।
* वीराचार्य ने यावज्जीव के पावणे अट्ठाई की थी।
* सिद्धसेन दिवाकर सूरीजी ने 8 वर्ष तक अखंड आयंबिल किये थे।

दीपोत्सव के प्रसंग पर

महावीर निर्वाण की सार्थकता

(श्री विजयसिंह लोढ़ा 'विजय' धर्मरत्न निम्बाहेड़ा (राज.))

हम सदियों से परमात्मा महावीर के निर्वाण के दीप जलाते आ रहे हैं। हमने आज तक बाहरी दीप जलाये हैं। अन्तर के दीप जलाये होते तो अन्तर के संस्कार-जाग जाते । हमने बाहरी फुलझड़ियां छोड़ी हैं। यदि अन्दर की फुलझडियां छोड़ी होतीं तो महावीर की करुणा हमारे हृदय में राज करती।

जिसके भीतर के अन्तर में प्रीति का समुद्र समा गया उसके जीवन में प्रेम का झरना अविरल शांति प्रदान करता रहेगा। तीर्थंकर महावीर जड़ के विष को चेतन्य से समाप्त करने का पुरुषार्थ करते हैं।

जब तक फूल के साथ में लगे शूल की पहचान नहीं होगी तब तक चैतन्य रूपी बाग के फूलों की खुशबू आ नहीं सकती। हमने आज तक बाहर का श्रृंगार ही किया है । महावीर के अनुसार यदि अन्दर का श्रृंगार किया होता तो धर्म का मर्म जल्दी समझ में आ जाता ।

महावीर निर्वाण और दीपोत्सव पर हम घर, दुकान और संस्थान की पुताई-सफाई करते हैं, मगर विचार करें, मंथन करें, क्या हमने आत्मा की सफाई, पुताई की या नहीं ? लाखों रुपयों के पटाखे छोड़कर हम जल, थल, और नभ के पर्यावरण को नष्ट कर रहे हैं। हम भूल जाते हैं कि पशु -पक्षी, नर और चेतन कीट-पतंगे विषैले बारूद के पटाखों से मौत के मुंह में चले जाते हैं। यह अहिंसा - मार्ग को प्रशस्त करने वाले महावीर के अनुयायियों के लिये विचारणीय प्रश्न है ? हम पटाखों से होने वाली प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष हिंसा को कैसे रोकें ?

महावीर के उपदेशों की देशना देने वाले हमारे पूज्य साधु-साध्वी और आचार्यों के मन्तव्यों - निर्देशों के अनुसार दीपावली के ज्योति पर्व पर पटाखे नहीं छोड़ने के अभियान को हम सब कैसे और कब सशक्त समर्थन देकर महावीर निर्वाण को सार्थकता प्रदान करेंगे ?

महावीर की साधना मौन अवस्था में थी। वे हर परिस्थिति में आनन्दित रहते थे। बारह वर्षों के साधना समय में उन्हें सिर्फ 365 बार आहार प्राप्त हुआ था। अनुभव के आधार पर जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त किया।

महावीर ने कहा- अपनी इन्द्रियों

को वश में करो। तुम अपने पेट को राजी करने में अपना जीवन व्यर्थ न गंवाओ। जबकि आज परिप्रेक्ष्य में तपस्या के नाम पर कितने आडम्बर रचे जा रहे हैं ? मौनावस्था के स्थान पर हम धर्म सभा में खड़े रहकर अपनी तपस्या का ढ़िंढ़ोरा पीटते हैं। धार्मिक होने का दिखावा करते हैं। वरघोड़े-बैंड बाजे के साथ निकालकर भोंडा प्रदर्शन करते हैं। क्या यह सब महावीर के अनुसार है ? एक विचारणीय प्रश्न है ?

निर्वाण का लड्डू चढ़ाने एवं गौतमरास का वाचन - श्रवण मात्र से महावीर-निर्वाण का प्रयोजन सफल नहीं हो जाता। आओ। महावीर को जानते हुए अधोलिखित विचार बिन्दुओं को अन्तरमन से मंथन करें...

* हे महावीर ! आप रात्रि भोज के विरोध में थे परन्तु वर्तमान समाज में आज भी आपके नाम से रात्रि भोज गृह चल रहे हैं। जिसमें रात्रि भोज का आनन्द लिया जा रहा है ?

* हे महावीर ! आपने तो एक वस्त्र में गृह त्याग कर दिया था परन्तु आपके नाम से अनेकानेक वस्त्र उद्योग चल रहे हैं ?

* हे महावीर । आपने वाहन में चलने का विरोध किया था किन्तु आज आपके नाम से असंख्य वाहन चलाये जा रहे हैं ?

* हे महावीर ! आपने तो अहिंसा की प्रेरणा दी। किन्तु आज आपके नाम से कितने कीट नाशक कारखाने बनाये गये।

* हे महावीर ! आपने सब आभूषणों का त्याग कर दिया था। मगर आज आपके नाम से हीरे-मोती- स्वर्ण और रजत के विशाल आभूषण-भंडारों का निर्माण हो गया।

* हे महावीर ! आपने अपरिग्रह का उपदेश दिया किन्तु आपके अनुयायी सात-सात पीढ़ियों तक का धन संग्रह कर अति लोभी बन गये।

* हे महावीर । आपने अचौर्य का पाठ पढ़ाया। मगर टेक्स चोरी के कितने मामले उजागर हो रहे है ?

हे महावीर! आप तो मोक्षगामी बन कर अमर हो गये। मगर आपके महाप्रयाण को हम निर्वाण दिवस के रूप में मनाकर आपका पावन स्मरण करते हैं। आप साक्षीभाव के प्रणेता थे। हम आपको साक्षी मानकर आपके पवित्र संदेशों के विरुद्ध आपके पूजनीय नाम का उपयोग कर रहे हैं। यही इस सदी की सच्चाई है।

जैन होना एक संयोग है। जैन परिवार में जन्म होने से कोई बिना परिश्रम जैन कहा जा सकता है। परन्तु महावीर का अनुयायी कहलाने के लिये उसे महावीर मार्ग का अनुसरण करना ही होगा।

किसी मूर्ति के चरणों में या संत-सतियों के चरणों में बैठकर क्षणिक भाव प्रकट हो सकते हैं। परन्तु महावीर

बनना है तो महावीर-मार्ग का अनुगामी बनना होगा। यह निर्विवाद है।

महावीर एक थे हम अनेक क्यों? जैन एकता का शंखनाद करें और ज्योति पर्व पर हम सब एक मंच पर एकत्र हों और पंथ-सम्प्रदाय भूलकर एक मंच पर एकत्र होकर जैन एकता को संबल प्रदान करें। यही ज्योति पर्व का संदेश है। आपके ज्ञान की दीपक जलता रहे।

तीर्थंकर महावीर जीवन के अंतिम क्षणों तक सदविचारों के प्रकाश से सभी को आलोकित करते रहे। उन्होंने अंतिम प्रवचन 'धन तेरस' के दिन दिया। उन्होंने अमावस्या के दिन निर्वाण प्राप्त किया। अंधेरे में भटक रहे किसी व्यक्ति को दीपक की रोशनी में रास्ता दिखाकर देखो, तुम्हें स्वयं दिव्य प्रकाश रूपी आनन्द की अभिव्यक्ति होने लगेगी।

सद्भाव के क्षण

जीवन अनमोल है । इसका प्रत्येक क्षण सद्भाव, समभाव तथा सद्व्यवहार में जीनेकी मांग करता है। समय का पहिया निरंतर गतिमान है, वह किसी के लिये ठहरता नहीं, गया वक्त लौटना नहीं है, यह सभी भलीभांति जानते है लेकिन बीते हुए पल को पश्चाताप के योग्य न छोड़ना, उसे पूरी तरह सार्थक बना लेना, समझदार व्यक्ति के ही बस की बात है। यथाशक्ति प्रत्येक क्षण को जीने और जीवन को संवारने के योग्य बना लेने में ही बुद्धिमानी है।

उपवास का शब्दार्थ है उप अर्थात निकट या करीब और वासयानी रहना। तात्पर्य यह हुआ कि अपनी आत्मा के निकट आना, उसके समीप रहना उपवास है। भावार्थ यह कि आत्मावलोकन में, स्वयं की पहचान के क्षणों में जीने की अवधि उपवास है। इसमें समताभाव की साधना की जाती है। क्रोध-कषायों से बचा जाता है। चिंताओं से मुक्त रहते हुए आगत परिस्थितियों को सहजता से लेने औत आत्मबल बढ़ाने का अभ्यास किया जा सकता है। जीवन यदि अमूल्य है तो जीने का ढंग निराला होना चाहिये। इंसान होने के नाते भूलें अवश्य होंगी किन्तु भूलों को सुधार लेने का विवेक और उसकी शक्ति भी इंसान को ही उपलब्ध है। उस शक्ति का पूरा-पूरा सदुपयोग करने से इंसान, भगवान बन सकता है।

ગુર્જર જૈન જ્યોત

સંપર્ક-સંપાદક : **સુરેશ એચ. સંઘવી**
૧૦૬, શિવશક્તિ, એ.બી.સી. ટાવર, દેવ ચકલા,
જૈન દેરાસર સામે, નડીઆદ. જી. ખેડા.
મો. ૯૭૨૪૫ ૭૧૦૭૯

જયંતસેન ધામ રતલામનગરે..
પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં નવકાર મહામંત્રની આરાધનાનો નવદિવસીય કાર્યક્રમ સંપન્ન...

પ્રેમ-લાગણીની મીઠાસથી મધુરતા અપાવતી માળવાની પુણ્યધરા રતલામ નગરના જયંતસેન ધામમાં વિશ્વપૂજ્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના પ્રશિષ્ય અને વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ ગંભીર ગણનાયક શ્રીમદ્ વિજય યતિન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના પરમવિનયી સુશિષ્યરત્ન યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા., વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા. આદિ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની ચાતુર્માસાર્થે થયેલ પાવન પધરામણી બાદ જયંતસેન ધામ રતલામનગરે ધર્મ આરાધનાના ઘોડાપુર ફરી વળ્યા છે.

કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા આયોજીત સન-૨૦૧૬ ના ચાતુર્માસ અર્થે પૂજ્યશ્રીની પધરામણીથી ભારતભરના શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં ઉત્સાહનું મોજું ફરી વળ્યું છે અને પૂજ્યશ્રીની સુપાવન નિશ્રામાં સર્વત્ર ધર્મમય માહોલ સર્જાઈ ગયો છે.

ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્યશ્રીએ તેઓની પ્રભાવક વાણીની ધારા વહાવી અનેકાનેક ધર્મપ્રભાવક કાર્યક્રમો તથા તપ-આરાધનાઓ દ્વારા જયંતસેન ધામ રતલામ નગરમાં જિન શાસનનો જય જય કાર ગુંજવી દીધો છે.

જેમના રોમે રોમમાં નવકાર વ્યાપીત છે એના નવકાર મંત્રના પરમોપાસક તથા પરમાધારક, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત

વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પાવનકારી નિશ્રામાં છેલ્લા ૪૬ વર્ષથી પ્રતિ વર્ષના શ્રાવણ માસમાં સામૂહિક નવકાર મહામંત્રની આરાધનાનું ભવ્યાતિભવ્ય રીતે આયોજન કરાય છે. પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં યોજાતા નવદિવસીય નવકાર મહામંત્રની આરાધનામાં જોડાયેલ આરાધક કોઈપણ વર્ષે આરાધના કરવા આવવાનું ચુકતો નથી.

પૂજ્યશ્રીના મુખકમળ દ્વારા ગવાતા મીઠા મધુર નવકાર મહામંત્રના સ્તવન, ત્રણેય ટાઈમ દેવવંદન, સફેદ વસ્ત્રોમાં સજ્જ આરાધકો સાથેની ચૈત્યપરી પાટી, ભાવયાત્રા વિગેરે શાસન પ્રભાવનાનું આકર્ષણ બની રહે છે. આરાધકોને એકાસણું કરવું ફરજિયાત હોય છે. આ નવકાર મહામંત્રના આયોજનમાં જોડાવું એ તો મહાભાગ્યની વાત છે પણ એક દિવસ નિહાળવો તે પણ મોટો લ્હાવો છે.

સંવત ૨૦૭૨ ના શ્રાવણ સુદ-૭ ને બુધવાર તા. ૧૦-૮-૨૦૧૬ ના રોજથી નવકાર મહામંત્રના પરમોપાસક, યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. સપરિવારની પાવનકારી નિશ્રામાં ચાતુર્માસ આયોજક શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા જયંતસેનધામ રતલામ નગરે નવદિવસીય એકાસણા સાથે નવકાર મહામંત્રની આરાધનાનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. જે આરાધનામાં ૧૮૦૦ થી વધુ આરાધકો જોડાયા હતા અને નવેય દિવસ સફેદ વસ્ત્રોમાં સજ્જ આરાધકોએ તપ-જપ માં મગ્ન બની નવકાર મહામંત્રની નાચી-ગાઈને ભક્તિ કરી હતી.

ઉલ્લેખનીય છે કે સૌભાગ્યવંત કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા આયોજિત આ ચાતુર્માસની કીર્તી ચોમેર ફેલાઈ જતાં દર વર્ષ કરતાં બમણી સંખ્યામાં આરાધકો ઉમટી પડ્યા હતા. જો કે ૧૮૦૦ થી વધુ આરાધકોને સમાવી લીધા હતા અને સંપૂર્ણ સગવડ આપી સમસ્ત આરાધકોને ભક્તિપૂર્વક આરાધના કરાવી જયંતસેન ધામ રતલામનગરની ધન્યધરા પર સ્વર્ણિમ ઈતિહાસ રચી દીધો હતો.

નવેય દિવસની આરાધના દરમ્યાન શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી આદિજિન બિંબ તથા ગુરુબિંબની અંજનશલાકા પ્રતિષ્ઠા નિમિત્તે પ્રતિરોજ એક એકથી ચઢિયાતા ધર્મ પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

આ વર્ષે નવકાર મહામંત્રના આરાધકોને આરાધના અને અંજનશલાકા પ્રતિષ્ઠા મહોત્સવનો અનેરો લ્હાવો પ્રાપ્ત થયો હતો.

નવકાર મહામંત્રની આરાધનાની પૂર્ણાહૂતિએ ભવ્યાતિભવ્ય વરઘોડાનું આયોજન કરાયું હતું અને કાશ્યપ પરિવાર દ્વારા આરાધકોને ભેટ આપી બહુમાન કરાયું હતું. આ રીતે નવકાર મહામંત્રની આરધનાનો નવદિવસીય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો.

જયંતસેન ધામ-રતલામ નગરે...

શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી જિનાલય-શ્રીરાજેન્દ્રસૂરિ ગુરૂ મંદિર પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહામહોત્સવ સંપન્ન

આધ્યાત્મિક અંતરિક્ષના ધ્રુવ તારા સમાન ત્રિસ્તુતિક જૈન સમુદાયના હૃદય સમ્રાટ, લાખો ભક્તોના ઓલિયા મહાનાયક, યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્‌વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની પાવન પ્રેરણાથી શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર (વિદ્યાયક-રતલામ) દ્વારા રતલામનગર સમીપ જયંતસેન ધામની પાવન ભૂમિ પર શ્રી મુનિસુવ્રતસ્વામી ભગવાનનું જિનાલય અને શ્રીમદ્‌ વિજય રાજેન્દ્ર સૂરિશ્વરજી મ.સા. નું ગુરૂ મંદિર નિર્માણ પામેલ હતું. તેની પ્રતિષ્ઠા કરાવવા કાશ્યપ પરિવારે પૂજ્યશ્રીને વિનંતી કરી હતી પૂજ્યશ્રીએ એમનો સ્વીકાર કરી સંવત ૨૦૭૨ ના શ્રાવણ સુદ-૧૫ ને ગુરૂવાર તા. ૧૮-૮-૨૦૧૬ ના રોજ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા વિધિ સંપન્ન કરવા મંગલ મુહુર્ત પ્રદાન કર્યું હતું. અને નવકાર મહામંત્રની આરાધનાના દ્વિતીય દિવસથી મહામહોત્સવ સંપન્ન કરવા પ્રેરણા કરી હતી. પૂજ્યશ્રીએ પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહામહોત્સવ માટે સંમંતિ આપતાં કાશ્યપ પરિવાર સહિત શ્રી સંઘમાં આનંદોલ્લાસ પ્રવર્તી ગયો હતો અને અભૂતપૂર્વ ભાવોલ્લાસનું વાતાવરણ છવાઈ ગયું હતું. સોનામાં સુગંધ રૂપ સકળ સંઘ સાથે નવકાર મહામંત્રના ૧૮૦૦ થી વધુ આરાધકોને આ રૂડા અવસરની તક સાંપડતા સહુની આંખોમાંથી હર્ષના આંસુઓ વહી ગયા હતા. અને અંતરની ઉર્જાઓ આકાશને સ્પર્શી ગઈ હતી. નવકાર મહામંત્ર આરાધનાના નવદિવસીય અને પ્રતિષ્ઠાંજનશલાકા મહામહોત્સવ માટે શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવાર તેમજ સંઘ અને સમિતિ દ્વારા તે અંગેની તડામાર તૈયારી આદરી દેવાઈ હતી. પ્રતિષ્ઠાંજન શલાકા મહામહોત્સવના પ્રથમ દિવસ : તા. ૧૧-૮-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી મુનિસુવ્રત સ્વામી પંચ કલ્યાણક પૂજા, કુંભ સ્થાપના, અખંડ દિપક સ્થાપના, જવારા રોપણ, નવગ્રહ પાટલા, દશ દિગ્પાલ પાટલા, અષ્ટમંગલ પાટલા સ્થાપન, દ્વિતિય દિવસ : તા. ૧૨-૮-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી આદિનાથ પંચકલ્યાણક પૂજા, સિધ્ધચક્ર પાટલા, વીસ સ્થાનક પાટલા, સ્થાપન, જલયાત્રા, વૈદિકા પૂજન, પ્રભુ પ્રતિમા પ્રવેશ, તૃતિય દિવસ : તા. ૧૩-૮-૨૦૧૬ શ્રી સમકિત અષ્ટ પ્રકારી પૂજા, અવન કલ્યાણ, સ્વપ્ન દર્શન, ઈન્દ્ર સિંહાસન કોપાયમાન, માતા-પિતા ઈન્દ્ર-ઈન્દ્રાણી સ્થાપના, ભવ્ય રાજદરબાર, ચતુર્થ દિસ : તા. ૧૪-૮-૨૦૧૬ શ્રી નવપદ પૂજા, જન્મ કલ્યાણ, ૫૬ દિક્કકુમારી ઉત્સવ, ઈન્દ્ર મહોત્સવ, રાજ્ય જ્યોતિષ આગમન, પ્રિયવંદા વધાઈ. પંચમ દિવસ : તા. ૧૫-૮-૨૦૧૬ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ અષ્ટપ્રકારી પૂજા, અઢાર અભિષેક, ફોઈનું આગમન, નામકરણ, પાઠશાળા ગમન, ષષ્ટમ દિવસ : તા. ૧૬-૮-૨૦૧૬ શ્રી શાંતિનાથ પંચ કલ્યાણ પૂજા, લગ્ન મહોત્સવ, મામેરૂ, રાજ્યાભિષેક, નવલોકાંતિક દેવોની વિનંતી. માતા-પિતા, કુલ મહતરા દ્વારા આજ્ઞા પ્રદાન, સપ્તમ

દિવસ : તા. ૧૭-૮-૨૦૧૬ શ્રી પાર્શ્વનાથ પંચ કલ્યાણક પૂજા, દીક્ષા કલ્યાણક, વરસીદાન વરઘોડો, મધ્ય રાત્રિએ અંજન વિધિ વિગેરે ભવ્યાતિભવ્ય કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા. વિધિકારક, સત્યવિજયજી હરણ, પ્રસન્નલાલજી ચન્નઈ, ત્રિલોકચંદજી કાંકરીયા એ વિધિવિધાન કરાવ્યું હતું. પ્રસિધ્ધ સંગીતકારોએ સંગીતની રમઝટ મચાવી સ્ટેજ કાર્યક્રમો સંપન્ન કરાવ્યા હતા. અષ્ટમ દિવસ : તા. ૧૮-૮-૨૦૧૬ આજનો દિવસ સૌના હૈયાં હરખાવતો દિલડા ડોલાવતો મહામહોત્સવનો મુખ્ય પાવનકારી પ્રતિષ્ઠાનો શુભ દિવસ આજે મહામહોત્સવની ઉજવણીનો આનંદ ચરમસીમાએ હતો. નવકાર મહામંત્રના આરાધકો જયજયકારના ગગનચુંબી નારાઓ લગાવી રહ્યા હતા. શુભ ઘડી નજીક આવી પહોંચતા પૂજ્યશ્રી આદિ મુનિભગવંતોએ નૂતન જિનાલયમાં પ્રવેશ કર્યો જ્યાં નૂતન જિનાલય અને ગુરૂ મંદિરના લાભાર્થી શ્રી ચેતન્યજી કાશ્યપ પરિવારના સભ્યો પહેલેથી જ પુજાના કપડામાં ઉપસ્થિત હતા. પ્રતિષ્ઠાવિધિ પૂજ્ય શ્રી ધ્વારા સંપન્ન થઈ રહી હતી. શુભ શ્રેષ્ઠ લગ્ન નવમાંશ શુભ મુહુર્તમાં પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યમાં ઓમ પુષ્પહઃ રક્ષમ... સ્વાહા... અને ઓમ પુણ્યાહામ... પુણ્યાહામ.. પ્રિયતાંમ... પ્રિયતાંમના મંત્રોચ્ચાર સાથે અશ્વબોધિ ૨૦મા તીર્થંકર પરમાત્મા શ્રી મુનિસુવ્રતસ્વામી ભગવાન આદિજિન બિંબ અને દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા., શ્રી યતિન્દ્રસૂરિશ્વરજી અને પૂજ્યશ્રીની જીવીત પ્રતિમાને ગાદીશીન કરી પ્રતિષ્ઠા કરવામાં આવી સાથે સાથે ધજા અને કળશ ચઢાવવામાં આવ્યા. પરમાત્મા અને ગુરૂદેવ મંદિરમાં બિરાજમાન થતાં જ સંપૂર્ણ પરિસરમાં બદનાવરના બેન્ડ ધ્વારા પીરસાતા સંગીત સાથે અબાલવૃધ્ધ સા મન મુકીને નાચવા લાગ્યા.

દરેકે દરેક વ્યક્તિના હૃદય આનંદ ઉલ્લાસથી ઉછાળા મારતા હતા. પ્રભુજી અને દાદાગુરૂદેવ ગાદીનશીન થયા બાદ શ્રીમુનિસુવ્રતસ્વામી ભગવાન અને દાદા ગુરૂદેવની પ્રતિમાનું તેજ દેખવા લાયક હતું. પ્રભુજીની પ્રતિમા એવી રીતે ચમકી રહી હતી જાણે કે કોઈ દિવ્ય પ્રકાશ મુખમંડળ પર છવાઈ ગયો હોય. સૌ કોઈ બસ એકીટશે પ્રભુજીની મનમોહક પ્રતિમાજીને નિહાળી રહ્યા હતા. આ પ્રસંગે પ્રતિરોજ સંઘ સ્વામીવાત્સલ્ય યોજાયું હતું. નવમ દિવસ : તા. ૧૯-૮-૨૦૧૬ ધ્વારોદ્‌ઘાટન અને શ્રી સત્તરભેદી પૂજન વિગેરે કાર્યક્રમો સંપન્ન થયા હતા.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતા ઉત્સાહ સાતે ચાતુર્માસિક તપ-આરાધના અને શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમોની હારમાળા

પૂજય સાધ્વીજી ભગવંતોના સંગે ધર્મભક્તિના રંગે રંગાયો અમદાવાદ જૈન સંઘ...

શ્રી ત્રિસ્તતક જૈન સંઘ અમદાવાદ ધ્વારા... યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી

મ.સા. ની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અનંતદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા સન ૨૦૧૬ ના વર્ષનું અમદાવાદ ખાતે યશસ્વી ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા જઈ રહ્યાં છે.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોએ સંવત ૨૦૭૨ ના અષાઢ સુદ-૨ ના રોજ વાજતે-ગાજતે રતનપોળ-હાથીખાના ખાતેના શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જ્ઞાન મંદિર શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદના આંગણે ભવ્ય ચાતુર્માસ પ્રવેશ કર્યો હતો.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ રાષ્ટ્રીય અધ્યક્ષ અને સંઘ અધ્યક્ષના નેતૃત્વ હેઠળ નૂતન ટ્રસ્ટી મંડળના બેવડાયેલા ઉલ્લાસથી શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદમાં ઓજસ્વી અને તેજસ્વી આભને આંબતો ઉત્સાહ વ્યાપી ગયો છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના સંગે શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ ધર્મભક્તિના રંગે રંગાઈ રહ્યો છે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમદાવાદ દ્વારા આયોજિત આ ચાતુર્માસ દરમ્યાન સ્ટેજ કાર્યક્રમ, નવકાર આરાધના વિગેરે કાર્યક્રમો યોજવા માટે અગવડ ન પડે તેના માટે મીઠાખળી આરાધના ભવન પાસે વિરાટ મંડપની રચના કરવામાં આવેલ છે. ચાતુર્માસની શરૂઆતથી જ શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને તપ- આરાધનાના વિવિધ દશ્યો સર્જાઈ ગયા છે. મીઠાખળી સાથે-સાથે ખાનપુર, પાલડી અને સાતભાઈના ડહેલામાં પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતો ધર્મ-આરાધના કરાવી રહ્યાં છે.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની પ્રેરણાનુસાર ચાતુર્માસિક આરાધનાની શરૂઆત અઠ્ઠમતપ અને સાંકળી આંયબિલ તપ થી કરવામાં આવી હતી.

પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અનંતદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. ની સુશિષ્યા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી મયુરકલાશ્રીજી મ.સા. દ્વારા પ્રતિદિવસ વ્યાખ્યાનમાં વૈરાગ્યવર્ધક ભીમસેન ચરિત્રનું વાંચન કરાઈ રહ્યું છે. વીરજીતસુત તપની ૨૮ દિવસીય સામૂહિક આરાધના સંપન્ન થવા જઈ રહી છે જેમાં ૩૦૦ આરાધકો જોડાયેલ છે. ૬૫ તપસ્વીઓ સિધ્ધિતપની ઉગ્ર તપશ્ચર્યા કરવા જઈ રહ્યા છે અને ૧ માસ ક્ષમણ તપની તપશ્ચર્યા પૂર્ણ થયેલ છે. શ્રાવણ સુદ-૭ ના રોજથી નવકાર મહામંત્રની આરાધનાનું આયોજન કરાયું હતું. નવેય દિવસની આરાધનામાં જાપ અને એકાસણા સાથે ત્રણેય વિસ્તારના ૫૦૦ થી વધુ આરાધકો જોડાયા હતા. શ્રાવણ સુદ-૧૫ ના દિવસે સામૂહિક એક દિવસીય એકાસણા સાથે નવદિવસીય આરાધનામાં જોડાયેલા આરાધકો સિવાય નવા આરાધકો દ્વારા સવાલાખ મંત્રના જાપનું આયોજન કરાયું હતું. નવેય દિવસના એકાસણાનો લાભ સંઘવી જબીબેન મુળચંદભાઈ ત્રિભોવનદાસ પરિવારે લીધો હતો. આગામી દિવસોમાં પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહાપર્વની ઉજવણી તેમજ અનેકાનેક શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન થનાર છે.

વોહેરા લલ્લુભાઈ ઝુમચંદભાઈ પરિવારના શ્રી કિરીટભાઈ બબલદાસ વોહેરા તથા શ્રીમતી ચંદ્રિકાબેન કીરીટભાઈ વોહેરાની પુત્રવધુ શ્રીમતી હેતલબેન રીતેશકુમાર

વોહેરાએ રત્નચિંતામણી સમા મહામુલ્ય માનવ જન્મને સફળ બનાવનાર એવા માસ ક્ષમણ તપની આરાધનાનો સંવત ૨૦૭૨ ના અષાઢ સુદ-૧૩ ને રવિવાર તા. ૧૭-૭-૨૦૧૬ ના રોજથી પ્રારંભ કર્યો હતો જે એક માસના ઉપવાસની ઉગ્ર તપશ્ચર્યા શાતાપૂર્વક નિર્વિઘ્ને પૂર્ણ થતાં તા. ૧૬-૮-૨૦૧૬ ના રોજ અમદાવાદ ખાતે વાજતે-ગાજતે પારણું કરેલ છે. પારણા નિમિત્તે સંઘ સ્વામી વાત્સલ્યનું વોહેરા પરિવાર દ્વારા આયોજન કરાયું હતું.

ખાસ નોંધ : અમદાવાદના દરેક વિસ્તારના ત્રિસ્તુતિક સંઘમાં જાપના એકાસણા કરાવાયા છે જેનો સમસ્ત લાભ જબીબેન મુળચંદભાઈ ત્રિભોવનદાસ સંઘવી પરિવારે લીધો છે.

અમરાઈવાડી - અમદાવાદ

પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી વિધ્વદગુણાશ્રીજી મ.સા. તથા પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા. ની નિશ્રામાં પ્રતિ રોજ વ્યાખ્યાનમાં નળ દમયંતી ચરિત્ર પર પ્રકાશ પાથરવામાં આવી રહ્યો છે. ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અમરાઈવાડીમાં દર શનિવારે બહેનોની શિબિર યોજાઈ રહી છે. સરદવિધિ પ્રકરણ વિષય પર બહેનોને સુંદર શૈલીમાં સમજણ અપાઈ રહી છે. ૧૬ દિવસીય નિધિ તપનું આયોજન કરાયેલ હતું જેમાં સારી સંખ્યામાં તપસ્વીઓ જોડાયા હતા. શ્રાવણ સુદ-૫ ના દિવસે શ્રી નેમકુમાર દિક્કકુમારી નાટિકા ભજવાઈ હતી જેનાથી સંઘના ભક્તો ભાવવિભોર બની ગયા હતા. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની પ્રેરણાથી શ્રાવણ સુદ-૭ ના રોજથી નવકાર મહામંત્રની આરાધનાનું એકાસણા સાથેનું આયોજન કરાયું હતું. નવકારના અડસઠ અક્ષર પર સુંદર શૈલીમાં નવેય દિવસ પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોએ વ્યાખ્યાન ફરમાવ્યું હતું. દર રવિવારે બાળકોની શિબિર યોજાઈ રહી છે.

નવા વાડજ - અમદાવાદ

વયોવૃધ્ધ પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા. તથા તેમની સુશિષ્યા પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા. પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી પરમ રેખાશ્રીજી મ.સા. અને પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી પદરેખાશ્રીજી મ.સા. નવા વાડજ અમદાવાદ ખાતે ચાતુર્માસ ગાળી રહ્યા છે અને શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો ધ્વારા ધર્મના ઓજસ પાથરી રહ્યાં છે.

પ્રતિરોજ પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા. તો ક્યારેક પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા. ના મુખકમલ ધ્વારા સુંદર શૈલીમાં વ્યાખ્યાન અપાઈ રહ્યું છે.

પ્રતિરોજ વ્યાખ્યાનમાં શાંતરસનું પાન કરાવતા શાંતસુધારસ ગ્રંથ અને સમરાદિત્ય ચરિત્રનું વાંચન કરાઈ રહ્યું છે.

પંચમેરૂ ૧૦ દિવસીય તપની આરાધના કરાવાઈ હતી. શ્રાવણ સુદ-૫ ના રોજ શ્રી નેમનાથ ભગવાનનો ભવ્યાતિભવ્ય મહોત્સવ સંપન્ન થયો હતો. સંગીતકાર શ્રી

પારસભાઈએ સહુના દીલ ડોલાવી દીધાં હતા. ત્યારબાદ રવિવારના રોજ પ્રભુ મિલનનો ભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. શ્રાવણ સુદ સાતમથી નવદિવસીય એકાસણા સાથે નવકાર મહામંત્રની આરાધનાનું આયોજન કરાયું હતું. દર રવિવારે યુવા શિબિરનું આયોજન કરાઈ રહ્યું છે. તત્વાર્થ પર સુંદર શૈલીમાં સમજણ અપાઈ રહી છે. ''મા-બાપ'' વિષય પર વકતૃત્વ સ્પર્ધા યોજાઈ રહી છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસથી સંઘમાં ધર્મની ગંગા વહી રહી છે.

મોટેરા – અમદાવાદ (રજની અદાણી દ્વારા)

પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૩ મોટેરા-અમદાવાદ ખાતે ચાતુર્માસ સંપન્ન કરવા જઈ રહ્યા છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં ધર્મની ગંગા વહી રહી છે.

પ્રતિ રોજ વ્યાખ્યાનમાં મયણા સુંદરી ચરિત્રનું વાંચન કરાઈ રહ્યું છે. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં અષ્ટપ્રકારી પૂજા, સંયમભાવ યાત્રા, નેમનાથ જન્મ મહોત્સવ એવા ત્રણ અનુષ્ઠાનો સંપન્ન થયા હતા. ૧૬ દિવસીય અષ્ટ મહાસિધ્ધિ તપ અને એકાસણા સાથે નવદિવસીય નવકાર મહામંત્રની આરાધના કરાવાઈ હતી. ૧૯૮ ઘર ધરાવતા મોટેરા ખાતે ધર્મ જાગૃતિની લહેર દોડી રહી છે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ સુરતના આંગણે વરસતી ચાતુર્માસિક ધાર્મિક કાર્યક્રમોની હેલી

યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અમીત દ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણાની નિશ્રામાં શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ અડાજણ સુરતના આંગણે ચાતુર્માસિક ધાર્મિક કાર્યક્રમોની હેલી વરસી રહી છે.

પૂજ્યશ્રીના ચાતુર્માસ પ્રવેશ બાદ ચાતુર્માસ પહેલાં પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોએ સુરતના કતાર ગામ, ગોપીપુરા, વેડરોડ વિગેરે ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં પધરામણી કરી હતી અને પ્રેરણાદાયક પ્રવચન આપી ધર્મ જાગૃતિની લહેર પ્રસરાવી હતી.

ચાતુર્માસ વ્યાખ્યાનમાં પ્રતિરોજ જંબુસ્વામી ચરિત્ર પર સુંદર શૈલીમાં સમજણ અપાઈ રહી છે. સૌભાગ્ય કલ્પવૃક્ષ તપ નું આયોજન કરાયેલ હતું જેમાં મોટી સંખ્યામાં તપસ્વીઓ જોડાયા હતા. દર રવિવારે દેવ-ગુરૂ-ધર્મ પર શિબિરોનું આયોજન થઈ રહ્યું છે. પ્રથમ રવિવારે ''માતા-પિતાના ઉપકાર'' દ્વિતીય રવિવારે ''પરમાત્મામાભક્તિ'', તૃતિય રવિવારે ''પાપનું પક્ષાલન'' વિષય પર પ્રકાશ પથરાયો હતો ત્રણેય શિબિરોમાં બાળકો-બહેનો અને યુવાનોમાં જબરજસ્ત જાગૃતિનો સંચાર થયો હતો. સાંકળી આંયબિલ ચાલી રહ્યા છે.

શ્રાવણ સુદ સાતમના રોજથી નવકાર મહામંત્રીની આરાધનાનું એકાસણા સાથે આયોજન કરાયું હતું જેમાં મોટી સંખ્યામાં આરાધકો જોડાયા હતા. નવેય દિવસના

એકાસણાનો લાભ નવ પરિવારોએ લીધો હતો. ૬૮ નવકાર ભાવયાત્રાનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. પૂજ્ય સાધ્વીજીની પ્રેરણાથી ચૌવિહાર હાઉસ શરૂ કરાયું હતું. તેમજ તેમની પ્રેરણાથી પ્રેરાઈ થરાદ નિવાસી શ્રી અશ્વિનકુમાર બાબુલાલ વોહરાના ધર્મપત્નિ શ્રીમતી પ્રિતિબેન અશ્વિનકુમાર વોહેરાએ તથા સુપુત્ર ચિ. યશ અશ્વિનકુમાર વોહેરાએ માસક્ષમણ તપની ઉગ્ર તપશ્ચર્યા કરી હતી અને સાંજીના કાર્યક્રમનું આયોજન કરી સકળ સંઘને વોહેરા રસીલાબેન બાબુલાલ જ્યંતિલાલ પરિવારે આમંત્રિત કર્યો હતો. તા. ૨૧-૮-૧૬ ના રોજ પ્રભુ જન્મ મહોત્સવનો ભવ્યાતિભવ્ય સ્ટેજ કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો જેમાં થરાદના લોકલાડીલા સુપ્રસિધ્ધ સંગીતકાર શૈલેષ પરીખે સહુને મંત્રમુગ્ધ કરી દીધા હતા. આ પ્રસંગે સંઘ સ્વામી વાત્સલ્યનું પણ આયોજન કરાયું હતું.

આણંદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના આંગણે ચાતુર્માસિક શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને વરસતી અવનવી અનુષ્ઠાનોની હેલી

આણંદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ ઉપર શ્રી પાર્શ્વનાથ દાદાની અસીમ કૃપા, દાદા ગુરૂદેવ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિશ્વરજી મ.સા. ના દિવ્ય આશિષ અને વર્તમાનાચાર્ય રાષ્ટ્રસંત શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ના શુભાશુભ આશિર્વાદ વરસી રહ્યા છે. દરેક વર્ષે પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના ચાતુર્માસનો અનેરો લાભ પ્રાપ્ત થઈ રહ્યો છે.

યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી અનુપમદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૮ આ વર્ષનું ચાતુર્માસ શ્રી રાજેન્દ્રસૂરિ જૈન જ્ઞાન મંદિર, જુના રસ્તા, લક્ષ્મી ટોકીઝની ગલી આણંદ ખાતે ગાળી રહ્યાં છે.

સંવત ૨૦૭૨ ના અષાઢ સુદ-૭ ને સોમવાર તા. ૧૧-૭-૧૬ ના રોજ પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોના વાજતે-ગાજતે ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ આણંદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના આગણે ચાતુર્માસિક શાસન પ્રભાવક કાર્યક્રમો અને અનુષ્ઠાનોની અવનવી હેલી વરસી રહી છે.

પ્રતિરોજ વ્યાખ્યાનમાં ઉતરાધ્યન સુત્ર અને સાગરદત્ત ચરિત્રનું વાંચન કરાઈ રહ્યું છે જેનું શ્રવણ કરી શ્રાવક-શ્રાવિકા ધન્યતા અનુભવી રહ્યાં છે. પ્રતિરોજ પાંચ પ્રશ્ન પુછવામાં આવે છે, સાંકળી આંયબિલ, ઉવસ્સગહરં તપ, શ્રાવણ સુદ સાતમથી નવ દિવસીય એકાસણા સાથે નવકાર મહામંત્રની આરાધના તે દરમ્યાન ૬૮ તીર્થની ભાવયાત્રાનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. નવેય દિવસના એકાસણાનો લાભ અલગ અલગ નવ પરિવારોએ લીધો હતો. તા. ૨૩-૭-૧૬ ના રોજ બાળકોની શિબિર યોજાઈ હતી જેનો વિષય હતો "સમજી ને બોલીએ" તા. ૨૪-૭-૧૬ ના રોજ ભાઈઓ તથા બહેનોની શિબિર યોજાઈ હતી. જેનો વિષય હતો "ભુલેલા ને ભાનમાં લાવો" અને "બેસે પંખી એક જ ડાળે" તા. ૩૦-૭-૧૬ ના રોજ બાળકોની શિબિર "જિનાલય સંબંધી" અલગ અલગ વિષય પર બાળકોની પરીક્ષા લેવાઈ રહી છે. અને ભીન્ન-ભીન્ન

અનુષ્ઠાનો સાથે આરાધના થઈ રહી છે. માસક્ષમણ-સિધ્ધિ તપ જેવી ઉગ્ર તપશ્ચર્યા થઈ રહી છે. તા. ૩૧-૭-૧૬ ના રોજ પ્રભુજીને શાંતિધારા ૨૭ મહાઅભિષેકનો ભવ્ય કાર્યક્રમ સંપન્ન થયો હતો. તા. ૭-૮-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી નેમીનાથ ભગવાન જન્મ કલ્યાણક અને દીક્ષા કલ્યાણકનો અતિ ભવ્ય કાર્યક્રમ યોજાયો હતો. આણંદ ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘના આંગણે પૂજ્ય સાધ્વીજીશ્રી અનુપમદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૮ ની નિશ્રામાં ચાતુર્માસિક ધાર્મિક કાર્યક્રમ અને અનુષ્ઠાનોની અવનવી હેલી વરસી રહી છે.

ડૉ. પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા.ની નિશ્રામાં ખેતવાડી મુંબઈનગરે વહેતી ધર્મગંગા

યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી દર્શનકલા શ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૮ ની નિશ્રામાં ખેતવાડી મુંબઈ નગરે ધર્મની ગંગા વહી રહી છે.

પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં વ્યાખ્યાનમાં ધન્યકુમાર ચરિત્ર ઉપર સુંદર શૈલીમાં પ્રકાશ પથરાઈ રહ્યો છે જેનું શ્રવણ કરી શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ ધન્યતા અનુભવી રહ્યા છે. સંવત ૨૦૭૨ ના અષાઢ વદ-૫ ને રવિવાર તા. ૨૪-૭-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી સીમંધર સ્વામી ભાવાયાત્રાનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું જેનો લાભ દોશી અમૃતલાલ ચીમનલાલ (કેરપણાવાળા) પરિવારે લીધો હતો. અષાઢ વદ-૧૨ ને રવિવાર તા. ૩૧-૭-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી ભક્તામર મહાપૂજનનું ભવ્ય આયોજન કરાયું હતું. જેનો લાભ દેસાઈ હાલચંદભાઈ ઉજમશીભાઈ પરિવારે લીધો હતો. શ્રાવણ સુદ-૫ ને રવિવાર તા. ૭-૮-૨૦૧૬ ના રોજ શ્રી ગિરનાર તીર્થ ભાવયાત્રાનું ભવ્યાતિભવ્ય આયોજન કરાયું હતું જેનો લાભ મોતી મેનસન્સ પરિવારે લીધો હતો. પૂજ્ય સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં સિધ્ધિતપ તેમજ નાની-મોટી તપશ્ચર્યાઓ સંપન્ન થવા જઈ રહી છે.

થરાદનગરે ચાતુર્માસિક સાશન પ્રભાવક કાર્યક્રમો સંપન્ન

યુગ પ્રભાવક, સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની આજ્ઞાનુવર્તીની પૂજ્ય સાધ્વીજી શ્રી કૈવલ્યગપણાશ્રીજી મ.સા. આદિઠાણા-૩ થરાદનગરે ચાતુર્માસ ગાળી રહ્યા છે પ્રતિરોજ વ્યાખ્યાનમાં શાંતરસનું પાન કરાવતા શાંત સુધારસગ્રંથ અને મહાબલ મલ્યાસુંદરી ચરિત્રનું વાંચન કરાઈ રહ્યું છે.

ચાતુર્માસ દરમ્યાન સાંકળી આંયબિલ, જીરાવલા પાર્શ્વનાથના અઠ્ઠમ, દર રવિવારે જૈન રામાયણ પર પ્રવચન, બપોરે શિબિર, ગુરૂદેવ રચિત હાલરડાની પરિક્ષા, ભગવાનના લાંછનની પરીક્ષા તેમજ વિવિધ વિષયો પર પરીક્ષા લેવાઈ રહી છે.

રત્નપ્રથી તપ અને એકાસણા સાથે નવદિવસીય નવકાર મહામંત્રની આરાધના

કરાવાઈ હતી જેનો લાભ સંઘવી ખેમચંદ લલુભાઈ પરિવારે લીધો હતો. તાજેતરમાં (શ્રી મહાવીર સ્વામી જિનાલય), મોટા દેરાસરથી શ્રી વરખડી ધામ સુધીની ચૈત્યપરી પાટીનું આયોજન કરાયું હતું અને વરખડી ખાતે પ્રવચન અપાયું હતું.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ આણંદનું નવું
સુકાન સંભાળતા પ્રમુખ શ્રી કીર્તીલાલ જયંતીલાલ વોરા
ટ્રસ્ટી મંડળની રચના સાથે કાર્યભારની ફાળવણી

૬૦ જેટલા થરાદવાસી પરિવારો જ્યાં સ્થાયી થયા છે તે આણંદ શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ પર પરમ પૂજ્ય દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. ની કૃપાદ્રષ્ટિ અનરાધાર વરસી રહી છે. પોતીકું જિનાલય અને ઉપાશ્રય ધરાવતો આ સંઘ ખૂબ જ પ્રગતિ કરી રહ્યો છે.

શ્રી ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘ આણંદના પ્રમુખ શ્રી ચીમનલાલ બાદરમલ વોરાનું અવસાન થતાં સંઘનું સુકાન શ્રી કીર્તીલાલ જયંતીલાલ વોરાને સોંપવાનો નિર્ણય તાજેતરમાં આણંદ જૈન સંઘ દ્વારા સર્વાનુમતે લેવાયો હતો.

યુવાન ને શરમાવે તેવી તંદુરસ્તી ધરાવતા ૬૭ વર્ષીય કર્તવ્યનિષ્ઠ ઉત્સાહી શ્રી કીર્તીલાલ જયંતીલાલ વોરાએ પ્રમુખ તરીકેનો કાર્યભાર સંભાળી લીધો છે અને ટ્રસ્ટી મંડળની રચના સાથે કાર્યભારની ફાળવણી કરવામાં આવી છે.

પ્રમુખ : શ્રી કીર્તીલાલ જયંતીલાલ વોરા

મંત્રી : શ્રી મહેન્દ્રભાઈ શાંતિલાલ શેઠ - ખજાનચી : શ્રી સેવંતીલાલ હીરાલાલ મોદી

: ટ્રસ્ટી :

શ્રી ધીરજલાલ ચીમનલાલ ધરૂ, શ્રી સેવંતીલાલ ભુદરમલ બલ્લુ
શ્રી બીપીનભાઈ ચીમનલાલ વોરા, શ્રી જગદીશભાઈ ભીખાલાલ શેઠ,
શ્રી અરવિંદભાઈ ઉગચંદ વોહેરા, શ્રી પ્રવિણભાઈ મોહનલાલ મોરખીયા
શ્રી રમેશભાઈ બાબુલાલ વોરા, શ્રી વિજયભાઈ ધીરજલાલ દોશી
શ્રી અંકિતભાઈ પ્રવિણભાઈ અદાણી

ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલિ

સમાજ સેવાના હિમાયતી, નિખાલસ વ્યક્તિત્વ ધરાવતા થરાદના પ્રતિષ્ઠિત સંઘવી ખેમચંદભાઈ લલ્લુભાઈ પરિવારના

શ્રી જયંતીલાલ ચીમનલાલ સંઘવીનું

તાજેતરમાં અમદાવાદ ખાતે દુઃખદ અવસાન થયેલ છે જે સદ્‌ગત આત્માને પ્રભુ શાંતિ અર્પે એજ અભ્યર્થના સહ...

''ગુર્જર જૈન જ્યોત'' પરિવાર ભાવભીની શ્રધ્ધાંજલિ અર્પે છે.

રતલામનગરની ધન્યધરા પર ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત આચાર્યશ્રીના દર્શન-વંદનાર્થે જવા થનગની રહ્યા છે શ્રી જૈન સંઘો..

પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહાપર્વની ઉજવણી બાદ ઉમટી પડશે રતલામનગરે ભાવિકોનું વાવાઝોડું...!

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદવિજયજી મ.સા. તેમજ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની ચાતુર્માસ અંગે પધરામણી થતાં જ રતલામ નગરે ધર્મશ્રધ્ધાના ડંકા વાગી રહ્યા છે. જેના પડઘા સમસ્ત ત્રિસ્તુતિક જૈન સંઘોમાં સંભળાઈ રહ્યા છે.

સમગ્ર ભારતમાં વસતા લાખો શ્રધ્ધાવંત ભક્તો પૂજ્યશ્રી પ્રત્યે અખૂટ શ્રધ્ધા ધરાવે છે. ચાતુર્માસ પ્રવેશથી જ ભક્તોનું જયંતસેન ધામ રતલામ નગરે આવા-ગમન ચાલુ જ છે.

પર્વાધિરાજ પર્યુષણ મહાપર્વની ઉજવણી બાદ જયંતસેન ધામ રતલામનગરની ધન્યધરા પર ચાતુર્માસ બિરાજમાન પૂજ્યશ્રીના દર્શન-વંદનાર્થે સામૂહિક સંખ્યામાં જવા દરેક સંઘો થનગની રહ્યા છે. અને તે માટે અત્યારથી જ સામૂહિક રૂપે દર્શન-વંદનાર્થે જવા મધ્ય પ્રદેશ, રાજસ્થાન, ગુજરાત, આંધ્ર, તામિલનાડુ, કર્ણાટક વિગેરે સ્થળોના સંઘોમાં આયોજન થઈ રહ્યાં છે. દિન પ્રતિદિન જયંતસેનધામ રતલામનગરે ઉમટી પડશે ભાવિકોનું વાવાઝોડું...!

સ્વર્ગસ્થ સુશ્રાવિકા વર્ષાબેન વેદલીયાના આત્મશ્રેયાર્થે અંદાજિત ૬૦૦ સામાયિક થયા

ડીસા સ્થિત જીવદયા પ્રેમી શ્રી હસમમુખભાઈ વેદલીયાના ધર્મપત્નિ સુશ્રાવિકા વર્ષાબેનનું હૃદયરોગના હુમલાથી અચાનક જેઠ વદ-૧૪ ને તા. ૩૦-૭-૨૦૧૬ ના રોજ દુઃખદ અવસાન થયેલ હતું. સ્વર્ગસ્થ વર્ષાબેનની માસિક પુણ્યતિથિ અષાઢ વદ-૧૪ ને તા. ૧-૮-૨૦૧૬ ના રોજ હોઈ તેમના આત્મશ્રેયાર્થે શ્રીપાલનગર ડીસા ખાતે અંતરાયકર્મ નિવારણ પૂજા પંડીત શ્રી કૃણાલભાઈ સુરાણી દ્વારા ભણાવવામાં આવી હતી. પરમપૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. તેમજ તેમના આજ્ઞાનુ વર્તી સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની નિશ્રામાં સ્વર્ગસ્થ વર્ષાબેનના આત્મશ્રેયાર્થે ડીસા, રાજપુરડીસા, થરાદ, જેતડા, લાખણી, મીઠી પાલડી, અમદાવાદ, આણંદ, સુરત, મુંબઈ, પાટણ, ભાંડવપુર તીર્થ, કુશલગઢ, ઈન્દોર, બડનગર, રાણાપુર, ખાચરોદ, નિમચ શિખરજી વિગેરે સ્થળોએ સમૂહ સામાયિકનું આયોજન કરાયું હતું. અંદાજિત ૬૦૦૦ સામાયિક થયા હતા. આરાધકોએ નવકાર મંત્રના જાપ કરી સ્વર્ગસ્થ આત્માને શાંતિ અર્પી હતી.

સ્વર્ગસ્થ વર્ષાબેને ઉપધાનતપ, વર્ધમાનતપની ૧૨ ઓળી નવપદ ઓળીઓ, ૧૦૮ શ્રી પાર્શ્વનાથ તીર્થો પૈકી મોટા ભાગના તીર્થોની યાત્રા, શીખરજી આદિ કલ્યાણક ભૂમિઓની વારંવાર યાત્રા સહીત અનેક તીર્થોના દર્શન-વંદન કર્યા હતા. પૂજ્ય સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની સેવા-વયાવચ્ચ કરી જીવનને ધન્ય બનાવ્યું હતું.

॥ શાસનપતિ શ્રી મહાવીરાય નમઃ ॥
॥ દાદા ગુરૂદેવ શ્રીમદ્ રાજેન્દ્ર-ધનચન્દ્ર-ભૂપેન્દ્ર-યતિન્દ્ર-વિદ્યાચન્દ્રસૂરિ ગુરૂભ્યો નમઃ ॥

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. 'મધુકર' તથા તેમના આજ્ઞાનુવર્તી શ્રમણ-શ્રમણી વૃંદ

ચાતુર્માસ યાદી - ૨૦૧૬

રતલામ (મ.પ્ર.)

સુવિશાલ ગચ્છાધિપતિ રાષ્ટ્રસન્ત શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. 'મધુકર'
વરિષ્ઠ મુનિરાજ શ્રી નિત્યાનંદ વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી અપૂર્વરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી ચારિત્રરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી પ્રશમસેન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી નિપુણરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી પ્રસિદ્ધરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી તારકરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી જિનાગમરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી પ્રત્યક્ષરત્ન વિજયજી મ.સા., મુનિરાજ શ્રી પવિત્રરત્ન વિજયજી.મ.સા.

ભાંડવપુર (રાજ.)

મુનિરાજ શ્રી જયરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી અશોક વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી આનન્દ વિજયજી મ.સા.

કુશલગઢ (રાજ.)

મુનિરાજ શ્રી સિદ્ધરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી વિદ્વદ્રત્ન વિજયજી મ.સા.

ઈન્દૌર

મુનિરાજ શ્રી વૈભવરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી શંખેશરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી ગોયમરત્ન વિજયજી મ.સા.

જોધપુર (રાજ.)

મુનિરાજ શ્રી વીરરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી વિનીતરત્ન વિજયજી મ.સા.

પાલીતાણા (ગુજ.)

મુનિરાજ શ્રી વિનયરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી અજીતસેન વિજયજી મ.સા.

વિજયવાડા (આં.પ્ર.)

મુનિરાજ શ્રી સંયમરત્ન વિજયજી મ.સા.
મુનિરાજ શ્રી ભુવનરત્ન વિજયજી મ.સા.

શ્રમણી વૃંદ

અમદાવાદ રતનપોળ (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી કનકપ્રભાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી દર્શિતગુણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિનીતગુણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વાત્સલ્યગુણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સંયમદર્શિતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિશુદ્ધદર્શિતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી જ્ઞાનદર્શિતાશ્રીજી મ.સા.

અમદાવાદ નવા વાડજ (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી પૂર્ણકિરણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી કલ્પરેખાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી પરમરેખાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી પદરેખાશ્રીજી મ.સા.

અલવર (રાજ.)

સાધ્વીજી ડૉ. શ્રી પ્રિયદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી ડૉ. શ્રી સુદર્શનાશ્રીજી મ.સા.

સિયાણા (રાજ.)

સાધ્વીજી શ્રી કલ્પલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી હિતપ્રજ્ઞાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સૌમ્યગુણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વૈરાગ્યગુણાશ્રીજી મ.સા.

ભાંડવપુર (રાજ.)

સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યકિરણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અરૂણપ્રભાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સમ્યગપ્રભાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શરદપ્રભાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શીતલપ્રભાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિનીતપ્રભાશ્રીજી મ.સા.

નીમચ (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજી શ્રી સૂર્યોદયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી કૈલાશશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિપુલદર્શિતાશ્રીજી મ.સા.

પાલીતાણા (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી ચન્દ્રયશાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી દિવ્યદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી દર્શિતકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ચિન્તનકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ચિરાગકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી પુનીતકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મૌનદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી પાવનદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.

નેલ્લોર (આં.પ્ર.)

સાધ્વીજી શ્રી આત્મદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સમ્યગદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ચારૂદર્શનાશ્રીજી મ.સા.

અમદાવાદ (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી વસંતમાલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી રંજનમાલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી રત્નયશાશ્રીજી મ.સા.

ભીલવાડા (રાજ.)

સાધ્વીજી શ્રી પુણ્યદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી હર્ષદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિરતીદર્શનાશ્રીજી મ.સા.

જોધપુર (રાજ.)

સાધ્વીજી શ્રી મોક્ષગુણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી નમ્રગુણાશ્રીજી મ.સા.

થરાદ (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી કૈવલ્યગુણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શુદ્ધાત્મદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શ્રેયસદર્શનાશ્રીજી મ.સા.

બડનગર (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજી શ્રી અવિચલદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી નિરૂપમકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મૈત્રીકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી નિરંજનકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અર્હતપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.

આણંદ (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી અનુપમદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ચૈત્યપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ઉપશમપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિવેકપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિબુધપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સુવ્રતપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સત્વપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અર્પણાપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.

સૂરત (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી શશિપ્રભાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અમિતદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અક્ષયકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી નિર્વેદકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી આગમકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિરાગદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ધ્યાનદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.

અમદાવાદ (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી અનન્તદ્રષ્ટાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મયૂરકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અધ્યાત્મકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અર્પિતકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિતરાગનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિરાગનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી આજ્ઞાનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી જિનાજ્ઞાનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મુક્તિનિધિશ્રીજી મ.સા.

સાધ્વીજી શ્રી રિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સિદ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી પરમનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી રાજનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી લબ્ધિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ગોયમનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી દ્યુતિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મલ્લિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી દીપનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી જયણાનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી દેવનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી પરાગનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વીરનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મેઘનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મેરૂનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મૌલિકનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મંગલનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સુપાર્શ્વનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી નમિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી નન્દિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી નેમિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી આદિનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શ્રેયાંસનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી તીર્થનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી નયનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શુભનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ઉદયનિધિશ્રીજી મ.સા.

અમદાવાદ (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી વિદ્વતગુણાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી રશ્મિપ્રભાશ્રીજી મ.સા.

મુંબઈ (મહારાષ્ટ્ર)

ડૉ. સાધ્વીજી શ્રી દર્શનકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી જીવનકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અપૂર્વકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સુમનકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સૌરભકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ધૈર્યકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ધ્રુવકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી મંત્રકલાશ્રીજી મ.સા.

પાંચેડી (રાજ.)

સાધ્વીજી શ્રી શાસનલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અનેકાન્તશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી યશોલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી કૌવિદલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અતિશયલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી કારુણ્યલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સમર્પણલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વીતરાગલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શ્રેયસલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી પરમેષ્ઠિલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સંભવલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી જ્યોતિલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી હ્રીંકારલતાશ્રીજી મ.સા.

રતલામ (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજી શ્રી તત્વલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ભક્તિરસાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અમૃતરસાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી કુસુમલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સિદ્ધાન્તરસાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી રાજયશાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી જિનાંગયશાશ્રીજી મ.સા.

આહોર (રાજ.)

સાધ્વીજી શ્રી વિજ્ઞાનલતાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અરિહંતનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સંવરલતાશ્રીજી મ.સા.

રાણાપુર (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજી શ્રી ચારિત્રકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી આર્જવકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી અર્હમનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી દેશનાનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ક્રિયાનિધિશ્રીજી મ.સા.

ભીનમાલ (રાજ.)

સાધ્વીજી શ્રી નયનપ્રભાશ્રીજી મ.સા.

અમદાવાદ (મોટેરા)

સાધ્વીજી શ્રી ભાગ્યકલાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી યુગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી યશપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.

જાલોર (રાજ.)

સાધ્વીજી શ્રી કાવ્યરત્નાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી કુલરત્નાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી વિરતિરત્નાશ્રીજી મ.સા.

ખાચરોદ (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજી શ્રી સંવેગપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી કુમુદપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શાશ્વતપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ઋજુપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી ચિત્તપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સ્મિતપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી પરાર્થપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી સોહમપ્રિયાશ્રીજી મ.સા.

નાગદા (મ.પ્ર.)

સાધ્વીજી ડૉ. શ્રી પ્રીતિદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી રૂચિદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શ્રુતિદર્શનાશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી તૃપ્તિદર્શનાશ્રીજી મ.સા.

ડીસા (ગુજ.)

સાધ્વીજી શ્રી શ્રુતનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી યોગનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી શ્રદ્ધાનિધિશ્રીજી મ.સા.
સાધ્વીજી શ્રી તપોનિધિશ્રીજી મ.સા.

પૂજ્યશ્રીના પુણ્ય પ્રભાવ અને નવકાર મહામંત્રની શ્રધ્ધા પર શ્રીમતી સરોજબેન વિનોદભાઈ બલ્લુનું વ્યકતવ્ય

યુગ પ્રભાવક સુવિશાલ સમર્થ ગચ્છાધિપતિ પરમ પૂજ્ય રાષ્ટ્રસંત વર્તમાનાચાર્ય શ્રીમદ્ વિજય જયંતસેન સૂરિશ્વરજી મ.સા. આદિ સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની પાવનકારી નિશ્રામાં જયંતસેન ધામ-રતલામ નગરે ૧૮૦૦ થી વધુ આરાધકોએ નવદિવસીય એકસણા સાથે નવકાર મંત્રની આરાધના સંપન્ન કરી અનંત પુણ્ય ઉપાર્જન કર્યું હતું.

નવદિવસીય નવકાર મહામંત્રની આરાધના દરમ્યાન રાજસ્થાન, મધ્યપ્રદેશ, ગુજરાત વિગેરે સ્થળોએથી આવેલ આરાધકોમાંથી પૂજ્યશ્રીના સાનિધ્યમાં સ્ટેજ પર આવી દરેક રાજ્યોમાંથી નવકાર મહામંત્રના પ્રભાવ વિશે વ્યક્તવ્ય રજુ કર્યું હતું. ગુજરાત તરફથી શ્રીમતી મથુબેન ચંદુલાલ મોદી તથા શ્રીમતી સરોજબેન વિનોદભાઈ બલ્લુએ તેમનું વ્યક્તવ્ય રજુ કરી સહુને મંત્રમુગ્ધ કરી દીધા હતા.

સરોજબેન બલ્લુ તેમના પતિ વિનોદભાઈ બલ્લુ સાથે છેલ્લા આઠ વર્ષથી પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં પ્રતિવર્ષ નવકાર મહામંત્રની આરાધના કરે છે. સરોજબેને તેમના વ્યક્તવ્યમાં ધર્મ સભાને સંબોધી તેમની સાથે ઘટેલી ઘટનાને વર્ણવી હતી. તેમને જણાવ્યું હતું કે નવકાર મંત્ર જૈનના દરેકના હૈયે વસ્યો હોય છે પણ તેનો પ્રભાવ શું છે ? તેનું સાચું જ્ઞાન તો પૂજ્યશ્રી પાસેથી પ્રાપ્ત થયું છે. પૂજ્યશ્રીના પુણ્ય પ્રભાવ અને નવકાર મહામંત્ર પર અતૂટ શ્રધ્ધા ધરાવતા સરોજબેને કહ્યું હતું કે ચાતુર્માસ અર્થે બિરાજમાન પૂજ્યશ્રીની નિશ્રામાં નવકાર આરાધના કરવા શ્રી દિનેશભાઈ બલ્લુ પરિવાર તેમજ તેમના મોટા બહેન રસીલાબેન અને નડિયાદના શ્રી હિંમતભાઈ દેસાઈ વિગેરે ગ્રુપ ટ્રેઈનમાં બિજાપુર જઈ રહ્યા હતા ત્યારે મારા પતિ (શ્રાવક) ને ભારે હૃદયરોગનો હુમલો આવતાં બેભાન થઈ ગયા હતા અને પુનાની હોસ્પીટલમાં તાત્કાલીક દાખલ કરવા પડ્યા હતા. ત્યાં તબીબો દ્વારા સારવાર અપાઈ હતી ત્યારબાદ મારા પતિ વિનોદભાઈ બલ્લુ ભાનમાં આવ્યા હતા. ભાનમાં આવતાં જ મારા પતિએ એક જ રટણ ચાલુ રાખ્યું હતું મને અમદાવાદ પરત ન લઈ જશો મને તો પૂજ્યશ્રી પાસે બિજાપુર લઈ જઈ તેમનો વાસક્ષેપ કરાવો તે મુજબ સરોજબેન તેમના પતિને લઈ બિજાપુર નગરે પહોંચ્યા હતા અને પૂજ્યશ્રી પાસે લઈ ગયા હતા ત્યાં પૂજ્યશ્રીએ વાત્સલ્યભર્યો હાથ વિનોદભાઈના મસ્તકે મુકી વાસક્ષેપ કર્યો હતો. પૂજ્યશ્રીના આશિર્વાદથી કોઈ ચમત્કાર સર્જાયો હોય તેમ આવી નાજુક પરિસ્થિતિમાં પણ વિનોદભાઈ બલ્લુએ એકાસણા સાથે નવકાર મહામંત્રની આરાધના સંપન્ન કરી હતી. સતી સાવિત્રીએ તેમના પતિને મોતના મુખમાંથી પાછા લાવ્યા હતા. તેજ રીતે આ યુગમાં પણ પૂજ્યશ્રીના પુણ્ય પ્રભાવ પ્રત્યે અને નવકાર મહામંત્ર પ્રત્યે અતૂટ શ્રધ્ધા ધરાવતા સરોજબેને પણ તેમના પતિ વિનોદભાઈને મોતના મુખમાંથી પાછા બોલાવ્યા છે તેમ કહીએ તો ખોટું નથી ધન્ય છે પૂજ્યશ્રીના પુણ્ય પ્રભાવને... નવકાર મહામંત્ર પર રહેલી શ્રધ્ધાને અને પતિભક્તિ કરનાર સરોજબેન બલ્લુને.

:: ખાસ વાંચવું ::

સપ્ટેમ્બર-૨૦૧૬ ''શાશ્વત ધર્મ'' નો વાગરા પ્રતિષ્ઠા વિશેષાંક પ્રકાશિત થયો હોઈ ''ગુર્જર જૈન જ્યોત'' માં ઓગસ્ટ-સપ્ટેમ્બર-૨૦૧૬ ના સમાચાર ઓક્ટોબર-૨૦૧૬ ના ''શાશ્વતધર્મ'' ''ગુર્જર જૈન-જ્યોત'' માં પ્રસિધ્ધ કરાયેલ છે. તેની દરેક વાંચકોએ નોંધ લેવી.

શ્રી વરખડી સકલ તીર્થ ધામ - થરાદ ખાતે પ્રથમવાર નવ્વાણું યાત્રા સંપન્ન..
વધુ વિગત આવતા અંકે.

कुमकुम सने पगलिये

MSG Presents....

धर्म जागृति यात्रा -1

संप्रति महाराजा के समय में जन-जन तक जैन धर्म पहुँचाने हेतु महाराजा की ओर से श्रावक वर्ग तैयार किया जाता था जो देश-विदेश में जाकर हजारों लोगों को जिनवाणी से परिचित कराने, जैन धर्म का सूक्ष्म ज्ञान प्रदान करने का कार्य करता था। इसी श्रृंखला में पूज्य गच्छाधिपति श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से 'मधुकर संस्कार ज्ञानायतन' परिवार द्वारा त्रिस्तुतिक संघ में पहली बार 1, 2, 3 व 4 नवंबर को 'धर्म जाग्रति यात्रा' का विशेष आयोजन किया गया है।

इस यात्रा में ज्ञानायतन परिवार के 15 श्रावक इस वर्ष मालवांचल के कई गाँवों में जाकर जिनवाणी के ज्ञान से सभी स्वधर्मी भाइयों को धर्म जागरण के प्रति प्रेरित करेंगे। ज्ञानायतन परिवार की एक बैठक में पूज्य गुरुदेव श्री के निर्देशानुसार इस वर्ष जावरा, खाचरौद, बड़नगर, राणापुर, रतलाम नगर में 'जागृति यात्रा' जाकर धर्म का संदेश प्रदान करेगी। धर्म जागृति यात्रा -1 का सम्पूर्ण लाभ श्री इन्दरमलजी दसेड़ा (साफे वाले) जावरा ने लिया है। ज्ञानायतन में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम यथा गुरुवंदना, पूजा, विवेचन आदि होंगे। सम्पर्क सूत्र 9033476842 से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

चातुर्मास में बह रही धर्म सरिता

अलवर । साध्वी श्री डॉ.श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. एवं डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म.सा. की पावन निश्रा में चातुर्मास के दौरान अनेक धार्मिक आयोजन हुए। 10 अगस्त से श्री नवकार आराधना का भव्य आयोजन किया गया जिसमें श्रद्धालुओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। साध्वीजी ने सभी को नवकार की महिमा से अवगत कराया। इसी दौरान श्री पर्युषण महापर्व भी हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। पर्युषण पर्व के दौरान अनेक भक्तों द्वारा विविध तपश्चर्याएँ की गईं। विभिन्न तपस्याओं के तपस्वियों का लाभार्थी परिवारों द्वारा बहुमान किया गया।

श्रीसंघों में पर्युषण आराधना करवाई गई

प्रेरणापुंज सुविशाल समर्थ गच्छाधिपति, जिनशासन सम्राट, संघ एकता के शिल्पी श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. द्वारा संस्थापित एवं अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् द्वारा संचालित श्री राज राजेन्द्र धर्मोत्तेजक परिषद्

त्रिस्तुतिक श्रीसंघों में पर्युषण आराधना का कार्य निःस्वार्थ भाव से कर रही है।

इस वर्ष विभिन्न नगरों धर्माराधना करवाई गई। इसके अतिरिक्त अन्य ग्रामों व कस्बों में भी परिषद् सदस्यों ने जाकर पर्युषण प्रतिक्रमण करवाने का कार्य किया है।

प्रमुख रूप से मध्यप्रदेश के अंजड़ में दीपेन्द्र भाई कोठारी, भाटपचलाना में ऋत्विक एवं पर्व छाजेड़, धार में राजेश भाई सेठिया, मेघनगर में संयम मामा, थांदला में अक्षत सेठ, स्नेह वेदलिया, एवं राज शाह, राजस्थान के बागरा में त्रिलोकभाई कांकरिया, चौराऊ में जयेश शाह, धाणसा में धर्मेन्द्र भाई आलासण में रसिकभाई धरु एवं अनिल भाई शाह, जयपुर में संयम मोरखिया, पक्षाल वोरा एवं तीर्थांक अदाणी, सायला में सुपार्श्व मोरखिया एवं जैन वोहेरा ने सुराणा में संयम दोशी एवं हित सेठ ने धर्माराधना में सहयोग प्रदान किया।

इसी तरह बैंगलोर में संयम सेठ एवं जेनिश वोरा, मेंगलवा में दर्शिल भंडारी, हर्षित वोरा एवं जैनम सेठ, राजमहेन्द्री (दक्षिण) में मोक्षेश वोहरा, मिलन वोरा एवं हर्ष वोरा, दिल्ली में राज देसाई, अंकित वोरा (बापजी) ने अपनी सेवाएं दीं। इसी क्रम में गुंटूर में भव्य शेठ, मीत दोशी, चिराग, हुबली में धर्मेन्द्र भाई ने पर्युषण प्रतिक्रमण व अन्य धर्म आराधना संपन्न कराईं। टांडा, पारा, झकनावदा आदि स्थलों पर भी सदस्यों ने सेवा प्रदान की।

जोधपुर : चातुर्मास में भव्य धर्माराधना

जोधपुर। सरल स्वभावी, मुनि प्रवर श्री वीररत्नविजयजी म.सा. वयोवृद्ध तपस्वी मुनिराज श्री विनीतरत्न विजयजी म.सा ठाणा 2 एवं साध्वी श्री मोक्षगुणाश्रीजी म., साध्वी श्री नम्रगुणाश्रीजी ठाणा 2 जोधपुर में चातुर्मासार्थ विराजमान हैं।

साधु, साध्वी भगवंतों का चातुर्मास हेतु भव्य प्रवेश आषाढ़ सुद 6, रविवार 10 जुलाई 2016 को शुभ बेला में श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ ने खूब उमंग, उल्लासपूर्वक, गाजे-बाजे के साथ करवाया।

पूज्य मुनिराज श्री वीररत्नविजयजी म.सा. प्रतिदिन प्रवचन फरमा रहे हैं। बड़ी संख्या में श्रोताजन प्रवचन- श्रवण का लाभ ले रहे हैं। तप आराधना की प्रेरणा जागृत हुई है। यहाँ पर अष्ट महासिद्धि तप (16) दिन का आयोजन हुआ जिसमें बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर तप आराधना की। श्री अष्ट महासिद्धि तप की आराधना का लाभ श्री राजेन्द्र सूरि महिला मंडल जोधपुर ने लिया। उणोदरी तप, दीपक एकासणे की आराधना पूरी हुई।

नमस्कार महामंत्र की भव्य

आराधना हुई। नौ एकासणे, जाप, पूजा, भक्ति आदि हुए। जाप के दौरान नौ दिवस तक नमस्कार महामंत्र पर दृष्टान्तों सहित गुरुदेव श्री वीररत्नविजयजी म.सा. ने सुन्दर नौ प्रवचन दिए जिन्हें सुनकर महामंत्र पर श्रद्धा और भी पुष्ट हुई और जाप की भावना आई।

पूज्य गुरुदेव के व्याख्यान में श्री गौतम पृच्छा ग्रन्थ, श्री धन्यकुमार चरित्र का सुन्दर ढंग से वाचन कर रहे हैं। श्री गौतम पृच्छा ग्रन्थ वोहराने का लाभ श्री पारसराज सा जेठमल सा पोरवाल (सियाणा) ने तथा श्री धन्यकुमार चरित्र का सूत्र वोहराने का लाभ श्री घेवरचन्द सा. सुराणा (पारलु) ने लिया।

इसी तरह प्रत्येक सुदी सप्तमी को यहाँ राजेन्द्र भवन में रात्रि को सुन्दर भक्ति का आयोजन भी भक्तों द्वारा होता है। भावी नागरिकों के सुसंस्कार हेतु प्रति रविवार को श्री त्रिस्तुतिक संघ द्वारा श्री राजेन्द्र जयन्त वीर जैन शिक्षण शिविर का आयोजन भी किया जा रहा है। इसमें गुरुदेव श्री वीररत्न विजयजी म.सा. 4 विषयों पर मुख्य रूप से शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इन विषयों में 1. जिनपूजा, 2. जैन इतिहास, 3. आवश्यक सूत्र (108 प्रश्नोत्तर) व 4. जैन कथा सम्मिलित है। शिक्षण शिविर में अच्छी संख्या में भावी नागरिक लाभ ले रहे हैं। इसी के साथ साध्वीजी श्री मोक्षगुणाश्रीजी एवं श्री नम्रगुणाश्रीजी म. ने भी प्रश्न पेपर निकाल कर ज्ञान प्रचार किया। सही जवाब लिखने वाले एवं प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले शिक्षणार्थियों को पुरस्कार देकर सम्मानित एवं प्रोत्साहित किया गया।

पूज्य गुरुदेव श्री वीररत्न विजयजी म.सा. का जोधपुर में यह तीसरा चातुर्मास है। इसके पूर्व 2002 एवं 2007 में आपका चातुर्मास यहाँ हुआ था। पूज्य गुरुदेव के हाथों श्री अमर नगर में सुन्दर जिन मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी। अभी हाल के दिनों में अमर नगर में उपाश्रय का खाद् मुहूर्त एवं शिलान्यास भी सम्पन्न हुआ है। यहाँ भव्य सुन्दर आराधना भवन बनेगा। इसका लाभ श्री पारसमलजी चौधरी बागोड़ा वालों ने लिया है।

पूज्य गुरुदेव श्री वीररत्न विजयजी म.सा.का बहुत ही सरल एवं शान्त स्वभाव के हैं। कार्य की प्रेरणा भर देते हैं जबर्दस्ती नहीं करते। उनका लगाव बच्चों के प्रति ज्यादा है। धर्मप्रवृत्ति कराना, सामायिक, पूजा, गाथा कराना, सुसंस्कार देकर भावी पीढ़ी को सुन्दर बनाना उनका लक्ष्य है। पूज्य गुरुदेव के ऐसे सुन्दर स्वभाव के कारण बार-बार चातुर्मास कराने का भाव होता है। ऐसे गुरुदेव को कोटि वंदन। यह जानकारी पारसमल श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ जौधपुर के अध्यक्ष ने दी।

श्री भाण्डवपुर तीर्थ में आराधना का ठाठ

अति प्राचीन श्री भाण्डवपुर तीर्थ में इस वर्ष पहली बार सामूहिक चातुर्मास हो रहा है। भाण्डवपुर तीर्थ प्रेरक मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा एवं विदुषी साध्वीजी श्री सूर्यकिरणा श्रीजी म.सा. आदि श्रमणिवृंद की शुभ निश्रा में सभी आराधक विविध चातुर्मासिक आराधना कर रहे हैं, जिसमें श्री भाण्डवपुर

महावीर अट्ठम् 15, आयंबिल 40, श्री नवग्रह तप (19 दिवसीय) 50, श्री जीरावला पार्श्वनाथ अट्ठम् 60, आयंबिलपूर्वक 6 उपवासपूर्वक 1, मासक्षमण, 16 उपवास की तपस्याएं सानन्द सम्पन्न हुईं।

* **आहोर।** साध्वीजी श्री विज्ञानलताश्रीजी आदि ठाणा 3 का चातुर्मास प्रवेश 14 जुलाई 2016 को धूमधाम पूर्वक हुआ। संघ प्रमुख श्री लालचंदजी गादिया, श्री विमलजी मुथा, श्री मोहनजी पालरेशा, श्री पारसजी परिहार सहित बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं उपस्थित थे।

श्री उपदेश प्रासाद बोहराने का लाभ शा. रमेशकुमार हस्तीमलजी मुथा ने लिया. श्री अमरकुमार सुरसुंदरी चरित्र (प्रीत किये दुःख होय) बोहराने का लाभ मुथा पारसमल वालचंदजी ओस्तवाल (परिषद) ने लिया।

इस अवसर पर अन्य नगरों से आने वाले गुरुभक्तों की भोजन व्यवस्था संघ की ओर से की गई है। चातुर्मास में पर्युषण पर्व पर देशावर से आने वाले भाई-बहनों की भोजन व्यवस्था भी संघ की तरफ से की गई है। साध्वी म.सा. आदि ठाणा 3 सुखसाता से श्री सौधर्मतपागच्छीय जैन त्रिस्तुतिक धर्मशाला में विराजमान हैं। व्याख्यान में बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहती है।

* **जालोर।** त्रिस्तुतिक समाज जालोर में पिछले 40 वर्षों से चातुर्मास के दौरान साधुजी महाराज या साध्वीजी महाराज की निश्रा रहती है। इस वर्ष साध्वीश्री काव्यरत्नाश्रीजी आदि ठाणा 3 का मंगल प्रवेश उल्लासपूर्ण वातावरण में हुआ। चातुर्मास के आरम्भ से ही साध्वजी म. द्वारा अपनी गरिमामय वाणी से संघ को जिनवाणी से तरोबतर किया जा रहा है। 'अभिधान राजेन्द्र कोष' एवं 'कर्म राजा की करुण कहानी' पर सुबह 9.30 से 10.30 बजे तक प्रवचन चालू हैं। सरल शब्दों, मधुर वाणी और धारा प्रवाह प्रवचन से ऐसा लगता है कि जिह्वा पर सरस्वती विराजमान हैं। हर रविवार को विशेष धार्मिक कार्यक्रम के आयोजन के साथ ही साथ तपस्याओं का क्रम भी जारी है। प्रवचन में श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति अच्छी है। साध्वीजी म. ने जहां-जहाँ चातुर्मास किए हैं वहाँ पर अच्छा प्रभाव छोड़ा है। समाज में हर्ष है।

– हीराचंद संघवी

नागदा। 14 जुलाई 2016 को साध्वीश्री प्रीतिदर्शना श्रीजी म., साध्वी श्री रूचिदर्शना श्रीजी म., साध्वी श्री श्रुतिदर्शना श्रीजी म. एवं साध्वी श्री तृप्तिदर्शना श्रीजी म. का चातुर्मास हेतु भव्य मंगल प्रवेश हुआ। इस अवसर पर भव्य जुलूस एवं धर्मसभा का आयोजन किया गया। चातुर्मास अन्तर्गत 10 अगस्त से 18 अगस्त तक श्री नवकार आराधना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसमें श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रति रविवार साध्वीजी की पावन निश्रा में मधुकर संस्कार ज्ञानोपासना शिविर का आयोजन भी निरंतर किया जा रहा है। 29 अगस्त से 5 सितम्बर तक श्री पर्युषण महापर्व भी धूमधाम से सम्पन्न हुए। चातुर्मास के दौरान सभी

स्वधर्मी भक्तों ने सभी धार्मिक अनुष्ठानों एवं तपस्याओं में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

यह जानाकीर श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री सुनिल वागरेचा, सचिव राकेश ओरा, मधुकर चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री मुकेश बोहरा व सचिव श्री मनोज ओरा

तप धर्म जिन शासन में जयवन्त है

राणापुर। साध्वी श्री चारित्रकलाश्रीजी की वर्धमान तप की 71 वीं ओली एवं साध्वी श्री देशना निधिजी के 16 उपवास की तपस्या पूर्ण हुई। इसकी अनुमोदना में श्री संघ ने त्रि-दिवसीय जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव मनाया। अंतिम दिवस पर चल समारोह के साथ श्री राजेन्द्र भवन पर तप अनुमोदना समारोह आयोजित किया गया। समारोह में अहमदाबाद, इन्दौर, दाहोद, पारा, झाबुआ, थराद आदि नगरों से समाजजनों ने उपस्थित दर्ज की।

शोभायात्रा राजेन्द्र भवन से शुरू होकर नगर के मुख्य मार्गों से होकर गुजरी। जैन स्तवनों के कारण वातावरण भक्तिमय बना। गरबा खेलने में युवक-युवतियों का उत्साह देखते बन रहा था। श्रावकजन तपस्वियों की जय-जयकार करते चल रहे थे। साध्वी श्री चारित्रकलाश्रीजी के पारणे की बोली 108 आयम्बिल में उर्मिला जितेन्द्र कटारिया ने ली। साध्वी श्री देशना निधिजी के पारणे का लाभ प्रभावती सोहनलाल भंसाली ने लिया। श्रीसंघ के साथ साध्वीजी उनके घर व्होरने गई। कटारिया परिवार ने संघ पूजा की। राजेन्द्र भवन में तप अनुमोदन सभा हुई। साध्वी मंडल के गुरुवंदन व मंगलाचरण से इसकी शुरूआत हुई। डिंपल मेहता, मलका तलेरा, मंजु सकलेचा, पवन नाहर, सुरेश समीर, बालिका परिषद् ने भक्ति गीत प्रस्तुत किए। चन्द्रसेन कटारिया, राजेन्द्र सियाल, रूपेश व्होरा, साध्वी श्री अर्हम निधि श्री जी ने तप अनुमोदन में विचार व्यक्त किए। साध्वी श्री क्रियानिधि जी ने तप अनुमोदन गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री चारित्रकलाश्रीजी ने तप धर्म की महत्ता पर अपना उद्बोधन दिया। उन्हें वोहराने का लाभ श्री नीलेश सोहनलाल कटारिया ने लिया। संचालन श्री कमलेश नाहर ने किया।

तप धर्म जिन शासन में जयवन्त है-तप आराधन के क्रम में श्रीमती हेमा ललित सालेचा की गर्म जल के आधार पर 21 उपवास की तपस्या पूर्ण होने पर सुबह उनके निवास पर स्नात्र पूजा पढ़ाई गई। इसके पश्चात् तपस्वी की शोभायात्रा साध्वी श्री चारित्रकला श्रीजी की निश्रा में निकाली गई। शोभायात्रा सुभाष चौपाटी, पुराना बस स्टेंड, एमजी रोड़ होती हुई जिन मंदिर पहुँची। यहाँ तपस्वी ने देव वंदन किया। इसके बाद शोभायात्रा सरदार मार्ग, शिवाजी चौक होते हुए राजेन्द्र भवन पहुँची। यहाँ तप अनुमोदन एवं अभिनंदन सभा साध्वीश्री के मंगलाचरण से शुरू हुई। इसके पूर्व साध्वी मंडल का सविधि वंदन किया गया। सुरेश समीर ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती डिंपल बेन ने तपस्या गीत गाया। श्रीसंघ अध्यक्ष श्री दिलीप सकलेचा, चातुर्मास समिति अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सियाल, श्री

ओ.एल. जैन, वैयावच्च समिति प्रमुख श्री तरुण सकलेचा ने तप अनुमोदना में विचार व्यक्त किए।

भोपाल से पधारे सिद्धि तप के तपस्वी श्री शांतिलाल कटारिया का बहुमान श्री रमेशचन्द्र नाहर, श्री चन्द्रसेन कटारिया ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन श्री प्रदीप भंसाली ने किया। तपस्वी को अभिनंदन पत्र श्री अनिल सेठ, श्री सजनलाल कटारिया, विमल बांठिया, विनय नाहर आदि ने भेंट किया। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक, महिला, तरूण, बालिका परिषद्, वैयावच्च समिति, अग्रवाल दिगम्बर जैन समाज की ओर से तपस्वी का बहुमान हुआ। कार्यक्रम का संचालन श्री कमलेश नाहर ने किया। आभार श्री ललित सालेचा ने माना। श्री मोतीलाल सालेचा की ओर से तप अनुमोदनार्थ विभिन्न संस्थाओं को राशि भेंट की गई।

अपने प्रेरक प्रचचन में साध्वी श्री चारित्रकला श्रीजी ने तप की महिमा बताने के साथ ही साथ उपस्थित लोगों से व्यसन छोड़ने का संकल्प लेने को भी कहा। साध्वीश्री ने कहा कि आहार, मैथुन, भय व परिग्रह ये चार संज्ञा पूरे विश्व में व्याप्त है। व्यक्ति इन्हीं के कारण दुःख पा रहे हैं। आहार संज्ञा के अधीन रहने वाला व्यक्ति नर्क में जाता है। इससे मुक्त रहने वाली आत्मा ही मोक्ष गामी बनती हैं। तप, व्यक्ति के भीतर के विषय, कषायों को दूर करता है। जिन शासन में तप सदा से जयवन्त रहा है।

महावीर समस्त विश्व की शान है

श्री पुष्पेन्द्रमुनिजी म.सा.

महावीर मानव थे
पर हमने उन्हें भगवान् बना दिया,
उनके उपदेशों को जीवन में उतारना था
पर हमने शास्त्रों में सजा दिया ।
उनकी तस्वीर मन मन्दिर में सजानी थी
पर पत्थरों के मन्दिरों में बिठा दिया,
उनका जीवन अनुकरणीय था
पर हमने केवल वंदनीय बना दिया ।
अहिंसा के पुजारी
हम महावीर की संतान है,
जैन पद्धति पर चल रहा
आज विश्व का विज्ञान है ।

ये धर्म ही नहीं संस्कार है
जिस पर हम सबको अभिमान है,
24, वे तीर्थंकर भ. महावीर
समस्त विश्व की शान है ।।
धरती माता की आँखों से
धारा बहती है नीर की ।
बोली धरती माता जरुरत है
आज फिर से महावीर की ।।

श्री संघ सौरभ

धूमधाम से मनाया आचार्यश्री का जन्मोत्सव

मेघनगर। पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का 80 वाँ जन्मोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। त्रिस्तुतिक संघ अध्यक्ष श्री मनोहरलालजी चोरड़िया ने बताया कि इस अवसर पर प्रातः भक्तामर पाठ एवं दोपहर में श्री राजेन्द्र सूरि अष्टप्रकारी पूजा पढ़ाई गई जिसका लाभ श्री सुभाषचन्द्र चांदमलजी लोढ़ा परिवार ने लिया। सामूहिक स्वामी वात्सल्य का आयोजन किया गया एवं रात्रि में ज्ञान मंदिर परिषद् में 80 दीप प्रज्जवलित कर भव्य आरती एवं भक्ति की गई।

महिला परिषद् द्वारा मूक बधिर आश्रम अंतरवेलिया व करुण आश्रम राणापुर जाकर वस्त्र, मिठाई, कंबल, फल आदि वितरित किए गए। इस अवसर पर महिला परिषद् की पहल पर 123 लोगों ने नेत्रदान का संकल्प लिया। सभी सदस्यों ने झाबुआ कलेक्टर श्रीमती अरुणा गुप्ता को नेत्रदान के संकल्प पत्र सौंपे। परिषद् अध्यक्ष श्रीमती सुनीता मुथा ने बताया कि आचार्य श्री की प्रेरणा से दृष्टिहीन लोगों के जीवन में हमें प्रकाश लाना है। इस हेतु मरणोपरांत नेत्रदान हेतु सभी को प्रेरित कर रहे हैं। परिषद् के सदस्यों ने कलेक्टर को अब तक किए गए समाजसेवा के कार्यों से भी अवगत कराया। इस अवसर पर परिषद् अध्यक्ष श्रीमती सुनिता मुथा, उपाध्यक्ष श्रीमती साधना लुणिया, सचिव श्रीमती अलका लोढ़ा, कोषाध्यक्ष श्रीमती अर्चना कावड़िया, सदस्य श्रीमती विमला कोठारी, श्रीमती प्रेमलता रांका, श्रीमती सुमन भंडारी, श्रीमती कविता भंडारी, श्रीमती अनिता लुणावत, श्रीमती कुसुम कांठी, श्रीमती कल्पना रांका सहित अन्य महिला सदस्य उपस्थित थीं।

जावरा में प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित होगा

जावरा। श्री राज राजेन्द्र वाटिका ट्रस्ट जावरा की ट्रस्ट मंडल की बैठक आचार्य देवेश डॉ. श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में रतलाम जयन्तसेन धाम पर आयोजित की गई। बैठक में वाटिका पर भगवान की अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित करने पर विचार विमर्श किया गया।

आचार्य श्री ने अंजनशलाका जयन्तसेन धाम रतलाम पर कराने का आदेश दिया एवं प्रतिष्ठा आचार्यश्री द्वारा शुभ मुहूर्त में जावरा में कराने का आशीर्वाद दिया। प्रतिष्ठा कार्यक्रम आयोजित करने हेतु वरिष्ठ मुनिराज श्री नित्यानंद विजयजी म.सा. एवं श्री चारित्ररत्नविजयजी म.सा. ने मार्गदर्शन दिया। बैठक में वाटिका ट्रस्ट अध्यक्ष श्री इन्दरमल

दसेड़ा, महासचिव श्री सुरेश चौरड़िया, कोषाध्यक्ष श्री रमणीक मेहता, श्रीसंघ अध्यक्ष श्री बाबुलालजी तांतेड़, ट्रस्टी श्री सुजानमल दसेड़ा, श्री राजमल धारीवाल, श्री सुरेन्द्र पोखरना, श्री नगीन सकलेचा, श्री प्रकाश कांठेड़, श्री विजय आंचलिया, श्री प्रकाश मारवाड़ी, श्री संदीप जागीरदार, श्री संजय रूनवाल, परिषद् के अध्यक्ष श्री यशवंत चौरड़िया, श्री धर्मेन्द्र कोलन, डॉ. श्री सुरेश मेहता, श्री सुरेश धारीवाल, श्री सुरेश सुराणा आदि ट्रस्टीगण उपस्थित थे। उक्त जानकारी परिषद् के महासचिव श्री संजय धाड़ीवाल ने दी।

धूमधाम से मनाई वीरचंद राघव गांधी जयंती

बाडमेर। राष्ट्र गौरव वीरचंद राघव गांधी की 153 वीं जन्म जयंती बाडमेर नगर में अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ के तत्वावधान में स्थानीय गुणसागरसूरी साधना भवन में धूमधाम से मनाई गई।

कार्यक्रम में 'श्री गांधी बिफोर गांधी' पुस्तक के तीन भाषाओं में प्रकाशित संस्करण का विमोचन किया गया। पूर्व संध्या पर देश के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने युवक महासंघ द्वारा देशभर में वीरचंद गांधी जयंती मनाने पर बधाई संदेश प्रसारित किया। श्री वीरचंद गांधी की जीवनी पर आधारित चित्र प्रदर्शनी भी लगाई गई। कार्यक्रम के अंत में श्री अशोक बोथरा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। उक्त जानकारी श्री चन्द्रप्रकाश छाजेड़ ने दी।

परिषद् परिवार का उत्कृष्ट आयोजन

बदनावर। प.पू.राष्ट्रसंत सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी गुरु महाराजा के 78 वें जन्म वर्ष उपलक्ष्य में बदनावर परिषद परिवार द्वारा 'गुरु सप्तमी' महोत्सव पर मोहनखेड़ा में श्री जयन्तसेन म्यूजियम परिसर में प.पू. आचार्यश्री की निश्रा में 78 प्रकार की वस्तुओं से 78 प्रकार की विभिन्न आकर्षक मनमोहक गवली बनाई गई। लगभग एक लाख गुरुभक्तों ने गवलियों को निहारा व परिषद् परिवार बदनावर की सराहना की। प.पू. आचार्यश्री एवं समस्त साधु-साध्वी भगवंत ने बदनावर परिषद् को उत्कृष्ट कार्य के लिए शुभाशीष दिया। म्यूजियम ट्रस्ट मंडल एवं परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश भाई धरू, महामंत्री श्री अशोकजी श्रीश्रीमाल सहित अनेक गुरुभक्तों ने बदनावर परिषद् का बहुमान किया।

कार्यकारिणी गठित - मुनिराज श्री जयरत्नविजयजी की निश्रा में राजेन्द्र शांति विहार काया में श्री राजेन्द्र सूरि जैन सेवा संस्थान की कार्यकारिणी का गठन किया गया। यह कार्यकारिणी 2016-17 से 2018-19 तीन वर्ष तक कार्यरत रहेगी।

इसमें संरक्षक पूज्य मुनिराज श्री जयरत्न विजयजी, अध्यक्ष श्री

जीवनसिंह मेहता-सुन्दरवास, महामंत्री श्री अरुणकुमार (बड़ाला), उपाध्यक्ष श्री कीर्तिभाई जैन, कोषाध्यक्ष श्री गजराज चपलोत, महिला प्रतिनिधि श्रीमती कनक मोगरा, तीर्थयात्रा प्रभारी श्री अमितकुमार बिराणे रहेंगे।

स्वसंचालित धर्मानुष्ठा में तप आराधनाओं का कीर्तिमान बना

रतलाम। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के मंगल स्वास्थ्य की कामना से नीमवाला उपाश्रय पर 375 से अधिक अनुयायियों द्वारा 'गुरु रहे सदा स्वस्थ' वार्षिक स्व संचालित धर्मानुष्ठान में संभवतः अभी तक की सर्वाधिक तप आराधनाओं का कीर्तिमान स्थापित किया गया है।

धर्मानुष्ठान संयोजक पारसमल खेड़ावाला ने बताया कि राष्ट्रसंतश्री का सम्पूर्ण जीवन नवकारमय है। साध्वीश्री डॉ. प्रीतिदर्शना श्रीजी म.सा., साध्वीश्री रूचिदर्शनाश्रीजी म.सा., साध्वीश्री श्रुतिदर्शनाश्रीजी म.सा. एवं साध्वी श्री तृप्तिदर्शनाश्रीजी की प्रेरणा से त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ रतलाम द्वारा राष्ट्रसंत श्री के मंगल स्वास्थ्य की कामना हेतु यह धर्मानुष्ठान उनके 80 से 81वें जन्मोत्सव वर्ष (9 दिसम्बर 2015 से 27 नवंबर 2016) को समर्पित करते हुए प्रारंभ किया गया है। इसके अन्तर्गत 8 माह (236) दिन पूर्ण हो चुके हैं। प्रति साधक 5 माला द्वारा अब तक महामंत्र नवकार के 41 लाख जाप, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की 20 माला द्वारा प्रति सुदी पूनम व प्रति बीदी दशमी को मौन रहकर 18 लाख जाप, प्रति सुदी सातम को गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. के 9 लाख जाप हो चुके हैं। इसी क्रम में साधकों द्वारा 4100 सामायिक, 11 हजार प्रभु पूजन, 5500 प्रतिक्रमण, 340 से अधिक पौषध हो चुके हैं, जो अपने आपमें एक अद्भुत कीर्तिमान है। श्रीसंघ के इस अनूठे अभियान की साधु-साध्वी भगवंतों ने अनुमोदना की है। त्रिस्तुतिक जैन श्री संघ अध्यक्ष डॉ. ओ.सी.जैन, सह संयोजक श्री सुरेशचन्द्र बोराना, श्री निर्मल कटारिया, धर्माराधक सेवा प्रकल्प प्रभारी श्रीमती ममता धनसुख भंडारी, रचनात्मक एवं संस्काररोपण प्रभारी श्री अनोखीलाल भटेवरा, निर्णायक मंडल के श्री सुजानमल सोनी, श्री सोहनलाल मूणत, श्री गेंदालाल सकलेचा, श्री महावीर पोरवाड़, श्रीमती सरोज तेजमल कांसवा ने सभी धर्माराधकों की तपाराधना की अनुमोदना करते हुए राष्ट्रसंतश्री के मंगल स्वास्थ्य की कामना की एवं उनके दीर्घायु जीवन से श्रीसंघ को सदैव प्रेरणा मिलती रहे यह परमात्मा से प्रार्थना की है।

धूमधाम से मनाया पर्यूषण पर्व

रतलाम। मुनिमंडल एवं साध्वीवृंद की निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ द्वारा नीमवाला उपाश्रय पर पर्युषण महापर्व में जन्मोत्सव, संवत्सरी पर्व एवं चैत्य परिपाटी का उत्साहपूर्वक आयोजन किया गया। श्री पारसमल खेड़ावाला

ने बताया कि राष्ट्रसंतश्री का नवोदित तीर्थ श्री जयन्तसेन धाम पर ऐतिहासिक चातुर्मास हो रहा है। श्रीसंघ की विनंति स्वीकार कर राष्ट्रसंतश्री ने उपाश्रय में जन्मोत्सव पर्व परम्परानुसार मनाने की स्वीकृति प्रदान की है। इस अवधि में आकर्षक प्रभु अंगरचना, प्रभु पूजन, प्रभु भक्ति, सपनाजी की बोलियां, चैत्य परिपाटी का आयोजन, महिलाओं का नित्य प्रतिक्रमण साध्वीजी की निश्रा में किया गया। त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ एवं ट्रस्ट मंडल अध्यक्ष डॉ. श्री ओ.सी.जैन, उपाध्यक्ष श्री संजय घोचा, सचिव श्री अनोखीलाल भटेवरा, कोषाध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र बोराना, सहसचिव श्री राजेन्द्र लुणावत, ट्रस्टीगण श्री श्रेणिक घोचा, श्री रमणिक मालक तथा श्री शिखर दुग्गड़ ने राष्ट्रसंतश्री द्वारा जन्मोत्सव मनाने की स्वीकृति दिए जाने को उपकार मानते हुए चातुर्मास लाभार्थी श्री चैतन्यकुमार काश्यप के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया है।

कार्यकारिणी गठित

मन्दसौर। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद् शाखा मन्दसौर की कार्यकारिणी का गठन निर्विरोध किया गया।

इसमें निदेशक श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, श्री गजेन्द्र हींगड़, संयोजक श्री पारसमल चपरोत, श्री देवेन्द्र चपरोत, श्री महेन्द्र कोठारी, संरक्षक श्री अभय नाहर, श्री मनीष बाफना, परामर्शदाता श्री अपूर्व डोसी, श्री मनीष सगरावत, श्री संदीप हींगड़, अध्यक्ष श्री कमलेश सालेचा, महामंत्री श्री जयेश डांगी, उपाध्यक्ष श्री कपिल खाबिया, श्री आयुष डोसी, सहमंत्री श्री अक्षय खाबिया, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र छिंगावत, प्रवक्ता श्री विजेन्द्र फाफरिया, शिक्षामंत्री श्री निकित मेहता, संगठन मंत्री श्री मंगलम डोसी, श्री हर्ष बाफना, प्रचार मंत्री श्री सोहम कर्नावट, सांस्कृतिक मंत्री श्री रत्नेश पारस मनोनीत किए गए हैं। सदस्य के रूप में श्री शिल्पेश नाहटा, श्री संजय नागौरी, श्री नेहिल डांगी, श्री गर्वित सगरावत, श्री मनोज नाहटा, श्री आशीष छिंगावत, श्री अजय छिंगावत, श्री मयंक सालेचा आदि नियुक्त किए गए हैं। उक्त जानकारी परिषद् के महामंत्री श्री जयेश डांगी ने दी।

*** चुनाव सम्पन्न– कुशलगढ़।** पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद

*** गुन्टूर।** श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट गुन्टूर ट्रस्ट के पदाधिकारियों का चुनाव 15 अगस्त 2016 को सम्पन्न हुआ। जिसमें अध्यक्ष पद पर शा. कपूरचंदजी सराफ (आहोर), उपाध्यक्ष पद पर श्री रमेशकुमारजी कांकरिया (बागरा), सचिव पद पर संघवीश्री जुगराजजी भंडारी (सरत), सहसचिव पद पर शा. विनोद कुमारजी पोरवाल (आहोर), कोषाध्यक्ष पद पर शा. इन्दरमलजी खांटेड संघवी (बागरा) को मनोनीत किया गया।

परिषद प्रांगण से

कार्यकारिणी गठित

मन्दसौर। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद् शाखा मन्दसौर की कार्यकारिणी का गठन निर्विरोध किया गया।

इसमें निदेशक श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, श्री गजेन्द्र हींगड़, संयोजक श्री पारसमल चपरोत, श्री देवेन्द्र चपरोत, श्री महेन्द्र कोठारी, संरक्षक श्री अभय नाहर, श्री मनीष बाफना, परामर्शदाता श्री अपूर्व डोसी, श्री मनीष सगरावत, श्री संदीप हींगड़, अध्यक्ष श्री कमलेश सालेचा, महामंत्री श्री जयेश डांगी, उपाध्यक्ष श्री कपिल खाबिया, श्री आयुष डोसी, सहमंत्री श्री अक्षय खाबिया, कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र छिंगावत, प्रवक्ता श्री विजेन्द्र फाफरिया, शिक्षामंत्री श्री निकित मेहता, संगठन मंत्री श्री मंगलम डोसी, श्री हर्ष बाफना,

प्रचार मंत्री श्री सोहम कर्नावट, सांस्कृतिक मंत्री श्री रत्नेश पारस मनोनीत किए गए हैं। सदस्य के रूप में श्री शिल्पेश नाहटा, श्री संजय नागौरी, श्री नेहिल डांगी, श्री गर्वित सगरावत, श्री मनोज नाहटा, श्री आशीष छिंगावत, श्री अजय छिंगावत, श्री मयंक सालेचा आदि नियुक्त किए गए हैं।

उक्त जानकारी परिषद् के महामंत्री श्री जयेश डांगी ने दी।

चुनाव सम्पन्न

कुशलगढ़। पूज्य आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के आशीर्वाद व मुनिराजद्वय श्री सिद्धरत्नविजय जी म.सा व मुनिराज श्री विद्वदरत्न विजयजी म.सा. की प्रेरणा से अ.भा.राजेन्द्र जैन महिला परिषद् की राष्ट्रीय अध्यक्षा डॉ.अंगुरबाला सेठिया के मार्गदर्शन में महिला परिषद् की मीटिंग व चुनाव सम्पन्न हुए।

डॉ. सेठिया ने परिषद् के उद्देश्यों को विस्तृत रूप से समझाया। इस अवसर पर महिलाओं ने गुरुदेव रचित स्तवन, सज्झाय, स्तुति, चैत्यवंदन व वर्षभर में कम से कम 551 गाथाएँ याद करने का संकल्प लिया। परिषद् की सक्रियता के लिए माह में चार बार मीटिंग करने का निर्णय लिया गया।

पर्यावरण रक्षा के लिए परिषद् की

प्रत्येक सदस्या द्वारा 5 वृक्ष लगाने का संकल्प व्यक्त किया गया।

इस अवसर पर राजेन्द्र जैन महिला परिषद् कुशलगढ़ (राज.) के चुनाव सम्पन्न हुए। इसमें अध्यक्ष श्रीमती तल्लिका नाहटा, उपाध्यक्ष श्रीमती आभ कावड़िया, महामंत्री श्रीमती डिम्पल नाहटा, सहसचिव श्रीमती शानू चंडालिया व कोषाध्यक्ष श्रीमती रंजना नाहटा चुनी गईं। उक्त जानकारी प्रचार मंत्री श्रीमती उपासना कावड़िया ने दी।

आत्मश्रेयार्थ पूजा पढ़ाई

डीसा। जीवदया प्रेमी श्री हंसमुखभाई वेदलिया की धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती वर्षा बेन की प्रथम मासिक पुण्यतिथि पर 10 अगस्त को श्रीपाल नगर में पंडित कुणाल भाई सुराणा ने दिवंगत आत्मा के आत्मश्रेयार्थ अंतराय कर्म निवारण पूजा पढ़ाई।

इस दिन राष्ट्रसंतश्री के आशीर्वाद एवं साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में डीसा, नया डीसा, थराद, जेतड़ा, लाखणी, निकी पालड़ी, अहमदाबाद, आणंद, सूरत, मुम्बई, पाटण, भाण्डवपुर तीर्थ, कुशलगढ़, इन्दौर, बड़नगर, खाचरौद, राजगढ़, नीमच, शिखरजी आदि स्थलों पर आराधकों ने छः हजार सामायिक की। साथ ही बड़ी संख्या में नवकार मंत्र का जाप भी किया। श्रीमती वर्षा बेन ने अपने जीवन में कई तपस्याएँ तथा तीर्थयात्राएं कीं। उनका स्वर्गवास भी श्री शंखेश्वर तीर्थ की यात्रा के दौरान ही हुआ था।

संवत्सरी पर्व पर कत्लखाने बंद करवाने का ज्ञापन सौंपा-

हुबली। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के सदस्यों ने गुरुवार को हुबली के तहसीलदार श्री शशिधर मडयलि को मिलकर मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में बताया गया कि जैन धर्म का प्रमुख पर्युषण पर्व 29 अगस्त से प्रारंभ होकर 6 सितम्बर तक चलेगा। इन दिनों सभी जैन धर्म प्रेमी ध्यान, दर्शन, तप,साधना, उपासना करते हैं। अहिंसा और करुणा का विशेष संदेश प्रचारित किया जाता है। भगवान महावीर के संदेश 'जियो और जीने दो' को ध्यान में रखते हुए पर्युषण पर्व के अंतिम दो दिन दिनांक 5 एवं 6 सितम्बर को संवत्सरी पर्व पर सम्पूर्ण कर्नाटक के कत्लखाने बन्द रखने एवं मांस का क्रय-विक्रय बंद रखने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर परिषद् के मंत्री श्री नीलेश जैन, सहमंत्री श्री संजय सेठ, श्री हीरालाल फोलामुथा, श्री गुणवंत जैन आदि उपस्थित थे।

मूक पशु-पक्षियों के लिए अनाज एकत्रित किया

हुबली। नवयुवक परिषद् एवं जैन मरुधर संघ के तत्वावधान में मूक पशु-पक्षियों के लिए 'एक मुट्ठी अनाज' कार्यक्रम में साधर्मिकों से धान्य एकत्रित किया गया।

कार्यक्रम संयोजक गुनवंत कांकरिया ने बताया कि पर्युषण पर्व के आठों दिनों कंचगार गली के शांतिनाथजी मंदिर हाल में प्रातः 7.30 से 10.30 बजे तक परिषद द्वारा धान्य पात्र में धान्य एकत्रित किया गया।पर्युषण पर्व के उपरान्त एकत्रित धान को साफ कराकर हुबली गोशाला एवं कबूतर खानों में वितरित किया गया।

उपरोक्त जानकारी परिषद् के सहमंत्री श्री संजय सेठ ने दी।

श्री सकलेचा को श्रद्धांजलि अर्पित की

हुबली। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के सदस्य श्री संदीप सकलेचा का पिछले दिनों निधन हो गया। वे विगत कुछ महीनों से अस्वस्थ थे। परिषद् के अध्यक्ष श्री ललित मांडोत, श्री नितेश जैन, श्री नीलेश जैन, श्री संजय सेठ, श्री सुभाष गांधीमुथा एवं परिषद् के अन्य सदस्यों ने श्री संदीप सकलेचा को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित की। जानकारी में बताया गया कि पिछले दिनों आचार्य महाराज के जन्मोत्सव पर स्व. श्री संदीप सकलेचा की अध्यक्षता में कृत्रिम अंग लगाने के शिविर का आयोजन किया गया था।

दिव्यांगों को लगाए कृत्रिम अंग; राष्ट्रीय पदाधिकारियों का सम्मान हुआ

हुबली। सामाजिक गतिविधि के अवसर पर प्रथम बार हुबली आगमन पर अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का सम्मान समारोह कंचगार गली स्थित महाजन वाड़ी में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरु, महामंत्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, प्रांतीय प्रभारी श्री सुजीत सोलंकी, प्रचार मंत्री श्री सुधीर लोढ़ा, तरूण परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री शशांक लुनावत, जैन मरुधर संघ के अध्यक्ष श्री पुखराज संघवी, राज राजेन्द्रसूरी जैन ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अचलचंदजी मांडोत, श्री हर्षल जैन, श्री ललित माण्डोत आदि ने श्री शांतिनाथ भगवान की तस्वीर के सामने दीप प्रज्जवलित कर किया। परिषद् के सहमंत्री श्री संजय सेठ ने हुबली परिषद् द्वारा पिछले डेढ़ वर्ष में किए गए कार्यों की जानकारी दी।

परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू ने परिषद् द्वारा किए जाने वाले सामाजिक एवं मानवता के कार्यों पर प्रकाश

डाला। महामंत्री श्री अशोक जी एवं श्री सुजीत सोलंकी ने हुबली परिषद् द्वारा कम समय में अधिक व उल्लेखनीय सेवा कार्य करने पर मंत्री श्री नीलेश जैन व श्री ललित माण्डोत का बहुमान किया एवं परिषद् की भी प्रशंसा की। जैन मरुधर संघ अध्यक्ष श्री पुखराजजी संघवी, श्री अचलचंदजी माण्डोत ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

श्री शशांक लुनावत एवं सुधीर लोढ़ा ने रतलाम में होने वाले परिषद् के अधिवेशन में भाग लेने की विनंती की। इस अवसर पर राज राजेन्द्र सूरि जैन ट्रस्ट द्वारा अतिथियों का बहुमान किया गया। हर्षल जैन के नेतृत्व में हुए कार्यक्रम का संचालन श्री संजय सेठ ने किया। अंत में आभार शैलेष जैन ने व्यक्त किया। इस अवसर पर परिषद् के सदस्य, जैन मरुधर संघ के सदस्य, राज राजेन्द्रसूरि ट्रस्ट के सदस्य, गुरुदेव महिला मंडल की सदस्याएं उपस्थित थीं।

झकनावदा :- परिषद् कार्यालय 15 अगस्त के सुअवसर पर ध्वजारोहण कर राष्ट्रगीत गाया गया। भारत माता की जयघोष के साथ परिषद् सदस्यों ने एक-दूसरे को बधाई दी। इस अवसर पर श्री कन्हैयालालजी मांडोत, श्री शैतानमलजी कुमठ, श्री मनोहरलाल कटकानी, श्री अर्जुन सेठिया, श्री दिनेश माण्डोत, श्री प्रकाश माण्डोत, श्री मनीष सेठिया, श्री मितेश कुमठ, श्री अंकित मूणत, श्री शांतिलाल पडियार, श्री ओमप्रकाश अरोड़ा, मानस इंग्लिश मीडियम स्कूल का शैक्षणिक स्टाफ उपस्थित था। कार्यक्रम का समापन मिठाई वितरण के साथ हुआ। इस अवसर पर नवयुवक परिषद् परिवार द्वारा केशरिया भैरव बाग पर पौधरोपण किया गया।

पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण

इन्दौर। राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्, महिला परिषद्, बहु परिषद् एवं परिषद् परिवार शाखा इन्दौर द्वारा 'पर्यावरण दिवस' 15 अगस्त को वृक्षारोपण किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में इन्दौर के वार्ड क्रमांक 71 के पार्षद श्री भरतजी पारख , परिषद् शाखा इन्दौर के अध्यक्ष श्री श्रेणिक कोठारी, राष्ट्रीय शिक्षा मंत्री श्री नीरज सुराना, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री धर्मचंद बोहरा, श्री दिनेश मेहता, श्री अनिल सकलेचा उपस्थित थे। कार्यक्रम के बाद सहभोज हुआ। संचालन नरेन्द्र राठौर ने किया तथा आभार प्रभातजी चौपड़ा ने व्यक्त किया।

स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

हुबली। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् हुबली एवं सरकारी प्राथमिक शाला गिरयाल के संयुक्त तत्वावधान में स्कूल प्रांगण में स्वतंत्रता दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में जैन मरुधर संघ के श्री मीठालाल जैन, श्री शांतिनाथ धार्मिक पाठशाला के गुरुजी श्री अरविंद, परिषद् के अध्यक्ष श्री ललित मांडोत एवं स्कूल के पदाधिकारियों ने झण्डारोहण किया। परिषद् के मंत्री नीलेश जैन ने देश को आजादी दिलाने वाले वीर योद्धाओं के योगदान पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर पिछले 21 वर्षों से अपनी सेवा दे रही शिक्षिका श्रीमती देशपांडे का परिषद् सदस्य श्री योगेश जैन एवं श्री हीरालाल जैन ने बहुमान किया। परिषद् के पूर्व सदस्य पर्यावरण प्रेमी स्व. श्री किशोरजी खिमावत की पुण्य स्मृति पर उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप श्री कैलाश जैन एवं बंटी छतरगोता द्वारा पौध रोपण किया गया। पिछले वर्ष के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को श्री विमल वेदमुथा एवं श्री सुभाष गांधीमुथा ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री गुनवंत जैन ने किया। इस अवसर पर श्री सुभाष मुथा, श्री अक्षय जैन सहित सभी सदस्य उपस्थित थे। यह जानकारी श्री नीलेश जैन ने दी।

तरुण परिषद द्वारा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया

मन्दसौर। श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद् मन्दसौर द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर राजेन्द्र विलास जीवागंज में श्री अजितनाथ भगवान एवं गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी तथा राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के पावन आशीर्वाद से झण्डावंदन एवं पौधरोपण किया गया।

आयोजन में मुख्य अतिथि श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रकुमार हिंगड़ थे। अध्यक्षता संघ के उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने की। विशेष अतिथि के रूप में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के पूर्व अध्यक्ष श्री राजेन्द्र सुराणा, नवयुवक परिषद् के अध्यक्ष

वीरेन्द्र डोसी, तरूण परिषद् के अध्यक्ष श्री कमलेश सालेचा उपस्थित थे। प्रारंभ में स्वागत गीत सर्वश्री अपूर्व डोसी, नयन बाफना, सोहम कर्नावट व यश बाफना ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम पश्चात् अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन तरूण परिषद् द्वारा प्रभावना वितरित की गई। इस अवसर पर सर्वश्री नितेश पोरवाल,अजय फांफरिया, सुधीर लोढ़ा, अभय नाहर, मनीष बाफना, कपिल खाबिया, आयुष डोसी, महेन्द्र छिंगावत, मनीष सगरावत, संदीप हिंगड़, अक्षय खाबिया, मंगलम डोसी, महेन्द्र कोठारी सहित अनेक समाजजन उपस्थित थे। अंत में आभार परिषद् सचिव जयेश डांगी ने व्यक्त किया।

* मैसूर । श्री नवयुवक परिषद् द्वारा स्वतंत्रता दिवस को पर्यावरण दिवस के रूप में मनाते हुए वृक्षारोपण किया गया। पदवराचल्ली स्थित शासकीय विद्यालय में जाकर गरीब एवं जरूरतमंद विद्यार्थियों को यूनिफार्म कोट एवं मिठाई प्रदान की गई। यूनिफार्म का संपूर्ण लाभ श्रीमती सुकी देवी पुखराजजी गोवाणी (मरुधर में चौराऊ) वालों ने लिया। वृक्षारोपण मैसूर पिंजरापोल सोसायटी में 'पक्षीधाम' के पास किया गया। इस समय परिषद् के सभी

सदस्य उपस्थित थे। यह जानकारी अमृतलाल जैन द्वारा दी गई।

कोठारी अध्यक्ष व छाजेड़ महामंत्री बने

पारा। श्री राजेन्द्र जैन तरुण परिषद् की नवीन कार्यकारिणी का निर्विरोध निर्वाचन हुआ। इस कार्यकारिणी में अर्पित कोठारी अध्यक्ष,सिद्धार्थ तलेसरा उपाध्यक्ष, मौसम छाजेड़ महामंत्री, सोमिल कोठारी कोषाध्यक्ष, सहमंत्री आदर्श नागौरी तथा प्रचार मंत्री के रूप में रिंकल नाहटा को निर्विरोध चुना गया।

बैठक में पारा जैन श्रीसंघ अध्यक्ष श्री मनोहर छाजेड़, राष्ट्रीय अल्प बचत मंत्री श्री प्रकाश छाजेड़, म.प्र.नवयुवक परिषद् के उपाध्यक्ष श्री प्रकाश तलेसरा, नवयुवक परिषद् शाखा पारा के अध्यक्ष श्री आशीष कोठारी, पारा नवयुवक परिषद् महामंत्री श्री सुशील छाजेड़ पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थे।

नवीन पदाधिकारियों को विश्वपूज्य दादा गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्र सूरिश्वरजी म.सा. की प्रतिमा के समक्ष शपथ दिलाई गई। चयन के बाद नवीन पदाधिकारियों ने बैठक में पधारे सभी सदस्यों एवं वरिष्ठजनों के प्रति आभार व्यक्त किया।

यतीन्द्र ज्ञान पीठ परीक्षा सम्पन्न

जावरा। राष्ट्रसंत आचार्य देवेश श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से सम्पूर्ण भारत में संचालित 'यतीन्द्र ज्ञान पीठ परीक्षा' श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् शाखा जावरा द्वारा सम्पन्न कराई गई। जावरा से 60 विद्यार्थियों द्वारा परीक्षा दी गई। परीक्षा की तैयारी हेतु जावरा परिषद् द्वारा एक माह पूर्व से प्रति रविवार 1 घंटे का शिविर लगाकर परीक्षार्थियों को तैयारी हेतु स्वाध्याय कर परीक्षा देने की प्रेरणा दी गई। गत वर्षों की तुलना में इस वर्ष अधिक परीक्षार्थी परीक्षा में सम्मिलित हुए हैं। शिविर के संयोजक अशोकजी बोरदिया, श्रीमती पारसमणिजी मारवाड़ी, श्रीमती विनीताजी मारवाड़ी, श्रीमती ज्योतिजी चपड़ोद द्वारा विशेष समय देकर परीक्षार्थियों को अलग-अलग भागों की तैयारी करवाई गई।

स्थानीय सरस्वती शिशु मंदिर में 31 जुलाई 2016 को परीक्षा आयोजित की गई। परीक्षार्थियों के उत्साहवर्द्धन के लिए परिषद् के वरिष्ठजन उपस्थित हुए।

सर्वप्रथम गुरुदेव के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर नवकार मंत्र का जाप किया गया। परिषद् के राष्ट्रीय पर्यावरण मंत्री भाई श्री अनिलजी दसेड़ा ने सभी को शुभकामना देते हुए भविष्य में धर्म की राह पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। परीक्षा सम्पन्न होने के उपरान्त परिषद् द्वारा परीक्षार्थियों एवं उपस्थित सदस्यों को प्रभावना वितरित की गई।

इस अवसर पर महिला परिषद् की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्रीमती पारसमणिजी मारवाड़ी, प्रदेश प्रवक्ता सुरेशजी चौरड़िया, परीक्षा केन्द्राध्यक्ष प्रदीपजी सिसोदिया, स्थानीय परिषद् के अध्यक्ष यशवंतजी चोरड़िया, संरक्षक राजमलजी धारीवाल, परामर्शदाता कनकमलजी मालक, हेमेन्द्रराज चौरड़िया, पूर्व अध्यक्ष बच्छराजजी चौरड़िया, महासचिव संजयजी धारीवाल, कोषाध्यक्ष पारसजी सकलेचा, उपाध्यक्ष अशोकजी नवलक्खा, शिविर संयोजक अशोकजी बोरदिया, शिक्षा सचिव जितेन्द्रजी मेहता, मुकेश चौरड़िया, मनोज रूनवाल, सुमित दसेड़ा, महिला परिषद् अध्यक्षा श्रीमती पारसबेन संघवी, सचिव श्रीमती विनीता मारवाड़ी, बहु परिषद् की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती सारिका कोलन एवं समाज एवं परिषद् के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में परीक्षा सम्पन्न हुई। अन्त में आभार परिषद् अध्यक्ष यशवंत चौरड़िया ने माना। यह जानकारी परिषद् के महासचिव संजय धाड़ीवाल ने दी।

परिषद पदाधिकारियों का महाराष्ट्र के दक्षिण प्रवास

श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश भाई धरू के साथ अन्य पदाधिकारी श्री अशोक श्रीश्रीमाल, श्री सुधीरजी लोढ़ा, श्री शशांकजी लुनावत दक्षिण भारत के श्री सुजीत सौलंकी ने महाराष्ट्र की पूणे शाखा व दक्षिण भारत की विभिन्न शाखाओं के प्रवास में सार्थक बैठक कर परिषद के सेवा प्रकल्प पर मंथन किया।

पूणे – 21 जुलाई को पूणे शाखा की बैठक में समस्त परिषद् साथी सहित समाज के वरिष्ठजनों के साथ बैठक सम्पन्न हुई। विकलांगों को कृत्रिम अंग तथा अन्य हिन्दू धर्म के यात्रियों को किट वितरण कर परिषद् के कार्यों का उल्लेख कर गौरव बढ़ाया। श्री रमेशजी, अशोकजी, सुधीरजी व शंशाकजी ने केन्द्रीय योजना की जानकारी विस्तृत से बताई।

हुबली – दक्षिण प्रान्त के पदाधिकारियों के साथ दक्षिण प्रान्त के हुबली शहर में अति उत्साह उमंग और उल्लास के वातावरण में विभिन्न आयोजन सम्पन्न हुए। हुबली में संघ समाज व परिषद् की संयुक्त बैठक में परिषद् अध्यक्ष श्रीललितजी व साथियों ने हुबली परिषद् के जन्म से मात्र डेढ़ वर्षों की अवधि में अनेक उपलब्धि भरे कार्यों का ब्यौरा प्रस्तुत किया। विशेषकर मानव सेवा के अंतर्गत दिव्यांगों को आवश्यक उपकरण प्रदाय करने का कार्य दौरे के दौरान के दौरान स्थानीय परिषद् ने 5 व्यक्तियों को राष्ट्रीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में अंगों का वितरण किया। परिषद् में नियमित सामायिक व अन्नदान योजान भी गतिमान है और भी अन्य भावी योजनाओं का प्रस्तुतीकरण किया गया।

बेंगलौर – दिनांक 24 जुलाई को राजेन्द्र भवन में राष्ट्रीय पदाधिकारियों के साथ स्थानीय परिषद् एवम् श्री संघ समाज की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में श्री रमेशभाई धरू, श्री अशोक श्रीश्रीमाल, श्री सुधीर लोढ़ा, श्री सुजीत सौलंकी, श्री शशांक लुनावत तथा स्थानीय श्री भेरूलाल सेठ, श्री भंवरजी कटारिया, श्री हेमराजजी, श्री बाबूजी, श्री डूंगरजी, मिलापजी चौधरी, दिलीपजी सहित परिषद् के कार्यकर्ता मौजूद थे। स्वागत श्रृंखला के पश्चात श्री डूंगरजी ने शाखा के कार्यों को विभिन्न पैमानों से बताया। पदाधिकारियों ने भी अपना मार्ग दर्शन दिया। परिषद् द्वारा विशेष रूप से

स्कूलों में व्यापकता से कॉपी किताबों के वितरण का अभियान, गौशाला में प्रति माह आहार वितरण, सामायिक योजना सहित परिषद् के नियमित कार्यों को संचालित करते हैं। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने शहर में संघ परिषद् के वरिष्ठ महानुभावों से मिलकर उनका आशीर्वाद व मार्गदर्शन प्राप्त किया।

मैसूर – मैसूर की धरती पर पहले कदम के साथ ही मैसूर परिषद ने आत्मीय स्वागत किया। चातुर्मासार्थ विराजित पूज्य आचार्यश्री अपूर्व रत्न मंगल सागरजी म.सा. की पावन सान्निध्यता में प्रवचन के दौरान राष्ट्रीय पदाधिकारियों का बहुमान किया। इसके पश्चात् की बैठक पूज्य मुनिराज श्री वृज मुनि सागरजी व पूज्य श्री प्रसमसागरजी म.सा. की निश्रा में आरम्भ हुई। पूज्य मुनिभगवंत ने पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरिजी म.सा. व पूज्य अपूर्व सागरजी म.सा. के संस्मरणों को ताजा किया। पूज्य गुरुदेव के उपकारों को भी याद किया। साथ ही परिषद् के कार्यों की खूब सराहना करते हुए वैय्यावच्च में और भी अधिक ध्यान की आवश्यकता पर जोर दिया। महामंत्री अशोक श्रीश्रीमाल व रमेशभाई धरू ने पूज्य मुनि भगवंत को पूज्य गुरुदेव श्री की प्रेरणा से हो रहे कार्यों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की स्थानीय अध्यक्ष श्री अमृतलालजी ने स्थानीय परिषद् के कार्यों की विशेष कर पांजरापोल में पक्षी धाम तथा और भी गतिविधियों की जानकारियां दी। श्री सुधीरजी, श्री सुजीतजी व श्री शशांकजी ने जाजम बैठक में विचारों का आदान-प्रदान करते हुए राष्ट्रीय परिषद् की कार्य योजनाओं से अवगत कराते हुए नियमों की जानकारी दी। बैठक में स्थानीय संघ के साथ वरिष्ठजन भी उपस्थित थे। पदाधिकारियों ने पक्षीधाम का अवलोकन भी किया। मैसूर परिषद के कार्यों की खूब-खूब अनुमोदना करते हुए उन्हें धन्यवाद दिया।

नैल्लूर – साध्वी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म.सा. के दर्शन वन्दन व प्रवचन श्रवण का लाभ मिला। पूज्य श्री ने आशीर्वाद देते हुए गुरुदेव श्री की प्रेरणा से चल रहे परिषद के कार्यों की सराहना की तथा दक्षिण में अधिक मेहनत करने की आवश्यकता बताई। आदरणीय श्री शांतिलालजी रामानी व श्री रमेशभाई धरू ने प्रवचन सभा में अपने विचार रखे। पश्चात कार्यकर्ताओं की बैठक हुई. दोपहर में पदाधिकारी राजेन्द्र नगर तीर्थ पर गए जहाँ गुरुदेव श्री की साधना कुटीया में जाप किया। श्री मांगीलालजी रामानीजी द्वारा सभी का बहुमान किया गया।

विजयवाड़ा – रेलवे स्टेशन पर जय गुरुदेव जय-जय परिषद् के गुंजायमान नारों के साथ पदाधिकारियों का जोश भरा स्वागत किया। मुनिराज श्री संयमरत्नविजयजी म.सा. की पावन निश्रा प्रवचन सभा में पदाधिकारियों का सम्मान पश्चात

पूज्य मुनिश्री ने परिषद् को आशीर्वाद देते हुए कहा समाज को परिषद् से बहुत अपेक्षा है। साधु- साध्वीजी म.सा. के वैयावच्च हेतु सेवादल का गठन हो।

प्रत्येक शाखा में 4-5 सदस्य समर्पित भाव से ये कार्य अपने हाथों में लें। बैठक में संघ अध्यक्ष श्री भंवरलालजी, परिषद् अध्यक्ष श्री नरपतजी, श्री पारसजी भंडारी, श्री सुजीत सौलंकी ने स्थानीय परिषद् के कार्यों का ब्यौरा रखा। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने अखिल भारतीय स्तर पर चल रहे कार्यों को विस्तार पूर्वक रखते हुए भावी प्रकल्पों की जानकारी दी। साथ ही स्थानीय परिषद् से सुझाव लिए। परिषद् साथी श्री सुजीतजी, श्री अशोकजी सोलंकी, श्री जयन्तिलालजी, श्री पुरुषोत्तमजी, श्री नरपतजी तथा स्थानीय सचिव सहित अन्य परिषद् साथियों व पदाधिकारियों ने सुबह मंगलवारिय भोजन वितरण कार्यक्रम का अवलोकन किया।

संस्कार शिविर सम्पन्न

इंदौर। गुमास्ता नगर में चातुर्मास कर रहे मुनी भगवंत श्री वैभवरत्नविजयजी म.सा. आदि ठाणा 3 की पावन निश्रा में पारिवारिक संस्कार शिविर सफलता के नए आयाम चूमता हुआ सम्पन्न हुआ। लगभग 350 से अधिक संख्या में शिविरार्थी प्रातः 8 बजे से 5.30 तक लगातार पूज्य श्री प्रभावकारी ओजस्वी और जीवन को परिवर्तित कर दे ऐसे प्रवचनों की अमृत गंगा में डूबे रहे।

शिविर में मुख्य रूप से संस्कारों में आ रही कमी विचारों की मत भेदता, परिवार में टूटन और घुटन, बच्चों में विनयता का अभाव तथा धर्म से दूरियां आदि विभिन्न विषयों पर धारावाहिक सचोट प्रवचन देकर सबके हृदय को झकझोर दिया। शिविर का प्रमुख फल श्रुति यह रही कि एक भाई ने भाव विभोर होकर भाईचारे का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपनी कीमती प्रॉपर्टी अपने भाई को दे दी। साथ ही एलान किया कि वह प्रति जीवदया व जरूरतमंदो की मदद करता रहेगा। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने अभक्ष्य, रात्रि भोजन, कंद मूल का त्याग का संकल्प लिया।

रतलाम । जयन्तसेनधाम में समग्र जैन चातुर्मास सूची प्रकाशक बाबूलाल जैन 'उज्जवल' मुम्बई का चातुर्मास आयोजक, विधायक चेतन्य काश्यप द्वारा बहुमान किया गया।

कुशलगढ़ । मुनिराज श्री डॉ. सिद्धरत्नविजयजी म.सा. एवं मुनिराज श्री विद्वदरत्नविजयजी म.सा. के दर्शन वंदन, क्षमायाचना व नवयुवक परिषद की बैठक लेने हेतु नवयुवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् रमेशजी धरू, राष्ट्रीय

प्रचारक ब्रजेशजी बोहरा, मध्यप्रदेश नवयुवक परिषद् अध्यक्ष श्रीमान् सुशीलजी गिरिया, उपाध्यक्ष श्रीमान् कमलेशजी कावड़िया, महामंत्री श्री मोहितजी तांतेड़ व अन्य पदाधिकारियों द्वारा कुशलगढ़ नवयुवक परिषद् शाका का दौराकर बैठक ली बैठक के पूर्व में पदाधिकारियों का स्थानीय नवयुवक परिषद द्वारा स्वागत, सम्मान व बहुमान किया। पदाधिकारियों द्वारा परिषद् व समाज को दिशा प्रदान करने वाला उद्बोधन दिया गया व परिषद् की गतिविधियों व प्रगति पर प्रकास डाला गया व उन पर विचार विमर्श किया गया। बैठक में कुशलगढ़ परिषद् के कार्यों का उल्लेख किया गया, जिसे देख पदाधिकारियों को हर्ष हुआ उन्होंने कहा की हमें गर्व है हमारे पास कुशलगढ़ जैसी एक मजबूत नवयुवक परिषद् की टीम हैं। कुशलगढ़ श्रीसंघ अध्यक्ष श्रीमान् कमलेशजी कावड़िया ने बताया की गुरुदेवश्री की कृपा हमेशा से कुशलगढ़ नगर पर है और सभी कार्य गुरु आशीर्वाद से निर्विघ्नं पूर्ण हो जाते है बैठक का संचालन श्रीमान् पंकजजी लुणावत ने किया व आभार श्रीमान् कमलेशजी कावड़िया ने माना ।

मैसूर । मैसूर परिषद शाखा द्वारा पर्युषण पर्व पर पिंजरापोल जाकर सदस्यों द्वारा जीव दया हेतु गायों को चारा खिलाया गया एवं बकरा ईद के दिन मुनिराजश्री अपूर्व मंगल रतन सागरजी म. की निश्रा एवं सुमतिनाथ संघ के तत्वावधान में 350 आयम्बिल नवकार मंत्र का जाप एवं सामुहिक सामायिक का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर परिषद के श्री अमृत राठौड़, श्री गुलाबचंद, श्री शैलेश धोकड़, श्री अशोक वोरा, श्री हंसराज पगारिया, श्री अशोक गोबानी, श्री नरपत, श्री मंगलचंद, श्री प्रकाश, श्री प्रदीप, श्री नरेन्द्र, श्री विनोद एवं परिषद के सदस्य उपस्थित थे। उक्त जानकारी श्री शैलेष धोकड़ ने दी।

भाटपचलाना । पूज्य लोकतंत्र श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की पावन प्रेरणा से भाटपचलाना से रतलाम तक पैदल

संघ का आयोजन किया गया। सभी द्वारा जयंतसेन धाम पहुंचकर पूज्य आचार्यश्री का गुरूपूजन किया गया एवं संघ पूजा की गई। संघ पूजा का लाभ श्रीमान् संदेश कुमारजी, महेश कुमारजी सोनी परिवार (भाटपचलाना वाले) ने लिया। पदाधिकारियों का सम्मान किया गया।

जैन विश्व

श्री जीरावला पार्श्वनाथ प्रतिष्ठा की तैयारियाँ

बाडमेर। महाचमत्कारिक जीरावला तीर्थ की प्रतिष्ठा निर्विघ्न रूप से पूर्ण हो इस हेतु सूक्ष्म बल बढ़ाने के लिए बाडमेर नगर में सैकड़ों की संख्या में अट्ठम तप की आराधना में उत्साह से जुड़कर शासन की प्रभावना की।

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ बाडमेर शाखा के प्रवक्ता चन्द्रप्रकाश छाजेड़ ने बताया कि जीरावला तीर्थ की प्रतिष्ठा के निमित्त श्री जीरावला पार्श्वनाथ जैन तीर्थ द्वारा सम्पूर्ण भारत वर्ष में विराजित साधु-साध्वी भगवंतों की निश्रा में एक लाख आठ हजार सामूहिक अट्ठम तप (तेला) की आराधना करवाने का आह्वान किया गया था। इसकी सम्पूर्ण जिम्मेदारी आचार्य श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी ने अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष सुनील सिंघी को सौंपी थी। श्री सिंघी द्वारा भारत की सम्पूर्ण शाखाओं को इस कार्य में तन मन से और लगन से जुड़कर लक्ष्य को पूर्ण करने का निर्देश दिया गया था।

महाचमत्कारिक जीरावला तीर्थ की विश्व अद्वितीय प्रतिष्ठा 2 फरवरी 2017 को होगी। इसे सफल बनाने के लिए 5, 6 एवं 7 अगस्त को सम्पूर्ण भारत वर्ष में अनूठी अट्ठम तप की आराधना के तहत् बाडमेर नगर में भी स्थानीय आराधना भवन में अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक युवक महासंघ के तत्वावधान में प्रवर्तिनी साध्वी शशिप्रभा श्रीजी म.सा., साध्वी गुणसागर सूरी साधना भवन, साध्वी विपुलगुणा श्रीजी म.सा. की निश्रा में करीब 300 आराधकों ने अट्ठम तप की आराधना की।

श्री छाजेड़ ने जानकारी में बताया कि ऐतिहासिक प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्पूर्ण भारत वर्ष के श्वेताम्बर मूर्तिपूजक जैन समुदाय के 3500 से अधिक साधु-साध्वी पहुंचेंगे। एक साथ सामूहिक 108 से अधिक जैन दीक्षाएं सम्पन्न होंगी। अन्य ऐतिहासिक कार्यक्रम में प्रतिष्ठा महोत्सव अन्तर्गत आयोजित होंगे।

* **कुण्डलपुर।** स्थानीय श्री बड़े बाबा मंदिर प्रांगण में तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान का जन्म कल्याणक बड़ी धूमधाम से एवं भव्यता पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर क्षेत्र की कमेटी के सभी सदस्यगण एवं बड़ी संख्या में श्रद्धालुजन उपस्थित थे।

विमोचन समारोह सम्पन्न – जवेरीपार्क (नारायणपुरा-अहमदाबाद) जैन संघ में चातुर्मास हेतु विराजित पंन्यास प्रवर श्री वैराग्यरत्न विजय जी म.सा., मुनि श्री श्रुतरत्न विजयजी की शुभ निश्रा में पूज्य वैराग्यरत्न विजयजी म.सा. द्वारा लिखित एवं संपादित पांच सचित्र पुस्तकों का विमोचन समारोह 31 जुलाई 2016 को सम्पन्न हुआ। पुस्तकें क्रमशः हिन्दी, गुजराती व अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित हैं। इनमें से गुडबॉय (अंग्रेजी), एक हतो हाथी (गुज.), एक था हाथी (हिन्दी), एक हतो हाथी (अंग्रेजी), पंच प्रतिक्रमण (हिन्दी+अंग्रेजी) सम्मिलित हैं।

श्री अर्हद् महापूजन सम्पन्न-रतलाम। विश्व शांति की कामना से बागड़ों का वास स्थित नगर के विशाल श्री शांतिनाथ जैन मंदिर में विगत 3 अगस्त को श्री अर्हद् महापूजन का आयोजन किया गया। महापूजन अन्तर्गत जहां एक ओर जिनालय परिसर में प्रभु श्री शांतिनाथ भगवान का अभिषेक हो रहा था वहीं दूसरी ओर बारिश के रूप में भी मानों पूरे दिन जलाभिषेक होता रहा,जिसने श्रद्धालुओं के उत्साह को चरम पर पहुँचा दिया।

* **जोधपुर।** जोधपुर से 50 कि.मी. दूरी पर स्थित लगभग 500 वर्ष प्राचीन श्री कापरड़ा तीर्थ पर स्वयंभू श्री पार्श्वनाथ प्रभु मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया। इस तीर्थ पर अंजनशलाका सह प्रतिष्ठा महोत्सव 27 नवंबर से 5 दिसम्बर 2016 तक आचार्य श्री विजय सोमचन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. सहित अन्य आचार्य भगवंत एवं विशाल साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा में सम्पन्न होगा।

* **जोधपुर।** आचार्य श्रीमद् विजय रविन्द्र सूरीश्वरजी म.सा. का दिनांक 2 जुलाई 2016 को निधन हो गया। मुनिराज श्री वीररत्न विजय जी म.सा. एवं मुनिराज श्री विनितरत्न विजयजी म.सा., साध्वीवर्या श्री मोक्षगुणाश्रीजी एवं साध्वी नम्रगुणाश्रीजी म. की पावन निश्रा में दिनांक 11 जुलाई को आषाढ़ सुदी सातम सोमवार से 15 जुलाई आषाढ़ सुदी ग्यारस तक श्री पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया जिसमें अनेक पूजाएँ पढ़ाई गईं।

* **मानपाड़ा (ठाणे)।** श्री शांतिधाम पदयात्री तीर्थ मानपाड़ा में श्री पर्युषण पर्व का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। दि. 5 सितम्बर को संवत्सरी महापर्व उत्साहपूर्वक मनाया गया। 10 सितम्बर को मानपाड़ा से शंखेश्वर पार्श्वनाथ धाम, तीर्थधाम कासरबढ़वली तक चैत्य परिपाटी का आयोजन लाभार्थी श्रीमती मोवनबाई कुंदनमलजी संघवी परिवार द्वारा किया गया। इसी क्रम में थाने तीर्थ से चन्द्रप्रभु जिनालय चैत्य परिपाटी का आयोजन 1 अक्टूबर 2016 को कुन्दमलजी भुताजी परिवार की ओर से किया गया है।

कुलपाक मंडन श्री आदिनाथाय नमः

श्री राजेन्द्र सूरिगुरूभ्यो नमः

नूतन निर्माणाधीन

श्री राजेन्द्रसूरि जैन गुरू मंदिर कुलपाक तीर्थ

आशिर्वाद एवं प्रेरणादाता : तीर्थ प्रेरक, शासन सम्राट,
सुविशाल गच्छाधिपति प.पू. राष्ट्रसंत आचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरिश्वरजी म.सा.

गुरू मंदिर विकास योजना

शिलालेख पर नाम अंकित होगा

गुरू मंदिर निर्माण स्तंभ : ₹ 3 लाख

शिलालेख पर नाम अंकित होगा

स्वर्ण स्तंभ : ₹ 2 लाख

रजत स्तंभ : ₹ 1 लाख

सहयोगी स्तंभ (कूपन) ₹ 11,000/-

11 से अधिक कूपन लिखवाने वाले लाभार्थी का नाम शिलालेख पर अंकित होगा।

संचालक : श्री राजेन्द्रसूरि जैन गुरू मंदिर टस्ट कुलपाक तीर्थ (हैदराबाद)

संपर्क सूत्र : 092465 54033/094907 09301/0939310 1000

तीर्थ पेढी, आराधना भवन, प्याऊ का निर्माण शीघ्र प्रारंभ होने जा रहा है ।

॥ तीर्थ मंडन श्री सुमतिनाथ स्वामिने नमः ॥
॥ गुरुदेव प्रभु श्रीमद्विजय राजेन्द्र सूरीश्वरजी गुरुभ्यो नमः ॥

प्रकृति की पावन गोद में निर्मित

राजेन्द्र नगर तीर्थ

तीर्थ प्रेरक -
सुविशाल गच्छाधिपति आचार्य देवेश
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा.

दर्शनार्थ अवश्य पधारें ।

इस परिसर की परिधि में...

- श्री सुमतिनाथ जिन मन्दिर
- श्री राजेन्द्रसूरि गुरु मंदिर (विश्व की सर्वप्रथम खड़ी प्रतिमा)
- जयन्तसेन साधना मन्दिर
- गुलाब बाग
- जयन्तसेन स्वाध्याय वाटिका
- धर्मशाला एवं भोजनशाला

निमन्त्रक

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मंदिर तीर्थ ट्रस्ट, देवीसपेटा, जिला-नेल्लोर (आ.प्र.)
मोबाईल : 09440279500

शाश्वत धर्म के संरक्षक

- शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया-सुरा निवासी।
- शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी।
- कटारिया संघवी भवरलाल, उगमचंद, वीरेन्द्र कुमार, राजेन्द्रकुमार, आशीष, गौरव पुत्र पौत्र-तोलाजी, धाणसा निवासी (फर्म-मेन्स एवेन्यु-बाई मिलन, बैंगलौर)
- शा. तिलोकचंद, नरसिंगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, पुत्र, पौत्र प्रतापचंदजी सूरत निवासी।
- संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हीरालाल, शांतिलाल, दिलीपकुमार जैन, पुत्र-पौत्र कन्नाजी कटारिया-जाखल नि.
- नैनावा श्री जैन श्वेताम्बर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा।
- श्री समकितगच्छीय जैन श्वे. संघ-धानेरा।
- स्व. मायाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपुत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जड़ावबेन कातरेला बोहरा-आहोर निवासी।
- मेहता तेजराज, जयन्तीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, पुत्र पौत्र रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी।
- मोरखिया चंदुलाल, बाबूलाल, रसिकलाल, महेशकुमार, परेशकुमार अल्पेशकुमार, रूपेश कुमार, पुत्र-पौत्र स्व. मौरखिया नानचंद मूलचंद थाई-थराद निवासी।
- स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ढेलीबाई सुपुत्र बाबूलाल, सुमेरमल, अशोक कुमार, रमणिया निवासी।
- स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतिलाल, किशोरकुमार पुत्र-पौत्र खुशालजी रामाणी, गुडा बालोवान (फर्म-सूर्यलोक ज्वेलर्स, नैल्लोर)
- श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट, चैन्नई।
- शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेश कुमार, किशोर कुमार, कमलेश कुमार, अरविन्द कुमार पुत्र, पौत्र साकलचंद जेरूपजी भैंसवाडा नि.फर्म-गोल्डन ज्वेलर्स, नेल्लोर।
- स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र-कांतिलाल, प्रपोत्र-रमेशकुमार बागरा निवासी।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ चौराऊ।
- श्री श्वेताम्बर जैन संघ, सियाणा।
- श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ, थराद।
- दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी हस्ते-गुमानमल सांवलजी चेरिटेबल ट्रस्ट, मुम्बई।
- सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांश कुमार, श्रेणिक कुमार पुत्र पौत्र बेचरदासजी छाजेड़, नैनावा निवासी हाल मु.सांचोर, राज.
- श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढ़ी, सोनारी, सेरी थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा।
- स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में, चंदनमल, कैलाशचंद हंसराज, शीतलकुमार, अश्विन कुमार परिवार, बागरा निवासी (राजस्थान फायनेन्स कॉरपोरेशन काकीनाडा)
- श्री विमलनाथ जैन दोशी देहेरासर, थराद।
- श्री सौधर्म बृहत्तपागच्छ जैन संघ, आनन्द (गुजरात)
- श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ थलवाड (राजस्थान)
- श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय जैन संघ जावरा (म.प.)
- श्री सौधर्म बृहत्पोगच्छीय जैन संघ वासणा (गुजरात)
- श्री महाविदेह तीर्थधाम नवागाम, सूरत (गुजरात)
- आहोर निवासी संघवी जुगराज, कांतिलाल, महेन्द्र, सुरेन्द्र, दिलीप, धीरज, संदीप, राज, जैनम पुत्र पौत्र शा. कुन्दनलालजी भुताजी श्रीमाल वर्धमान गोत्रिय परिवार-थाणे (महा.)
- श्री जैन श्वेताम्बर संघ-सामलकोट।
- श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ, सूर्यरावपेटा-काकीनाडा (आन्ध्र प्रदेश)
- श्री सिमंधर राजेन्द्र जैन श्वे. मंदिर, मामुलपेट, बेंगलोर।
- श्री मुनिसुव्रत - राजेन्द्र जैन श्वेताम्बर मंदिर, (एवेन्यु रोड बैंगलोर)

- श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वे. ट्रस्ट, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- शा. अनराजजी छोगालालजी बुरड, सांचोरा वाला,फर्म-सोनू स्टील, सिकन्दराबाद, आ.प्र.
- शा. उत्तम, रमेश, हरीश, खुशालचंदजी, गेबाजी डामराणी, मैंगलवा वाला, फर्म पाक्षाल पावर किंग इलेक्ट्रीकल, हैदाराबाद (आ.प्र.)
- श्री पार्श्वनाथ राजेन्द्रसूरिजी जैन ट्रस्ट, गुंटूर
- कोशिलाव निवासी शा. भूनतमलजी, मगराजजी ललवाणी फर्म-पारस एजेन्सीज, हैदराबाद
- बागरा निवासी शा. शेषमलजी, गुलाबचंदजी फर्म जैन एण्ड कं., एलुर
- शा.अम्बालाल, दलीचन्द, बाबूलाल, शांतिलाल, प्रकाशचंद, नैनमल, उत्तमचंद, रमेशकुमार पुत्र पौत्र चमनाजी बुगामवाला-सुरापुर (कर्नाटका)
- शा. शांतिलालजी देवीचंदजी भंडारी, फर्म-स्वस्तिक ट्रेडिंग कं., हैदराबाद (आ.प्र.)
- स्व. कबदी हेमराजजी पूनमचंदजी की स्मृति में पुत्र नरेन्द्रकुमार दिलीपकुमार, पौत्र विनोद, अमीत, जसवंत, लोकेश और हरेश सायला निवासी, फर्म प्लायवुड सेन्टर, विजयवाड़ा
- मातुश्री सजनबाई स्व. श्री राजमलजी वीरचंदजी सेक्रेटरी पुत्र-पौत्र-प्रपौत्र शाह दिलीपकुमार, सचिनकुमार, सर्वेषकुमार, हार्दिक कुमार, रोशनकुमार, समस्त सेक्रेटरी परिवार कुक्षी (म.प्र.) फर्म- पक्षाल प्रोडक्ट, मूनलाईट रिचार्जेबल टॉर्च के निर्माता।
- जैन संघ - लाखणी
- भीनमाल निवासी श्री शोभालालजी भागचंदजी धोकड़ के पुत्र राजेन्द्रकुमार, पौत्र विक्रम, अभिषेक, परेश द्वारा,फर्म गौतम वस्त्र भंडार, गणेश चौक, भीनमाल जालोर (राज.)
- धाणसा निवासी संघवी स्व. सुखराजजी पिताजी की स्मृति में धर्मपत्नि-शांतिदेवी, पुत्र-सुमेरमल, अशोककुमार श्रीपाल, संजय, आकाश, अमृत
- कटारिया परिवार,फर्म शा. सुखराज पिताजी, विजयवाड़ा (आ.प्र.)
- सौधर्मवृहद तपोगच्छीय जैन श्वे. त्रि. श्री जैन संघ दाधाल
- आहोर निवासी संघवी मोहनलाल, तेजराज, प्रवीणकुमार, यतीन्द्र, राजेन्द्र, आशीष पुत्र-पौत्र वक्तावरमलजी हीराचन्दजी कुहाड़ परिवार आहोर नि. फर्म-राजेन्द्र पेपर्स, बैंगलौर
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. दरजमलजी, स्व. उकचन्दजी, स्व. हस्तीमलजी, स्व. तगराजजी की स्मृति में : हिराणी परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी स्व. शा. भारतमलजी भगाजी एवं धर्मपत्नी पातीबाई, पुत्र-मांगीलाल, गणपतराज, रमेशकुमार, कैलाशकुमार एवं समस्त संघवी वेदमुथा परिवार
- रेवतड़ा (राज.) निवासी संघवी पारसमल, नेमीचन्द, जितेन्द्र, संजय, रितेश, वेदमुथा परिवार
- थराद निवासी थरू फूलचंद, पानाचंद परिवार द्वारा आचार्यश्री जयंतसेन सूरिश्वरजी म.सा. के चातुर्मास निमित्त
- स्व. मुनिराज श्री हरिशचंद्रविजयजी म.सा. की पुण्य स्मृति में आहोर नि.मुकेशकुमार गौतम गुलेच्छा, पुत्र पौत्र मोहनलालजी हिम्मतलालजी फर्म-अरविन्द टेक्सटाईल, राजमुद्री
- रेवतड़ा निवासी संघवी सोकलचंद, कानराज, अशोककुमार, अरविन्दकुमार, चन्द्रकान्त, अखिलकुमार पुत्र-पौत्र शा. इन्द्रमलजी भगाजी परिवार
  फर्म:शा. इन्द्रमलजी सुखराजजी, बैंगलोर
- उज्जैन निवासी शा. श्री चांदमलजी, नवीनकुमार, मुकेशकुमार, अंकितकुमार पुत्र-पौत्र श्री सेवारामजी बाफणा परिवार
- यतीन्द्र भवन जैन धर्मशाला-पालिताणा
- स्व. मातुश्री अमीयाबाई एवं स्व. भाई ओटमलजी की स्मृति में पुत्रवधु प्रसन्नदेवी पुत्र हेमराज पौत्र रोहित, मितेश चत्तरगोत्रा हस्तीमलजी धनाजी परिवार चौराऊ निवासी फर्म-पद्मावती मार्केटिंग-बेंगलौर (कर्नाटक)
- श्री सौधर्म वृहद तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ, सूरत

कीर्ति स्तंभ के साथ ही मोहनखेड़ा तीर्थ पर निर्मित

श्री जयन्तसेन म्युजियम

कश्मीर से कन्याकुमारी तक परिक्षमण करने वाली
गुरु राजेन्द्र शताब्दि अखण्ड ज्योत यात्रा
रथ में विराजित दादा गुरुदेव
श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
की परम प्रभावशाली प्रतिमा
इस म्युजियम में स्थापित है....
त्रिस्तुतिक संघ के प्रत्येक गांव से स्पर्शित एवं
लाखों गुरुभक्तों द्वारा पुजित इस भव्य प्रतिमा के
दर्शन मात्र से निश्चित आनन्द की अनुभूति होती है।
दर्शनार्थ अवश्य पधारें...

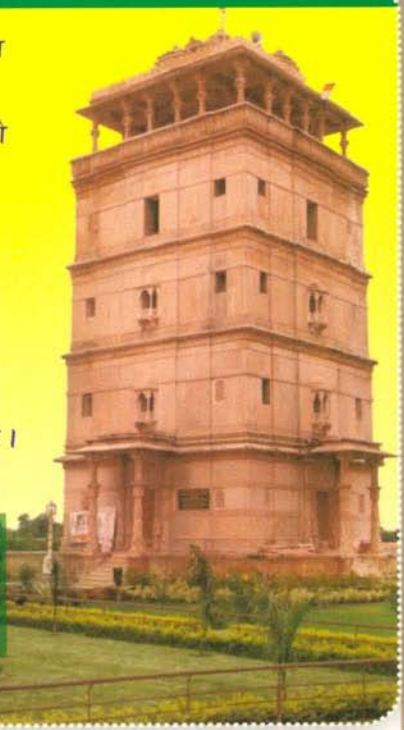

सम्पर्क : **श्री जयन्तसेन म्युजियम**
पोस्ट मोहन खेड़ा, राजगढ़ जिला धार (म.प्र.)
दूरभाष : 07296-235320, मो. 94253-94906

गुरु जन्मभूमि हमारी तीर्थभूमि..... दर्शनार्थ अवश्य पधारिये.....

राष्ट्रसंत, शासन सम्राट, सुविशाल गच्छाधिपति, वचनसिद्ध आचार्यदेव
श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. जन्म भूमि पेपराल महातीर्थ में दर्शनार्थ अवश्य पधारिये...

तीर्थ प्रेरक :

शासन सम्राट आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्यरत्न मुनिराजश्री नित्यानंद विजयजी म.सा.

साथ ही आप करेंगे मूलनायक मधुकर महावीरस्वामी भगवान की ६१ इंची विशाल प्रतिमाजी आदि जिनबिम्ब की मनोहारी प्रतिमाजी, दादा गुरुदेव की विशाल ५१ इंची प्रतिमाजी आदि गुरु परंपरा एवं आचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. की जीवित प्रतिमा जी के दर्शन। विश्व का प्रथम ऐसा मंदिर जिसकी स्पर्शना हेतु सीढी नहीं रेम्प के माध्यम से पहुँचा जा सकता है। सिद्धार्थ-त्रिशला, ऋषभ-केशरी एवं स्वरूप-पार्वती मातृ स्मृति मंदिर के दर्शन का लाभ।

तीर्थ परिसर में निर्माण हो चुका है....

साधु भगवंतों के ठहरने का उपाश्रय
श्री जयन्तसेनसूरि चैतन्य आराधना भवन
आचार्यश्री जन्मभूमि स्थित कुटिया पर विशाल स्मारक
जामराणी चबूतरा

तीर्थ परिसर में निर्माणाधीन है....

- मधुकर शान्ति यात्रिक भवन
- मधुकर उत्तम आराधना भवन
- मधुकर यतीन्द्र आराधना भवन

निवेदक : गुरु जयन्तसेनसूरि जन्मभूमि जैन शासन प्रभावक ट्रस्ट पेपराल (गुज.)

भारत सरकार पंजीयन क्रमांक 13067/57
Regd. News Paper Under Regn. No. CPMG KA/BG (S) 2005/2006-08
एल/RNP/MP/MANDSAUR/113/15-17
Posting Date at Mandsour on 3rd Day of Every Month.
कुल पृष्ठ कवर सहित 140

दुनिया से सहारा क्या लेना, तेरा एक सहारा काफी हैं ।
देखूं तो क्या देखूं गुरुदेव, तेरा एक नजारा काफी हैं ।।

प.पू. सुविशाल गच्छाधिपति, शासन सम्राट,
राष्ट्रसंत, साहित्य मनिषी
श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी म.सा.
कि आज्ञानुवर्ति साध्वीजी
श्री महाप्रभा श्री जी की सुशिष्या
पू. साध्वी श्री आत्मदर्शना श्री जी म.सा.
के ५३ वें जन्मदिन के मंगल प्रवेश पर कोटीश वंदना ।
इस सुभावसर पर आपके दीर्घ आयुष्य व स्वस्थ जीवन की
कामना करते है एवं हार्दिक बधाई और शुभ कामनाऐ

संघवी शांतिलाल शेषमलजी रामाणी
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्री सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय
जैन श्वेतांबर त्रिस्तुतिक श्रीसंघ

If undelivered please Return to Shaswat Dharma, Dhanmandi, Mandsaur-458001